जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

अजमेर

Rashtradoot

फोनः- 2627612, 2427249 फैक्सः- 0145-2624665 वर्षः 29 संख्याः 212 प्रभात अजमेर, रविवार 2 मार्च, 2025 आर.जे./ए.जे./73/2015-2017 पृष्ठ 6 मूल्य 2.50 रु.

ज़ैलेंस्की व ट्रम्प के बीच वाइट हाउस में, अमेरिका के राष्ट्रपति के दफ्तर में हुई झड़प

इस झड़प ने पर्दा उठा दिया, उस किंवदंती पर से कि अमेरिका का राष्ट्रपति विश्व का सबसे सशक्त व्यक्ति है

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 1 मार्च। यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमीर ज़ैलेंस्की और अमेरिकी राष्ट्रपति के बीच ओवल ऑफिस में हुई खुली झड़प ने इस मिथक से पर्दा उठा दिया है कि अमेरिका का राष्ट्रपति विश्व का सबसे शक्तिशाली व्यक्ति है। यह घटना आधुनिक समय के कूटनीतिक इतिहास में अप्रत्याशित थी।

कमजोर, और अपने शक्तिशाली पड़ोसी के साथ निरंतर युद्ध से घायल, यूक्रेन के राष्ट्रपति ने खुद को साहसी व दृढ़ व्यक्तित्व वाले नायक के रूप में दर्शाया। उन्होंने, सबसे शक्तिशाली आदमी द्वारा अपने ही गढ़ में की जा रही दादागिरी का बेधड़क सामना किया और बिना डरे, डटे रहे। संदेश यह था: जब आप बिल्कुल कोने में धकेल दिए जाते हैं, तो आप अमेरिकी राष्ट्रपति से उनके अपने दफ्तर में भी मुकाबला कर सकते हैं।

उनके प्रतिद्वंद्वी, अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प रूसियों की एक कठपुतली और रूस की प्रतिक्रिया के संभावित परिणामों से डरने वाले एक कायर के रूप में सामने आए हैं। उनके उपराष्ट्रपति की स्थिति इससे भी बदतर है, वे तो ट्रम्प के हाथ का खिलौना मात्र हैं।

सीधे शब्दों में कहें, तो अमेरिका ने एक फायदेवाला सौदा खो दिया है। यूक्रेन के दुर्लभ खनिजों को डवलप करना और शेयर करना अमेरिका के उद्योगों और रक्षा क्षेत्र के लिए एक भारी एग्रीमैंट है। ऐसा लग रहा है कि अमेरिका को एक बार फिर इन खनिजों को सुरक्षित करने के लिए बातचीत शुरू करनी पड़ेगी।

यदि सतह पर देखा जाए, तो यूक्रेन ने रूस की आक्रामकता के खिलाफ अपनी लड़ाई में अमेरिकी समर्थन खो दिया है, लेकिन, दूसरी तरफ, रूस के राष्ट्रपति और तानाशाह, व्लादिमिर पुतिन के सामने झुकना अमेरिका के राष्ट्रपति के लिए और भी अधिक कठिन काम होगा।

रूस के लोगों ने जहाँ अपने सबसे जुझारू प्रतिद्वंद्वी की स्पष्ट अपमानजनक हार का जश्न मनाया होगा, वहीं, उन्हें यह समझना चाहिए कि जल्द ही उन्हें एक और भी अधिक दुष्कर समस्या का सामना करना पड़ेगा। क्योंकि अपनी साख साबित करने के लिए अब अमेरिका, रूस की पूरी तरह से अधीनता नहीं कर पाएगा।

अमेरिकी राष्ट्रपति और उनके सहयोगियों के व्यवहार ने पूरे पश्चिमी यूरोप को यूक्रेन का खुले तौर पर समर्थन करने के लिए बाध्य किया था। यहां तक कि इटली की प्रधानमंत्री, ज्योर्जिया मेलोनी, जो यूक्रेन को समर्थन देने को लेकर खास उत्साहित नहीं थीं, ने भी अपना रुख बदल लिया।

अब पूरा यूरोप यूक्रेन का समर्थन करने और उसके पीछे खड़ा होने के लिए एकजुट हो रहा है, जबकि, अब तक इस मुद्दे पर यूरोप बंटा हुआ था। तथापि, अभी भी कुछ अपवाद हो सकते हैं, जैसे हंगरी, जो हाल तक यूक्रेन का समर्थन करने के खिलाफ था। हालांकि, ऐसे देशों की आवाज़, अन्य देशों द्वारा अमेरिका के रूख की सख्त आलोचना और यूक्रेन के समर्थन की आवाज़ में दब जाएगी।

यह होना तय था। चुनाव में अपनी पुन: जीत के बाद से, डॉनल्ड ट्रंप अधिक से अधिक घमंडी होते जा रहे थे। फ्रांस के राष्ट्रपति, इमैनुएल मैक्रों के साथ अपनी संयुक्त प्रैस कॉन्फ्रैंस में, डॉनल्ड

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- इस झड़प ने यह भी साबित कर दिया कि अमेरिका का राष्ट्रपति, रूस की सरकार की कठपुतली है तथा इस भय से ग्रसित है कि रूस का विरोध करने का क्या परिणाम हो सकते हैं।
- इस झड़प ने यह भी दिखा दिया, अमेरिका के उपराष्ट्रपति भी, राष्ट्रपति ट्रम्प के मनपसंद खिलौने से ज्यादा महत्व नहीं रखते। हालांकि, प्रथत दृष्टया ऐसा लगता है कि यूक्रेन कमज़ोर हुआ है, पर, अमेरिका की भी कठिनाईयां बढ़ी हैं। अब अमेरिका खुलकर रूस का पक्ष लेने में कुछ हिचकिचायेगा तथा यूक्रेन से औद्योगिक दृष्टि से महत्वपूर्ण खनिजों को प्राप्त करने में इसे भारी जोर आयेगा।
- यूक्रेन को एक और फायदा यह हुआ कि पूरा यूरोप अब यूक्रेन के समर्थन में खड़ा हो गया है। जबकि, पहले यूक्रेन का साथ देने के प्रश्न पर यूरोप विभाजित सा था, एकमत नहीं था।

चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी के बकाया वेतन पर हाई कोर्ट ने सख्त रुख अपनाया

जयपुर, 1 मार्च। राजस्थान हाईकोर्ट ने महुआ नगर पालिका के चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी का पन्द्रह महीने का बकाया वेतन 15 दिन में देने के आदेश दिए हैं। ऐसा नहीं करने पर अदालत ने पंचायती राज आयुक्त, स्थानीय निकाय निदेशक और नगर पालिका के कार्यकारी अधिकारी का वेतन रोकने को कहा है। अदालत ने यह भी कहा कि यदि प्रमुख स्वायत्त शासन सचिव आदेश की पालना में फेल हुए तो मुख्य सचिव को निर्देश दिए जाते हैं कि वे प्रमुख स्वायत्त शासन सचिव का वेतन रोक लें। जस्टिस अनूप कुमार ढंड की एकलपीठ ने यह आदेश संतराम शर्मा की याचिका पर सुनवाई करते हुए दिए।

याचिकाकर्ता की ओर से अधिवक्ता केपी सिंह ने कहा कि अदालत ने गत 18 फरवरी को राज्य सरकार को आखिरी मौका देते हुए पूछा था कि याचिकाकर्ता का बकाया वेतन क्यों रोका गया है। इस पर सरकारी वकील ने इस संबंध में दिशा-निर्देश प्राप्त

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- आदेश में 15 माह का बकाया वेतन 15 दिन में नहीं देने पर पंचायती राज आयुक्त, स्थानीय निकाय निदेशक व महवा नगर पालिका के कर्मचारी अधिकारी का वेतन रोकने के निर्देश दिये गये हैं।

कर्नाटक के मु.मंत्री सिद्धारमैया ने केन्द्रीय सरकार के खिलाफ सड़क पर उतरने की धमकी दी

सिद्धारमैया के अनुसार, केन्द्रीय सरकार कर्नाटक का हिस्सा 41 प्रतिशत से घटाकर 40 प्रतिशत करने की तैयारी में है, वित्त आयोग की मदद से

-लक्ष्मण वैंकट कुची-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 1 मार्च। कर्नाटक के मुख्यमंत्री एस. सिद्धारमैया भी केन्द्र सरकार और उसके विभिन्न कथित "राज्य-विरोधी" निर्णयों के खिलाफ आक्रामक हो गये हैं। उन्होंने परिसीमन की कवायद पर कड़ा प्रहार करते हुये कहा कि इसे दक्षिण भारतीय राज्यों पर थोपा जा रहा है। शनिवार को मुख्यमंत्री ने "एक्स" पर डाली अपनी सोशल मीडिया पोस्ट में कहा कि केन्द्र सरकार का रुख राज्य-विरोधी है तथा उसके निर्णय टैक्सों और विकास फंड्स के मामलों में कर्नाटक को उसके वाजिब हिस्से से वंचित कर रहे हैं। अगर ऐसा हुआ तो वे राज्य की जनता के अधिकारों की खातिर लड़ाई के लिए सड़कों पर उतर आयेंगे।

सिद्धारमैया ने टैक्स रेवन्यू के कर्नाटक के आधिकारिक हिस्से को और भी कम करने की केन्द्र सरकार की कोशिशों की कड़ी आलोचना की और कहा, "अगर अपील और बातचीत निष्फल रहती हैं तो हम सड़कों पर उतरने तथा लोगों के साथ आकर लड़ने में नहीं हिचकेंगे।

मुख्यमंत्री ने कहा, "यह केवल कर्नाटक विरोधी ही नहीं, बल्कि संविधान में प्रतिष्ठापित (देश के) संघीय ढाँचे पर भी सीधा हमला है।" उन्होंने कुछ रिपोर्टों का हवाला दिया, जो यह संकेत देती हैं कि केन्द्र सरकार, वित्त आयोग के माध्यम से, कर्नाटक के हिस्से को 41 प्रतिशत से 40 प्रतिशत करने की सिफारिश कराने की तैयारी कर रही है।

सिद्धारमैया ने आरोप लगाया, "जब से नरेन्द्र मोदी प्रधानमंत्री बने हैं, केन्द्र की नीतियाँ राज्यों के संवैधानिक अधिकारों में लगातार कटौती करती आ रही हैं तथा उन्हें कमज़ोर करती आ रही हैं।"

सिद्धारमैया ने केन्द्र की इन कोशिशों में परिसीमन की कवायद को भी जोड़ दिया तथा दक्षिण भारत में लोकसभा सदस्यों की संख्या कम करने के केन्द्र सरकार के प्रयासों की भर्त्सना की। उन्होंने केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह के इन दावों को विश्वास के योग्य नहीं माना कि परिसीमन में दक्षिण भारत के किसी भी राज्य की एक भी सीट कम नहीं होगी।

सिद्धारमैया ने कहा कि दक्षिण भारत की सीटें तो कम होंगी ही, इसके साथ ही, उत्तरी भारत की सीटों में बड़ी मात्रा में वृद्धि भी होगी। इस प्रकार, उत्तरी भारत लोकसभा में तथा इसके फलस्वरूप, केन्द्र सरकार के निर्माण में ज्यादा ताकतवर हो जायेगा।

- सिद्धारमैया की यह शिकायत है कि "डीलिमिटेशन" से केन्द्रीय सरकार दक्षिण भारत के राज्यों की सीटें व राजनीतिक प्रभाव कम करेगी।
- अगर, केन्द्रीय सरकार ने अपना रवैया नहीं बदला तो, कर्नाटक के हितों की रक्षा के लिए, मु.मंत्री स्वयं सड़क पर उतरेंगे।

प्र.मंत्री ने सूफी मुसलमानों की तरफ मित्रता का हाथ बढ़ाया

-श्रीनन्द झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 1 मार्च। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी तथा भाजपा ने, पसमन्दाओं के बाद, अब सूफी मुस्लिमों तक पहुँच बनाने की योजना शुरू कर दी है। इस प्रयास का उद्देश्य भाजपा को इस रूप में स्थापित करना है कि यह पार्टी भारत के सभी वर्गों और समुदायों का प्रतिनिधित्व करती है।

नरेन्द्र मोदी सरकार के 11 वर्षों में, भाजपा ने स्वयं को बहुसंख्यक हिन्दू समुदाय का प्रतिनिधित्व करने वाली पार्टी के रूप में तो प्रस्तुत किया ही है, लेकिन इसके साथ ही, उसने स्वयं को मुस्लिमों सहित, अन्य समुदायों तक पहुंच रखने वाली पार्टी के रूप में भी पेश किया है। तीन तलाक जैसे निर्णयों के जरिये, भाजपा मुस्लिम महिलाओं को प्रभावित करने की कोशिश करती रही है। पसमन्दा मुस्लिमों के पक्ष में अभियान चला कर, पार्टी ने दो उद्देश्यों की पूर्ति की कोशिश की है- पहला, अभिजात्य मुस्लिमों और दलित पसमन्दाओं के बीच एक पाला खींचना, और दूसरा, यह विचार देना कि जाति व्यवस्था केवल हिन्दू समाज में ही नहीं है।

शुक्रवार को दिल्ली में "जहाने-खुसरो" के 25वें संस्करण को सम्बोधित करते हुये प्रधानमंत्री मोदी ने सूफी परम्परा की जबरदस्त तारीफ की। इस अवसर पर बोलते हुये उन्होंने तेरहवीं शताब्दी के कवि और संगीतज्ञ अमीर खुसरो के व्यक्तित्व और कृतित्व की भूरि-भूरि प्रशंसा की। प्रधानमंत्री ने सूफियों की बहुलवादी परम्पराओं का विशेष रूप से जिक्र किया तथा कहा कि जहाँ वे इस्लाम के अनुयायी थे, वहीं, सूफी सन्त हिन्दू देवी-देवताओं, जैसे भगवान कृष्ण, के प्रति अपूर्व श्रद्धा रखते थे। उन्होंने याद दिलाया कि जब वे गुजरात के मुख्यमंत्री थे, उन्होंने अहमदाबाद की एक सूफी मस्जिद एवं मकबरा परिसर का किस तरह से पुनरोद्धार कराया था।

उन्होंने कहा कि सूफी सन्त पवित्र कुरान तो पढ़ते ही थे, वे वेदों को भी सुनते थे। उन्होंने कहा, यह "वसुधैव कुटुम्बकम्" जैसी बात ही तो है।"

भाजपा अल्पसंख्यक मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जमाल सिद्दीकी ने कहा, "सूफीवाद भारतीय संस्कृति का हिस्सा है तथा यह मतान्धता का सामना तथा शान्ति को प्रोत्साहित कर सकता है। सूफीवाद का उद्देश्य मानव और ईश्वर के बीच सीधा सम्पर्क कायम करना है। ईश्वर, अल्लाह, राम, कृष्ण, ईसा या वाहे गुरू के विभिन्न रूपों में पूज्य है।"

भाजपा का सूफी-सम्पर्क 2024 के संसदीय चुनावों से पहले ही शुरू हो

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- तेरहवीं शताब्दी के जाने-माने सूफी कवि व संगीतकार अमीर खुसरो की स्मृति में मनाये जा रहे, जहान-ए-खुसरो प्रोग्राम में मोदी ने अपनी अभिभाषण में यह जताया कि सूफी दर्शन काफी कुछ "वसुधैव कुटुम्बकम् सिद्धांत" पर आधारित है।

समय पर फ्लैट नहीं देने पर 5.20 लाख रूपए का हर्जाना

जयपुर, 1 मार्च। जिला उपभोक्ता आयोग, द्वितीय ने तय समय में फ्लैट का कब्जा नहीं देने पर बिल्डर मैसर्स सिद्धा इंफ्रा प्रोजेक्ट प्रा.लि. व अन्य पर 5.20 लाख रुपए का हर्जाना लगाया है। इसके साथ ही, आयोग ने परिवादी की ओर से जमा कराई गई राशि सहित, कुल 36.58 लाख रुपए की राशि नौ फीसदी ब्याज सहित लौटाने को कहा है। आयोग के अध्यक्ष ग्यारसी लाल मीणा और सदस्य हेमलता अग्रवाल ने यह आदेश पवन चौपड़ा व अन्य के परिवाद पर दिए।

परिवाद में कहा गया कि परिवादी ने बिल्डर सिद्धा इन्फ्रा प्रोजेक्टस प्रा. लि. के अजमेर रोड़ स्थित प्रोजेक्ट सिद्धा आंगन फेज़-2 में बन रहे आवासीय अपार्टमेंट मयूर योजना में एक फ्लैट खरीदा था। उसने बिल्डर के साथ 17 सितम्बर, 2018 को एक करार किया

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- जिला उपभोक्ता आयोग द्वितीय ने सिद्धा इंफ्रा प्रोजैक्ट्स प्रा. लि. पर यह हर्जाना लगाया।

'आप इस स्थिति में नहीं हैं कि हमें निर्देश दे सकें'

ट्रम्प ने धमकाते हुए ज़ैलेंस्की से कहा, और इसके थोड़ी देर बाद यूक्रेन के प्रतिनिधि मंडल को वाइट हाउस से जाने के लिए कहा गया तथा राष्ट्रपति ट्रम्प का भोज अछूता धरा का धरा रह गया

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 1 मार्च। यू.एस. प्रैसिडैंट -डॉनल्ड ट्रंप और उनके यूक्रेनी समकक्ष वोलोडिमीर ज़ैलैंस्की के बीच झड़प ऐसी घटना है, जिस पर दंतकथाएं बना करती हैं।

कई लोग जहाँ इसे यूक्रेनियन प्रैसिडैंट का मूर्खतापूर्ण व्यवहार मानेंगे, वहीं, ज़ैलैंस्की के देश के लोग इसे बहादुरी मानेंगे। इसका एक उदाहरण भारत में मिल सकता है महाराणा राणा प्रताप द्वारा मुगलों की शक्ति के खिलाफ खड़ा होना। "जिसकी लाठी उसकी भैंस" यह उक्ति सदा सही नहीं होती। शक्तिशाली के आगे नहीं झुकना या डेविड और गोलायथ की कहानी, कुछ ऐसी समानताएं व उदाहरण हैं, जो रुस के साथ युद्ध कर रहे ज़ैलैंस्की के देश में दी जाएंगी।

दोनों के बीच मीटिंग की शुरुआत मुस्कुराहट और हाथ मिलाने से हुई, पर मीटिंग कुछ ही मिनटों में झड़प में बदल गई, वो भी विश्व के मीडिया के सामने, जो वाइट हाउस में मौजूद था। यहां मीटिंग और उन शब्दों की एक झलक प्रस्तुत है, जो आम आदमी को घटना की वास्तविक तस्वीर उपलब्ध करा सकती हैं।

ट्रम्प ने ऊँची आवाज में ज़ैलैंस्की से कहा, आप इस स्थिति में नहीं हैं कि हमें निर्देश दे सकें। इसके बाद यूक्रेन का डैलिगेशन वाइट हाउस से चला गया।

मीटिंग सही ट्रैक पर थी, अमेरिका के उपराष्ट्रपति जेडी वैंस ने इसे उकसाया। उन्होंने रुस -यूक्रेन वॉर के समाधान के लिए कूटनीति की आवश्यकता पर जोर दिया। वैंस ने पूर्व राष्ट्रपति जो बाइडन की आलोचना की।

एक पत्रकार के सवाल का जवाब देते हुए वैंस ने कहा, हमने जो बाइडन के रास्ते पर चलने की कोशिश की, छाती ठोक कर यह बताने का प्रयास किया कि अमेरिका के राष्ट्रपति के शब्द अमेरिका

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- वाइट हाउस में, अमेरिका के राष्ट्रपति के दफ्तर में, दोनों देशों के राष्ट्रपतियों के बीच बातचीत ठीक-ठाक चल रही थी, पर, उपराष्ट्रपति जे.डी. वैंस ने बीच में पूर्व राष्ट्रपति बाइडन को कोसना शुरु कर दिया और बातचीत की लय बदल सी गई और फिर स्थिति को कोई संभाल नहीं पाया।

विचार बिन्दु

प्रकृति ईश्वर का प्रकट रूप है, कला मानुष्य का। –लांगफैलो

आयुर्वेद की वसंत ऋतुचर्या

एक महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि आयुर्वेद में ऋतुचर्या किन सिद्धांतों को ध्यान में रखकर तय की गयी होगी? लगभग 5000 साल पहले तय की गयी ऋतुचर्या क्या आज भी उपयोगी है? पहली बात यह है आयुर्वेद का लोक-पुरुष-साम्य सिद्धांत यह स्पष्ट करता है कि पुरुषलोक के समान है (च.शा.5.3:पुरुषोऽयं लोकसम्मित:) इस सिद्धांत के प्रकाश में देखने पर लोक या पृथ्वी के वातावरण का सीधा-सीधा प्रभाव मानव के स्वास्थ्य पर पड़ता है क्योंकि लोक और पुरुष में समानता (च.शा.5.3:लोकपुरुषयो: सामान्यम्) होने से सामान्य-विशेष का सिद्धांत कार्य करता है। अर्थात सामान भावों को सामान भावों से मिलाने पर उस भाव की वृद्धि और असमान भावों को मिलाने पर ह्रास होता है। सत्य बुद्धि तभी प्रकट होती है जब स्वयं के अंदर प्रकृति को व प्रकृति के अंदर स्वयं को देखा जाये (च.शा.5.7): सर्वलोकमात्मन्यात्मानं च सर्वलोके सममनुपश्यत: सत्या बुद्धि: समुत्पद्यते। यहाँ पर लोक से तात्पर्य पूरी दुनिया के वातावरण से है जिसमें छ: धातुयें पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश तथा आत्मा शामिल हैं (च.शा.5.7): षड्धातुसमुदायो हि सामान्यत: सर्वलोक:। इस सूची में आत्मा का शामिल होना आश्चर्यजनक नहीं मानना चाहिये क्योंकि पौधे, प्राणी और सम्पूर्ण जीवन भी लोक में शामिल है। जिस प्रकार चंद्रमा, सूर्य, और वायु क्रम से विसर्ग, आदान, विक्षेप क्रियाओं से जगत का धारण करते हैं, ठीक उसी प्रकार सोमांश कफ, सूर्य जैसा पित्त, तथा वायु देह का धारण करते हैं (सु.सू.21.8): विसर्गोदानविक्षेपै: सोमसूर्यानिला यथा। धारयन्ति जगद्देहं कफपित्तानिलास्तथा।।

इन आयुर्वेदिक सिद्धांतों को आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखा जाये तो पर्यावरण और पारिस्थिक तंत्र के साथ मानव के रिश्तों की अनवरत सार-संभाल या अनुकूलन ही ऋतुचर्या है। इसे साधारण शब्दों में यों समझें कि यदि हवा, पानी, तापक्रम, मिट्टी, पेड़-पौधों में ऋतु के अनुसार परिवर्तन होते हैं तो हमें भी उसके अनुसार जीवन-शैली और खान-पान और पहनावे में परिवर्तन करना पड़ता है। यह परिवर्तन या अनुकूलन ही धातुसाम्य रखता है। यही अनागत रोगों का प्रतिकार या विकार-अनुत्पत्ति में सहायक है।

आयुर्वेद में वसंत ऋतुचर्या का बड़ा रोचक वर्णन है जो आधुनिक आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टि से बहुत साम्यता रखता है। वनों और उपवनों में जहां ठण्डी हवा, जल से भरे हुये तालाब, विविध प्रकार की जैव-विविधता वाले पुष्प-वृक्षों की प्रजातियाँ एवं विविध प्रजातियों के पक्षियों की कलरव ध्वनि हो, वहां समय बिताने के लिये वसन्त ऋतु सर्वोत्तम है। आधुनिक वैज्ञानिक शोध में उपवन, ग्रीन स्पेस, पार्क्स या गार्डन्स के स्वास्थोपयोगी प्रभाव पर पूरी दुनिया में बहुत शोध हुये हैं। प्राकृतिक-तन्त्रों, वनों एवं जैव विविधता क्षेत्रों में स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव पर सबसे प्राचीन निष्कर्ष चरकसंहिता, सुश्रुतसंहिता और अष्टांगहृदय में उपलब्ध हैं।

आइये चरकसंहिता में वसंत की आरोग्यदायी ऋतुचर्या का वर्णन देखते हैं: सन्दर्भ (च.सू.6.22-26): वसन्ते निचित: श्लेष्मा दिनकृद्भाभिरीरित:। कायाग्निं बाधते रोगांस्तत: प्रकुरुते बहून्।। तस्माद्वसन्ते कर्माणि वमनादीनि कारयेत्। गुर्वम्लस्निग्धमधुरं दिवास्वप्नं च वर्जयेत्।। व्यायामोद्वर्तनं धूमं कवलग्रहमञ्जनम्। सुखाम्बुना शौचविधिं शीलयेत् कुसुमागमे।। चन्दनागुरुदिग्धाङ्गो यवगोधूमभोजन:। शारभं शाशमैणेयं मांसं लावकपिञ्जलम्।। भक्षयेन्निर्गदं सीधुं पिबेन्माध्वीकमेव वा। वसन्तेऽनुभवेत् स्त्रीणां काननानां च यौवनम्।। तात्पर्य यह है किहेमन्त तथा शिशिर ऋतु में शरीर में संचित कफ, वसन्त ऋतु में सूर्य की गर्मी से कुपित होकर, जाठराग्नि को बाधित करता है। जिसके कारण कफज व्याधियां उत्पन्न हो सकती हैं। अत: कफ को निकालने के लिये वसन्त ऋतु में शिरोविरेचन, वमन, कवल-धारण आदि का प्रयोग करना स्वास्थ्य के लिये लाभकारी रहता है। इसके साथ ही उबटन, गुनगुने पानी का प्रयोग, उद्यानों एवं वनों में घूमना, पैदल चलना तथा शारीरिक व्यायाम भी बसंती-ऋतुचर्या के उपयोगी आयाम हैं। पुष्पित पल्लवित वनों में इनका अनुभव लेना चाहिये।

वसन्त ऋतु में बहुत मीठा, स्निग्ध, अम्ल, देर से पचने वाले गुरू आहार तथा दिन में सोना ठीक नहीं रहता। इसका मूल कारण यह है कि हेमन्त और शिशिर ऋतु में संचित कफ अपने आप में एक समस्या है, और यदि कफ वृद्धि करने वाले ये सभी कार्य किये जायें तो आगे चलकर बीमार होने की आशंका रहती है।

वसन्त ऋतु में खाद्य पदार्थ के रूप में सबसे उत्तम जौ, गेहूं, शहद, ईख, अंगूर आदि उत्तम हैं। आवश्यकतानुसार वैद्यों की सलाह से अंगूर या महुवा से बने हुये स्वच्छ औषधीय-आसव व अरिष्ट वसन्त ऋतु में लिये जा सकते हैं। साठी के चावल, शीत द्रव्य, मूंग, निवारी के चावल, कोदो तथा मूंग की दाल के सूप, बैंगन, पटोल आदि तिक्त रस वाले द्रव्यों का उपयोग उत्तम रहता है। वसन्त ऋतु में तीक्ष्ण, रुक्ष, कटु, क्षार, कषाय रस वाले पदार्थो में जौ, मूंग और मधु मिलाकर भोजन के रूप में लेना उपयोगी है।

वसंत ऋतु में बासंतिक वमन या वैद्य की सलाह से अगर आवश्यक हो तो पंचकर्म भी लिया जा सकता है। तमाम रोगों के विरुद्ध पंचकर्म और इसकी घटक क्रियाओं की विशाल प्रयोज्यता और उपयोगिता है। जब रोगों के उपचार या स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की बात आती है, तो आयुर्वेदिक पंचकर्म के टक्कर की और कोई विधि नहीं है।

वसंत ऋतु में मौसमीं और वायरल बीमारियों का भी प्रकोप अब प्रायः दिखाई पड़ता है। इनसे बचने के लिये वैद्यों की सलाह से हल्दी, तुलसी, आमलकी, शुंठी, कालीमिर्च, पिप्पली, लहसुन, पुदीना, त्रिकटु, त्रिफला, गुडूची, कालमेघ, चिरायता, वासा, शिठू या सहजन, यष्टिमधु, बिभीतकी, अश्वगंधा, हरीतकी, मुस्ता, पाठा, पुनर्नवा आदि युक्तिपूर्वक लिये जा सकते हैं। परन्तु ध्यान यह रखना है कि कोई भी औषधि वैद्य की सलाह के बिना नहीं लें।

सभ्यताओं के विनाश काल में भी, अगर आदमी मौत के मुंह में जाने का काम ही न कर रहा हो, तो पंचकर्म सबसे दुरुस्त चिकित्सा है (च.वि.3.13): येषां न मृत्युसामान्यं सामान्यं न च कर्मणाम्। कर्म पञ्चिवधं तेषां भेषजं परमुच्यते।। वसंत ऋतु में आप पंचकर्म या ऋतुचर्या के अनुसार कम से कम पंचकर्म का एक घटक-वमन-के प्रयोग के बारे में सोच सकते हैं। पर आपको अपने आयुर्वेदाचार्य से सलाह लेकर यह तय करना होगा कि क्या आपको सचमुच पंचकर्म की आवश्यकता है या नहीं। पंचकर्म से स्वास्थ्य को यथावत बनाये रखने और उम्र-आधारित रोग-जनन को दूर रखने में मदद मिलेगी।

पंचकर्म वैसे तो शारीरिक-मानसिक शोधन और रोग शमन दोनों में मददगार है, पर पहली बात यह है कि यदि आप बार-बार बीमार होकर दवाओं में अपना धन नष्ट नहीं करना चाहते, तो पंचकर्म उपयोगी है। बीमारी में धन की बर्बादी के साथ जो शारीरिक-मानसिक पचड़ा-परेशानी होती है वह तो अतिरिक्त है। अत: सदैव स्वस्थ बने रहने के लिये साल में एक बार पंचकर्म करना सबसे उपयुक्त है।

दूसरी बात यह है कि सघन चिकित्सा इकाई में कोई नहीं मरना चाहता। दीर्घ-काल तक, या कहिये जीवन के अंतिम दिन तक, स्वस्थ रहना है तो आयुर्वेद के रसायन बड़ी मदद करते हैं। पर बिना शोधन क्रिया कराये रसायनों को लेने का मतलब वैसा ही है जैसा पुराने कम्बल को रंगना। रसायन उम्र-आधारित रोग-जनन रोकने या दर्द-निवारण में तभी सक्षम होते हैं जब पहले शोधन कराया जाये। नियमानुसार पंचकर्म, रसायन और वाजीकर का प्रयोग करने से धातुसाम्य बना रहता है, रोग नहीं होते, धातुयें बढ़ती हैं इसलिये बूढ़े होने की गति धीमी हो जाती है (च.सू.7.48-49): यथाक्रमं यथायोग्यमत ऊर्ध्वं प्रयोजयेत्। रसायनानि सिद्धानि वृष्ययोगांश्च कालवित्।। रोगास्तथा न जायन्ते प्रकृतिस्थेषु धातुषु। धातवश्चाभिवर्धन्ते जरा मान्द्यमुपैति च।।

तीसरी बात यह है कि वैसे तो पंचकर्म की कुछ क्रियायें दिनचर्या और ऋतुचर्या का अंग हैं, पर हम प्राय: उन्हें भुला देते हैं। जीवन भगदड़ हो गया है। जीवनशैली त्रिदोष-भड़काऊ हो गयी है। प्रज्ञापराध और असात्म्येन्द्रियार्थ संयोग हमारी आदत हो गये हैं। हमारा समय त्रिदोष-भड़काऊ काल है। ऐसी स्थिति में अनेक रोगों की रोगों की शुरुआती अवस्था दिखने लगती है, तब होश आता है कि पंचकर्म तो हमारे लिये ही है।

ऋतुचर्या में पंचकर्म की क्रियायें तो उपयोगी हैं ही, पर साथ ही आयुर्वेद का सिद्धांत यह है कि बहुदोष के लक्षण दिखें तो समझिये पंचकर्म की आवश्यकता निश्चित रूप से है। तात्पर्य यह समझिये कि अपच, आहार-अरुचि, मोटापा, पांडुता, भारीपन, थकावट, पिडका कोठ और कंडू (तरह तरह की फुंसियाँ), स्तम्भ, अरति, आलस, श्रम, कमजोरी, शारीरिक दुर्गन्ध, अवसाद, कफ व पित्त का भड़कना (उत्क्लेश), नींद उड़ जाना या खूब नींद आना, तन्द्रा (उनींदापन या हमेशा औंघाते रहना), क्लैब्य, अबुद्धि की स्थिति, उल्टे-पुल्टे सपने आना, और पौष्टिक आहार लेते रहने के बावजूद बल और रंग उड़ना बहुदोष के लक्षण हैं। ऐसे लोगों के लिये पंचकर्म या संशोधन हितकारी होता है। अनुभवी और कुशल चिकित्सक रोगी के दोष स्थिति व बल को समझकर चिकित्सा की सलाह देगा व शोधन करायेगा (च.सू.16.13-16): अविपाकोऽरुचि: स्थौल्यं पाण्डुता गौरवं क्लम:। पिडकाकोठकण्डूनां सम्भवोऽरतिरेव च।। आलस्यश्रमदौर्बल्यं दौर्गन्ध्यमवसादक:। श्लेष्मपित्तसमुत्क्लेशो निद्रानाशोऽतिनिद्रता।। तन्द्रा क्लैब्यमबुद्धित्वमशस्तस्वप्नदर्शनम्। बलवर्णप्रणाशश्च तृप्यतो बृंहणैरपि।। बहुदोषस्य लिङ्गानि तस्मै संशोधनं हितम्। ऊर्ध्वं चैवानुलोमं च यथादोषं यथाबलम्।।

जैसा कि पहले भी मैंने लिखा है, जीवन और मृत्यु के मध्य सात रक्षा दीवारें हैं: आहार, विहार, सद्वृत्त, स्वस्थवृत्त, पंचकर्म, रसायन/वाजीकर, औषधि। इनमें से शुरू की छ: दीवारें स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य-रक्षण में मदद करती हैं। और सभी सात दीवारें या सुरक्षा कवच मिलकर रोगी को स्वस्थ करने में मदद करती हैं। जब आहार, विहार, सद्वृत्त व स्वस्थवृत्त की सुरक्षा दीवार को ठीक से प्रतिदिन न सम्हाला गया हो तो पंचकर्म की जरूरत पड़ जाती है। इसके बाद, जीवन और मृत्यु के बीच रसायन और औषधि की दीवारें ही शेष बचती हैं।

वसंत ऋतु में मौसमीं और वायरल बीमारियों का भी प्रकोप अब प्राय: दिखाई पड़ता है। इनसे बचने के लिये वैद्यों की सलाह से हल्दी, तुलसी, आमलकी, शुंठी, कालीमिर्च, पिप्पली, लहसुन, पुदीना, त्रिकटु, त्रिफला, गुडूची, कालमेघ, चिरायता, वासा, शिठू या सहजन, यष्टिमधु, बिभीतकी, अश्वगंधा, हरीतकी, मुस्ता, पाठा, पुनर्नवा आदि युक्तिपूर्वक लिये जा सकते हैं। परन्तु ध्यान यह रखना है कि कोई भी औषधि वैद्य की सलाह के बिना नहीं लें।

ऋतुचर्या पालन वस्तुत: एक आरोग्यदायी युक्ति है। इस सन्दर्भ में चरकसंहिता का एक संवाद देखिये: "भगवन्! क्या लोगों की आयु निश्चित होती है या नहीं (किन्नु खलु भगवन्! नियतकालप्रमाणमायु: सर्वं न ति?" अग्निवेश ने पूछा। भगवानआत्रेय का उत्तर यहथा: "अग्निवेश! समस्त प्राणियों की आयु युक्ति की अपेक्षा करती है (इहाग्निवेश! भूतानामायुर्युक्तिमपेक्षते)।" यहाँसन्देश यह है कि मृत्यु की तिथि तय नहीं है। आयु युक्ति की अपेक्षा करती है। युक्ति से आप स्वस्थ रह सकते हैं। युक्ति से आपकी आयु बढ़ाई जा सकती है। युक्तिपूर्वक वसंत ऋतुचर्या का आनंद लीजिये और स्वस्थ रहिये।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय
(इंडियन फारेस्ट सर्विस से सेवानिवृत्त, वर्तमान में राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान में विजिटिंग प्रोफेसर)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं।)

अभद्र भाषा का व्यापार : नोटों की बरसात – सरकार बेखबर

राजेन्द्र मोहन शर्मा

हमारी सामाजिक परम्परा में गालियों का बहुत पुराना इतिहास है। ये एक जरिया भी हैं जिससे मानव मन के भीतर जमा हुआ गुस्सा, हताशा और अवसाद फूटकर बाहर निकलता है। यानि कि गालियां हमारे जीवन की 'सेफ्टी वाल्व' होती हैं, जो प्रेशर कुकर में बनी भाप को बाहर निकाल देती हैं और मानवीय धैर्य के कुकर को विस्फोट होने से बचाती हैं। कहते हैं यदि समाज से गालियां हटा दी जाएं, तो समाज बीमार हो जाएगा। कह सकते हैं कि गालियों से ही समाज में स्वस्थ्य चित्त का निर्माण होता है। फिर, गाली क्या है? कुल जमा कुछ शब्दों का जोड़ ही तो है गाली। बिजली गुल होती है, तो लोग गाली पुराण का पाठ शुरू करते हैं कि इन बिजली वालों ने फिर लाइट गायब की.. इनकी.. उनकी..! नहाते हुए अगर नल का पानी चला जाए, तो फिर गालियों का डोज़ दूनी ही तेज़ी से निकलता है। बात गाली पर हो और शर्त यह कि वह शालीनता की सीमा से बाहर न जाए, यह नट के डोर पर चलने जैसा है। गाली वैचारिक लिहाज़ से अपनी ताक़त दिखाने का ज़रिया भी है। आपका यह उद्देश्य तभी पूरा हो सकता हैं, अगर गाली सुनने वाले को बुरी भी लगे। गालियों से हमें यह भी मालूम पड़ता है कि हमारे समाज में किस चीज को बुरा माना जाता है। झगड़े की स्थिति में गाली एक रास्ता देती है। आप बजाए मारा-पीटी करने के, मुँह से कुछ कहकर अपनी नाराज़गी व्यक्त कर सकते हैं। यानि गाली लड़ाई का अहिंसक तरीक़ा भी है। अधिकतर गालियां यौन अंगों और यौन सम्बंधों से जुड़ी हुई हैं। हमारी अधिकतर गालियां स्त्रियों की बात करती हैं। यानि आप का झगड़ा किसी से भी हो, गाली में अक्सर उसकी मां या बहन को ही पुकारा जाता है। यह स्थिति हमारे समाज में महिलाओं के प्रति बीमार मानसिकता का बोध कराती है। अगर नीयत साफ़ हो, तो गालियां जीवंत संस्कृति का प्रतीक भी बनती हैं। जैसे देश में हर दस कोस पर पानी और भाषा बदल जाती है, वैसे ही गालियों का भी व्याकरण बदलता है।

पहले परंपराओं में ये गाली एक समय विशेष के खांचे में बंधी रहती थी, पर यहां तो ये सिलसिला अंतहीन हो गया। अब तो गाली शास्त्रार्थ रुकने का नाम ही नहीं लेता है। गाली पहले इन्सानी प्रवृतियों के लिए अनुमन्य थी। पर अब यह व्यक्तियों को दी जाने लगी है। वह भी सिर्फ़ उन्हें अपमानित करने के लिए।

गालियों को स्त्री विरोधी बना देना एक सामाजिक विसंगति है, जो समाज के अधोपतन के साथ प्रचलित हो गईं। हम ऐसी बहुत सी गालियां बकते हैं जो स्त्री की यौनिकता पर चोट करती हैं। ये पूरी तरह से स्त्री विरोधी गालियां हैं। इसमें कोई दो राय नहीं कि गालियों का भी लिंग होता है।

गालियां समय, स्थान, व्यक्ति पर निर्भर नहीं करतीं। ऐसे-ऐसे गालीबाज देखें हैं जिनके मुंह से गाली पहले और शब्द बाद में निकलते हैं।कई लोगों के लिए यह जरूरी नहीं कि वह किसी व्यक्ति को ही गाली दें, मंदिर की सीढ़ियों पर टकराकर भी उनके मुंह से गाली निकल जाती है। वो आसमान, बरखा, बारिश तक को सूंत सकते हैं, किसी स्थान को गाली दे सकते हैं, किसी समय को गाली दे सकते हैं। ऐसी भद्दी मान्यता भी है कि जो ज्यादा गाली देते हैं वो दिल के साफ होते हैं। जो नहीं दे पाते वो अंदर-अंदर घुन्ने रहते हैं। आजकल तो गालियां भी है, स्कूल वाली, कॉलेज वाली ओटीटी पर गालियों की भरमार ने इसे अलग तरह की स्वीकृति दे दी है। तर्क भी बड़े हैं अगर जीवन में गालियां हैं तो फिल्मों में, वेब सीरीज में क्यों नहीं पोडकास्ट और मंनोरंजन के मंचों पर क्यों न हो। हमारे तो शादि विवाह से लेकर धुलण्डी को सार्वजनिक तौर पर गालियों की बौछार होती है पर लोग उसका बुरा नही मानते वो एक अवसर विशेष होता है ।

लेकिन अब वर्जनाओं वाले समाज की छटपटाहट धीरे-धीरे विस्फोटक होती हुई ओटीटी के प्लेटफॉर्म पर गालियों के साथ पूरी नग्नता परोसी कर अब सार्वजनिक मंचों से अभद्रतापूर्ण ही नहीं खुले आम अश्लील शाब्दिक आक्रमण शुरु हो गए हैं। स्टैंडअप कॉमेडियन समय रैना के शो 'इंडियाज गॉट लेटेंट' में जज बनकर आए रणवीर अलाहाबादिया, समय रैना और अपूर्वा ने गलियों की बोछारों के साथ सारी सीमाएं लांघते हुए माता-पिता के सैक्स सम्बन्धों और माता की यौनी जैसे मुद्दों पर भद्दे मजाक किए। जहां लोग टिकट खरीद कर इस फूहड़ता पर ठहाके भी लगा रहे थे। आज लोकप्रियता हासिल करने का सुगम तरीका है सैक्स से भरे मुद्दों को फूहड़ता से परोसो या किसी के मर्म पर या धर्म पर चोट करो।

जिन्हें नही पता उनकी जानकारी के लिए बता दूं कि रणवीर अलाहबादिया एक पोडकास्टर है। जिसने बड़े बड़े नेताओं से लेकर धर्मगुरुओं तक के साथ पॉडकास्ट किए हैं । इतना ही नही खुद मोदी जी इसे सार्वजनिक मंच से सम्मानित कर चुके है । रणवीर समय रैना और अपूर्वा मुखीजा के खिलाफ की एफआईआर दर्ज हुई और मसलना सुप्रीम कोर्ट तक जा पंहुचा। सुप्रीम की सुनवाई के समय पहली टिप्पणी–"हमें तुम्हारे मुंह में दुर्गंध आ रही है"। अभियुक्त की तरफ से खड़े युवा वकील ने कहा–"मी लार्ड, मुझे भी घिन्न आ रही है"। अब आप समझ ही गए होंगे कि मसला कितना संगीन हो चला है। गालियों के व्यापारी करोड़ों रूपया कमा रहे हैं। लाखों-करोड़ों फैन फालोवर्स हैं। यह महामारी तेजी से फ़ैल रही है।

सोचिये ऐसे लोग समाज को क्या दे रहे हैं ये कॉमेडी के नाम पर। पर सवाल यह नही है कि ऐसे भद्दे मजाक क्यों हो रहे हैं इन पर लगाम क्यों नही लग रही। श्रीमान जब हमारी कार्यपालिकाओं और विधायिकाओं में जब हमारे प्रतिनिधि सरेआम न्यूड विडियो देखते हुए कैमरों में कैद हो रहे हैं तो आम जन की कौन कहे।

हमारी सबसे बड़ी चिन्ता ये है कि नाबालिग बच्चे इन्हें सबसे ज्यादा इन्हें देखते, सुनते और इनका अनुसरण करने की कोशिश करते हैं। इसी पैनल में एक अपूर्वा मुखीजा नाम की लड़की भी जज थी जो प्रतियोगी से पूछती है कि जिस माँ के गोपनीय अंग का नाम लेकर तुम इससे बाहर आये हो बताओ उसके अलावा कभी कोई दूसरी औरत यह अंग कब देखा है। अब बताइए कॉमेडी के नाम पर मातृत्व को लेकर इतना गंदा और भद्दा। मजाक और माता पिता के रिश्तों पर असहनीय बात कौन करता है। ये कॉमेडी का वो स्तर है, जिसने सभ्यता का सम्पूर्ण स्तर गिरा दिया है। ऐसे मानसिक विकृतियों के विषाणु अब हमारी मुट्ठी में कैद हो गए हैं जिन्हें जब चाहो देखो और सुनो। यह एक ऐसा कुचक्र जिसमें ये लोग हमारी आने वाली पीढ़ी को संस्कार-विहीन करने का संकल्प ले चुके हैं। सरकार और पैरेंट्स के लिए यह एक एक अलार्म है, जो बहरों को भी सुनई दे रहा है। सम्भल जाइए, वरना हम अपने बच्चों का और अपने महान राष्ट्र का सर्वनाश अपनी आंखों से देखेंगे।

सोशल मीडिया पर इस एक मामले ने देखते ही देखते तूफान ला दिया। प्रकरण तब और पेचीदा हो जाता है जब आरोपी यूट्यूबर को स्वयं प्रधानमंत्री मोदी अपने कर-कमलों से सम्मानित भी कर चुके हों।

बेबुनियाद हंसी के बाज़ार में एक नई चीज़ आई है डार्क ह्यूमर। उससे पहले कपिल शर्मा जैसे कॉमेडियन रोस्ट कॉमेडी लेकर आए थे। उससे भी पहले जसपाल भट्टी रोस्ट कॉमेडी का अनोखा गुदगुदाने वाला संस्करण लेकर आए और अमर हो गए।

अब रील्स का ज़माना है, सो डार्क और रोस्ट को मिलाकर एक नई कॉमेडी बनी है, जिसमें अथाह गाली-गलौच और सामान्य वर्जित विषयों पर फिसलती जुबां से हंसी परोसी जा रही है। रणवीर अलाहाबादिया, समय रैना जैसे अनेक लड़के लड़कियां डार्क ह्यूमर के नए स्तंभ बन रहे हैं। समाज की हर वर्जना, हर हद को तोड़ रहे हैं। इनकी बातों से बने गुब्बारे को इस हद तक दबाया जाता है कि थोड़ी ही देर के भीतर दबी हुई हंसी का गुब्बारे फूट पड़तें। जिसे परोसने वाला फूलकर कुप्पा हो जाता है। बदले में ढेर सारा पैसा साथ में सस्ती लोकप्रियता, एक-दो एफआईआर और नैतिकता सिखाने वाले ठेकेदारों की गालियां मुफ्त में। यह रिएक्शन घर-घर तक पहुंच रहा है। छोटे बच्चे भी इसे बेझिझक गालियां दोहरा रहे हैं। इससे समाज की कैसे ऐसी तैसी हो रही है इस पर मैं बात नहीं करूंगा। लेकिन भाषा और कंटेंट के तौर पर हम कितने बेहाल हो गए हैं यह तो साफ समझ आ रहा है। लोगों को सिर्फ अपनी भद्दी बातें कहनी है किराए के ठहाकेदारों के सामने।

जसपाल भट्टी कलजयी हैं। उनके पास अच्छी स्क्रिप्ट, बेजोड़ अभिनय और मारक संदेश था। तकरीबन एक कार्टूनिस्ट की पूरी सोच के साथ। आज यह सोच गायब है, क्योंकि हमने हंसी के नए स्त्रोत गंदगी में खोजने शुरू कर दिये हैं। हम आसानी से सस्ता कंटेंट बनाना चाहते हैं। ये क्षिणक मामला है, जिसके ज़ख्म बहुत गहरे हो चले हैं।

इस चलन की तबाही भयावह होगी, क्योंकि धर्म आधारित हमारे समाज में नैतिकता और आजादी के बीच हमेशा जंग हुई है। लेकिन इन हरकतों से अभिव्यक्ति की आजादी ही नही धर्म भी खतरे में पड़ गया है। जिस सनातनी समाज के पैंसठ करोड़ लोगों ने आस्था के नाम पर कुम्भ में गोते लगा कर नया विश्व कीर्तिमान बनाया है क्या विरोधाभास के नाम पर वे ही लोग इस गालियों के गंदे सागर में डूब कर अपनी बर्बादी पसंद करेगा।

–राजेन्द्र मोहन शर्मा,
अतिथि संपादक
साहित्यकार, शिक्षाविद एवं चिन्तक

होली मिलन समारोह आज

हिण्डौन सिटी । राजपूत समाज का होली मिलन व सम्मान समारोह आज शहर के मेवा रोड स्थित एक निजी मैरिज होम में आयोजित किया जाएगा।

राजपूत समाज के शिशपाल सिंह जादौन, सत्यस्वरूप सिंह जादौन, नत्थू सिंह राजावत, अजय सिंह सोलंकी, कै. नरोत्तम सिंह, रामराज सिंह, उम्मेद सिंह, गणेश सिंह रामचन्द्रसिंह, नरेन्द्र सिंह जादौन एडवोकेट, पुष्पेन्द्र सिंह राजावत, सुनील सिंह जादौन नरेंद्र सिंह जादौन एडवोकेट ने जानकारी देते हुए बताया कि समाज का होली मिलन एवं सम्मान समारोह रविवार सांय 4 बजे वृंदावन रिसोर्ट महवा रोड में आयोजित किया जावेगा। इस दौरान गोवर्धन सिंह जादौन को भारतीय जनता पार्टी जिला करौली का जिलाध्यक्ष निर्वाचित किये जाने, अजयसिंह जादौन को जिलाध्यक्ष क्रिकेट संघ करौली निर्वाचित होने पर, सीमा जादौन को जिला शिक्षा अधिकारी पद पर पदोन्नत किये जाने पर एवं बाईसा धानवी सिंह पिचानोंत के राज्य स्तर पर घुडसवारी प्रतियोगिता में 2 सिल्चर व 2 कांस्य पदक प्राप्त करने पर सम्मान भी किया जावेगा।

श्रीश्यामबाबा भजन समिति

सीकर, । श्रीश्यामबाबा भजन समिति की ओर से शुक्रवार को श्यामप्रभु की विशाल निशान यात्रा नगर के मुख्य मार्गों से निकाली गई। श्यामभक्त रामगोपाल गोपी के सानिध्य में शाम सवा 6 बजे निशान खाटूश्यामजी पहूंच कर बाबा के चरणों में अर्पित किये गए। समिति के अध्यक्ष राजकुमार त्रिपाठी ने बताया कि श्यामभक्त भजन गायक रामगोपाल गोपी, सुनील नैनसुखा, वीरेन्द्र माथुर, दीपक पटेल, राजेश शर्मा, अदि मौजुद थे।

'सभी का सम्मान करना चाहिए'

भरतपुर (निस)। कृषि महाविद्यालय भुसावर पर शनिवार को शून्य भेदभाव दिवस के उपलक्ष्य में बिचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। महाविद्यालय के डीन डॉ उदय भान सिंह ने कहा कि धर्म, जाति, लिंग, क्षेत्र, बीमारी, शारीरिक विकलांगता, पहनावा, रंग आदि के आधार पर मानव से मानव में भेदभाव करना गलत है। कुछ लोग या जातियॉ अपना प्रभुत्व कायम करने अथवा राजनैतिक लाभ लेने के लिए भेदभाव पैदा करते हैं। हमें हर मानव चाहे वह मजदूर, महिला या फिर विश्व में कही भी निवास करता हो, सभी का सम्मान करना चाहिए। डॉ विकास कुमार आर्य ने कहा कि कई व्यक्ति या व्यक्तियों का समूह अन्य व्यक्ति को अशुभ मानते है, कई औरतो को डायन बताकर उसे प्रताड़ित किया जाता है। ऐसा करना कानूनी अपराध व वैज्ञानिक सोच के विरूद्ध है। डॉ शंकर लाल यादव ने कहा कि सामाजिक या कानूनी रूप से स्वीकृत कोई भी कार्य छोटा या बडा नही होता, हमें सभी तरह के कार्य करने वाले व्यक्तियों का समान रूप से सम्मान करना चाहिए।

राजस्थान हाईकोर्ट का आदेश कार्मिक को एपीओ करने का कारण भी लिखित में बताना होगा

जोधपुर, (कासं) । राजस्थान हाईकोर्ट ने अपने आदेश में कहा कि एपीओ आदेश केवल राजस्थान सेवा नियमो में उल्लेखित आकस्मिक कारणों या समान कारणों में ही पारित किया जा सकेगा। कार्मिक को एपीओ करने का कारण भी लिखित में बताना जरूरी होगा, अन्यथा आदेश विधि विरुद्ध होगा। मामले में अधिवक्ता यशपाल ख़िलेरी ने याचिकाकर्ता डॉ. दिलीप सिंह चौधरी, डॉ. मांगीलाल सोनी, लक्ष्मीनारायन कुम्हार सहित अन्य की ओर से पैरवी की। राजस्थान हाइकोर्ट के न्यायाधीश अरुण मोंगा की एकलपीठ से राहत मिली।

भोपालगढ़, ज़िला जोधपुर के ब्लॉक मुख्य चिकित्सा अधिकारी याचिकाकर्ता डॉ दिलीप सिंह चौधरी की ओर से अधिवक्ता यशपाल ख़िलेरी ने रिट याचिका दायर कर बताया कि याचिकाकर्ता वर्ष 2015 से चिकित्सा अधिकारी पद पर नियुक्त होकर छह साल की आवश्यक संतोषजनक सेवा पूर्ण करने के बाद उसे वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी पद पर नियुक्त करते हुए बीसीएमओ, भोपालगढ़ के पद पर नियमानुसार नियुक्त किया गया। लेकिन तीन साल की सेवावधि वाले जूनियर अयोग्य चिकित्सक को उक्त वरिष्ठ पद पर नियुक्त करने की एक मात्र मंशा से याचिकाकर्ता को आदेश दिनाँक 19 फ़रवरी 2024 से एपीओ कर दिया गया, जिसे रिट याचिका दायर कर चुनोती दी गई।

सभी समान एपीओ आदेशो को चुनोती वाली रिट याचिकाओं की प्रारंभिक सुनवाई पर हाइकोर्ट की एकलपीठ ने एपीओ आदेश पर अलग अलग स्थगन आदेश जारी करते हुए राज्य सरकार को जवाब तलब किया था। राज्य सरकार की ओर से जवाब पेश कर जाहिर किया गया कि एपीओ आदेश प्रशासनिक आवश्यकता व जनहित को देखते हुए किया गया, जो राजस्थान सेवा नियम के नियम 25 क के अनुसार सही जारी किया गया है।

सभी 56 रिट याचिकाओ की अंतिम सुनवाई करने के बाद और पूर्व न्यायिक निर्णयों डॉ सुकुमार कश्यप बनाम राजस्थान राज्य और डॉ महेश कुमार पंवार बनाम राजस्थान सरकार निर्णयों से सहमत होते हुए और राजस्थान सेवा नियम 1951 के प्रावधानों का विस्तृत विवेचन करते हुए राजस्थान हाइकोर्ट एकलपीठ ने समस्त एपीओ आदेशों को निरस्त करते हुए भविष्य में एपीओ आदेश जारी करने के लिए विस्तृत दिशानिर्देश जारी किए, जिसमे एपीओ आदेश का उद्देश्य व औचित्य, एपीओ आदेश जारी करने की शर्तें, सीमाएं व प्रतिबन्ध, तथा प्रशासनिक जवाबदेही के सम्बन्ध आवश्यक निर्देश प्रतिपादित किये गए। साथ ही राज्य के मुख्य सचिव को इस सम्बन्ध में प्रशासनिक निर्देश जारी करने को भी आदेशित किया ताकि भविष्य में एपीओ आदेश जारी करते समय इन दिशानिर्देशों की अक्षरश: पालना हो सकें। एकलपीठ ने एपीओ मामलों में यह महत्वपूर्ण व्यवस्था दी कि एपीओ आदेश को स्थानान्तरण आदेश के विकल्प के रूप में जारी नही किया जा सकता है और न ही किसी कार्मिक को दंड देने अथवा अनुशासनात्मक कार्यवाही के विकल्प के रूप में या उससे बचने के पर्याय के रूप में पारित किया जा सकता है। साथ ही एपीओ आदेश राजस्थान सेवा नियम में उल्लेखित सात परिस्थितियों अथवा उसके ही समान परिस्थितियों में ही जारी किया जा सकता है लेकिन उन परिस्थितियों को संबंधित कार्मिक को लिखित में बताना आवश्यक होगा। एपीओ आदेश 30 दिन से अधिक जारी नही रखा जा सकता है बशर्ते वित्त विभाग द्वारा वैद्य औचित्य के साथ इसे अनुमोदित नही किया जाए।

राशिफल रविवार 2 मार्च, 2025

पंडित अनिल शर्मा

फाल्गुन मास, शुक्ल पक्ष, तृतीया तिथि, रविवार, विक्रम संवत 2081, उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र प्रात: 8:59 तक, शुभ योग दिन 12:39 तक, तैतिल करण दिन 10:36 तक, चन्द्रमा सोमवार प्रात:

सार-समाचार

शाहपुरा जिला के लिए आंदोलन जारी

शाहपुरा, (नि.सं.)। जिला बचाओ संघर्ष समिति के तत्वाधान में चल रहे आंदोलन के तहत शनिवार को 59 वे दिन वैष्णव समाज के लोगों द्वारा धरना दिया गया। इस दौरान वरिष्ठ नागरिक रघुनाथ जी वैष्णव, मिश्री दास वैष्णव, भीम वैष्णव भगवानदास वैष्णव सतीश वैष्णव बृजेश वैष्णव रमेश चंद्र वैष्णव बसंती लाल वैष्णव शांतिलाल वैष्णव दशरथ वैष्णव सियाराम वैष्णव माधव दास वैष्णव आत्माराम वैष्णव राम गोपाल वैष्णव ओम प्रकाश वैष्णव प्रहलाद वैष्णव पप्पू वैष्णव अमित वैष्णव रामप्रसाद वैष्णव योगेंद्र वैष्णव जुगल किशोर वैष्णव रमेश वैष्णव सियाराम वैष्णव राम प्रसाद वैष्णव रमेश वैष्णव आदि मौजूद थे। वरिष्ठ नागरिक रघुनाथ प्रसाद वैष्णव ने बताया कि रियासत कालीन शाहपुरा में उदयपुर और अजमेर के बीच में शिक्षा के क्षेत्र में हाई सेकेंडरी स्कूल सिर्फ शाहपुरा में थी और रियासत काल से ही शाहपुरा का अपना एक महत्व रहा है और जिला हटाकर सरकार ने कुठाराघात किया है और सभी समाजजन इसकी निंदा करते हैं। दुर्गा लाल जी जोशी ने कविता के माध्यम से राज्य सरकार को जिला बहाल करने का आव्हान किया। अधिवक्ता अनिल शर्मा ने सभी मापदंडों पर खडा उतरने के बाद भी शाहपुरा को जिला नहीं बनाकर और अपने प्रभावित नेताओं के जिलों को रखकर भेदभावपूर्ण राजनीति का उदाहरण पेश किया है। संयोजक रामप्रसाद जाट ने बताया कि जेल भरो आंदोलन में प्रशासन की तरफ से जो कमियां रही उनको बताया। इस दौरान राम प्रसाद जाट अनिल शर्मा आशीष सूर्य प्रकाश सुखवाल रामेश्वर लाल खटीक राजू उस्मान छिपा पालीवाल आशीष भारद्वाज किशन खटीक सोहेल खान राहुल पारीक कुलदीप सिंह ताज मोहम्मद प्रियेश सिंह यदुवंशी आदि मौजूद थे।

तुलसी विवाह व श्याम भजन संध्या झूमे श्रद्धालु

अजमेर, (कासं)। अजमेर के शास्त्री नगर स्थित भक्त प्रहलाद पार्क में चल रही सात दिवसीय शिव महापुराणा कथा में छठे दिन शनिवार को कोटि रुद्र संहिता, द्वादश ज्योर्तिलिंग, श्रीकृष्ण तपस्या, तुलसी विवाह के प्रसंगों का कथा वाचक ज्ञानदेव महाराज ने सविस्तार वर्णन किया। शाम को आयोजित हुई श्री श्याम भजन संध्या में श्रद्धालु झूले उठे और फूलों व इत्र से होली खेली। भजन संध्या में खाटूश्याम की मनमोहक झांकी भी सजाई गई। कथा वाचक संत ज्ञानदेव महाराज ने कथा में विस्तार से प्रसंगों का वर्णन करते हुए कहा कि ब्रह्माजी ने शंखचूड़ को श्री कृष्ण कवच दिया और धर्मदास की कन्या तुलसी से ब्रह्माजी की आज्ञा से तुलसी और शंखचूड़ का विवाह हो गया। मीडिया प्रभारी डॉ. एसडी मिश्रा ने बताया कि शनिवार को कथा से पूर्व यजमान नीरज शर्मा, अशोक जेठानी,अमित भूषण, सचिन महेश्वरी, रोशन सिंह, गोपाल सिंह, एएल चौधरी को आचार्य देव सरण तिवाडी, शिव कुमार जोशी ने 9 ग्रहों एवं व्यास पीठ की पूर्जा अर्चना कराई। रविवार को सुबह 11 बजे कथा का विश्राम होगा, हवन यज्ञ, पूजा एवं प्रसादी के साथ महाराज को विदाई दी जाएगी।

गाड़ी टकराने को लेकर हुए विवाद

भीलवाड़ा, (नि.सं.)। शहर के प्रताप नगर थाना क्षेत्र स्थित मयूर स्कूल के निकट गाड़ी टकराने को लेकर हुए विवाद के बाद एक युवक ने अधिवक्ता और उसकी पुत्री पर चाकू से जानलेवा हमला कर दिया। जानकारी के अनुसार पेशे से अधिवक्ता मोहम्मद अली पिता असगर अली कायमखानी अपनी पुत्री अलवीरा के साथ मयूर स्कूल के सामने मेडिकल स्टोर पर खड़ा था। इस दौरान पीछे से तेज गति से आए तीन बाइक सवार युवकों ने उसकी स्कूटी को जोरदार टक्कर मार दी। हादसे के चलते अधिवक्ता के रीढ़ की हड्डी और उसकी पुत्री के भी अन्य चोट आईं। इसका उलाहना देने पर बाइक सवार युवकों में शामिल एक युवक ने चाकू निकल के जान से मारने की नियत से अधिवक्ता पर जानलेवा हमला किया। वहां मौजूद लोगों ने बीच बचाव कर उसकी जान बचाई। टक्कर के चलते घायल अधिवक्ता मोहम्मद अली को एमजी हॉस्पिटल ट्रॉमा वार्ड में भर्ती करवाया गया है, वही प्रताप नगर थाना पुलिस ने हमले के मामले में एक संदिग्ध को हिरासत में लेकर पूछताछ शुरू कर दी है।

ट्रेलर ने कार को मारी टक्कर, 7 जने घायल

भीलवाड़ा, (नि.सं.)। भीलवाड़ा जिले के गंगापुर थाना क्षेत्र स्थित भीलवाड़ा उदयपुर हाइवे पर बीती देर शाम एक तेज रफ्तार ट्रेलर ने कार को टक्कर मार दी। हादसे में कार में सवार करीब आधा दर्जन से ज्यादा लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। घायलों को इलाज के लिए एमजी अस्पताल में भर्ती करवाया गया है। कार में सवार कमलेश जोशी ने बताया कि में मेरे परिवार सहित गंगापुर से भीलवाड़ा परिचित की तबियत पूछने जा रहे थे, इसी दौरान गंगापुर के समीप उनकी कार को एक तेज रफ्तार ट्रेलर ने टक्कर मार दी। हादसे में कार सवार करीब 7 जने गंभीर घायल हो गए। घायल ममता देवी, लीला देवी, लक्ष्मी बाई, कन्हैया लाल, कमलेश, राहुल और गुड्डु को हाइवे एंबुलेंस की सहायता से इलाज के लिए एमजी अस्पताल लाया गया, जहां ट्रॉमा वार्ड में सभी घायलों का इलाज जारी है।

ऋषभ डायग्नोस्टिक लैब में कार्य रुकवाया

भीलवाड़ा, (नि.सं.)। भीलवाड़ा शहर के माणिक्य नगर रोड पर स्थित ऋषभ डायग्नोस्टिक लैब में चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग की टीम ने काम रुकवाकर लैब में रखी सोनोग्राफी मशीन भी जब्त कर लिया। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉक्टर चेतेन्द्र पुरी गोस्वामी ने बताया कि उक्त लैब पहले अनंदा लैब के नाम से संचालित थी। पुराने मालिक ने लैब को सामान सहित बेच दिया और केरल चला गया। लैब में जो डॉक्टर थे वह भी छोड़ कर चले गए। लैब खरीदने वाले ने पुनः डॉक्टर नहीं लगाए। विभाग में नाम परिवर्तन कराये बिना ही बिना डॉक्टर के लेब को संचालित किया जा रहा था। ऐसे में निरीक्षण के दौरान इन कमियों के पाए जाने पर लेब में कार्य रुकवा दिया गया और सोनोग्राफी मशीन जब्त की है।

जन्म-मृत्यु पंजीयन के लिए राहत दी

भीलवाड़ा, (नि.सं.)। जन्म-मृत्यु रजिस्ट्रीकरण (संशोधन) नियम, 2025 में हुए संशोधनों में समस्त विलम्बित रजिस्ट्रण में नोटरी सत्यापन को समाप्त कर दिया गया है। जिला रजिस्ट्रार (जन्म मृत्यु) एवं उप निदेशक आर्थिक एवं सांख्यिकी विभाग ने बताया कि नियम 9 (2) के अर्न्तगत जन्म और मृत्यु की 30 दिवस के पश्चात 1 वर्ष के भीतर की घटना के लिए जारी की जाने वाली अनुज्ञा ग्रामीण क्षेत्र के विकास अधिकारी के स्थान पर अब ब्लॉक सांख्यिकी अधिकारी द्वारा एवं शहरी क्षेत्र में उप निदेशक, आर्थिक एवं सांख्यिकी विभाग द्वारा की जाएगी। इसी तरह 1 वर्ष के पश्चात सूचना देने पर संबंधित तहसीलदार द्वारा अनुज्ञा जारी की जाएगी। समस्त प्रकार की अनुज्ञा के लिए नोटरी सत्यापन को समाप्त कर दिया है।

ब्याजखोरों से परेशान युवक ने जान दी

भीलवाड़ा, (नि.सं.)।भीलवाड़ा शहर के प्रतापनगर थाना क्षेत्र में स्थित नर्बदा विहार कॉलोनी में एक युवक ने फांसी लगाकर जान दे दी। मृतक के पिता का आरोप है कि ब्याज माफियाओं से तंग आकर उनके बेटे ने जान दी है। पुलिस ने फिलहाल मृतक का पोस्टमार्टम कराकर शव परिजनों को सौंप दिया। जानकारी के अनुसार नर्बदा विहार कॉलोनी में रहने वाले रवि बनवाल ने मकान में सांडी के फंदे पर झुलकर आत्महत्या कर ली। सूचना मिलने पर घर पहुंचे पिता ने पुलिस बताया कि रवि ब्याज माफिया के आतंक से परेशान चल रहा था। पुलिस ने शव को फंदे से उतरवाकर महात्मा गांधी अस्पताल में जांच के बाद मोर्चरी में रखवाया और पोस्टमार्टम के बाद परिजनों को सौंप दिया।

संजय लालवानी मैन ऑफ द सीरिज रहे

अजमेर, (कासं)। सिन्धी ग्रुप झूलेलाल प्रीमीयर लीग क्रिकेट प्रतियोगिता 22 फरवरी से 1 मार्च तक आयोजित की गई। प्रतियोगिता के समापन अवसर पर सांईनाथ क्लब के हरि ओम कॉलोनी चन्द्रवरदाई नगर निवासी संजय चेतन लालवानी को प्रतियोगिता में अनेक पुरस्कारों से संमानित किया गया। लालवानी को बेस्ट बेटस मेन, मेन ऑफ दी सीरीज, मेन आफ द मैच एवं फाईटर ऑफ द मैच की ट्रॉफी व नगद राशि से सम्मानित किया गया। हरि ओम कॉलोनी विकास समिति और श्री अजमेर व्यापारिक महासंघ, सर्वधर्म समिति के पदाधिकारियों रमेश लालवानी, प्रियंका, सोनम, मोहित, प्रियेश सहित अन्य ने संजय लालवानी को सम्मानित होने पर शुभकामनाएं दी।

श्रेया राठी असिस्टेंट प्रोफेसर बनी

अजमेर, (कासं)। राजस्थान लोक सेवा आयोग अजमेर द्वारा आयोजित सहायक आचार्य मनोविज्ञान की परीक्षा 2023 में लिखित एवं साक्षात्कार उपरांत श्रेया राठी का अंतिम रूप से चयन हुआ है। श्रेया मूल रूप से ग्राम रीड तहसील परबतसर जिला कुचामन डीडवाना की निवासी है, इनके पिता श्याम सुंदर राठी लेखा अधिकारी जल संसाधन विभाग अजमेर एवं माता दिव्या राठी प्रधानाचार्य टीटी कॉलेज अजमेर में कार्यरत है।

राजस्थान केन्द्रीय विश्वविद्यालय का 8 वां दीक्षांत समारोह हुआ

अजमेर, (कासं)। केन्द्रीय विश्वविद्यालय राजस्थान में आज आठवें दीक्षांत समारोह का आयोजन अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद के अध्यक्ष प्रोफेसर टी.जी. सीतारमण के मुख्य आतिथ्य में किया गया और अंतरिक्ष अनुप्रयोग केंद्र, अहमदाबाद के निदेशक और प्रतिष्ठित वैज्ञानिक, डॉ. निलेश देसाई भी इस समारोह में विशिष्ट अतिथि के रूप में शामिल हुए। विश्वविद्यालय कुलपति प्रोफेसर आनंद भालेराव ने समारोह की अध्यक्षता की।

समारोह के दौरान 2022 और 2023 बैच के पास-आउट कुल पन्द्रह सौ चौदह (1514) छात्रों को उपाधियां प्रदान की गई। इनमें (228) दो सौ अठाईस यू. जी. एक हजार चार सौ सत्ताईस (1427) पी. जी. और सत्यासी(87) प्रत्याशी पीएचडी स्कॉलर्स शामिल है।

समारोह उनकी अकादमिक यात्रा के समापन और उनके नए पेशेवर और शोध कार्यों की शुरुआत का प्रतीक बना। इस अवसर पर स्नातक, स्नातकोत्तर और डॉक्टरेट विद्यार्थियों को डिग्री प्रदान की गई। इसके अलावा, अपने-अपने कार्यक्रमों में सर्वोच्च सीजीपीए प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों में छियसी (86)स्वर्ण पदक प्रदान कर सम्मानित किया गया।

अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद् के अध्यक्ष प्रोफेसर टी.जी. सीतारमण के मुख्य आतिथ्य में केन्द्रीय विश्वविद्यालय राजस्थान में आठवें दीक्षांत समारोह का आयोजन किया।

दीक्षांत समारोह में अपने विचार साझा करते हुए कुलपति, प्रो. आनंद भालेराव ने कहा की राजस्थान केन्द्रीय विश्वविद्यालय का आठवां दीक्षांत समारोह हमारे विद्यार्थियों, संकाय सदस्यों और पूरे केंद्रीय विश्वविद्यालय समुदाय के लिए गर्व का क्षण है। यह हमारे संस्थान द्वारा सतत रूप से बनाए रखी गई, शैक्षणिक उत्कृष्टता और नवाचार के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाता है। हमें गर्व है कि इस अवसर पर हमारे साथ प्रो. टी. जी. सीताराम और डॉ. निलेश देसाई जैसे गणमान्य अतिथि मौजूद है।

यह दीक्षांत समारोह न केवल छात्रों की उपलब्धियों का उत्सव है बल्कि भविष्य के नेताओं, वैज्ञानिकों, उद्यमियों और शिक्षाविदों के निर्माण में विश्वविद्यालय की भूमिका को भी प्रदर्शित करता है। इस आयोजन में प्रतिष्ठित अतिथियों, विश्वविद्यालय के सम्मानित संकाय सदस्यों, गर्वित माता-पिता और विद्यार्थियों की उपस्थिति इसे एक अविस्मरणीय अवसर बनाती है।

बिजयनगर ब्लैकमेल कांड की सी.बी.आई. व एस.आई.टी. से जांच करने की मांग

बिजयनगर, (निसं)। कांग्रेस पार्टी के कार्यकर्ताओं ने शहर के बहुत चर्चित ब्लैकमेल कांड को लेकर शनिवार को नगर पालिका बिजयनगर में तहसीलदार रामकिशोर जांगिड़ को मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन दिया।

प्राप्त जानकारी के अनुसार मुख्यमंत्री के नाम दिए गए ज्ञापन में बताया कि बिजयनगर ब्लैकमेल कांड के आरोपियों पर सख्त से सख्त कार्रवाई करने व फाँसी की सजा दिलाने एव पूरे प्रकरण को उजागर करने के लिए सीबीआई व एसआईटी का गठन कर जांच करने की मांग की।

मामले में निष्पक्ष जांच कर समस्त आरोपियों के खिलाफ कार्यवाही, साथ ही आरोपियों को फंडिंग किन-किन व्यक्तियों द्वारा हो रही आरोपियों के संपर्क में कौन-कौन से व्यक्ति है उनकी भी जानकारी कर उनके नाम को भी उजागर किया जाए और आरोपियों के अंतरराष्ट्रीय संबंध के बारे में भी जानकारी की जाए।

इस पूरे प्रकरण में चाहे कांग्रेस संगठन या भाजपा संगठन या किसी भी संगठन का कोई भी व्यक्ति लिप्त हो तो उसकी जाँच कर प्रकरण में लिप्त समस्त आरोपियों के खिलाफ सख्त से सख्त कार्रवाई की जावे।

कांग्रेसियों का कहना रहा कि जब केंद्र व राज्य सरकार व स्थानीय विजयनगर पालिका में भाजपा की सरकार है, क्यों आमजन को सड़कों पर उतरकर विरोध प्रदर्शन करना पड़ रहा है। इस प्रकरण में दोषी प्रत्येक व्यक्ति पर कठोर कार्रवाई कर फांसी की सजा दिलाई जावे और निर्दोष व्यक्तियों को परेशान भी नहीं किया जाए।

प्रकरण में लिप्त समस्त आरोपियों के पिछले एक वर्ष की मोबाइल की कॉल हिस्ट्री की भी जाँच की जाए।

नगर कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष दौलतराम सिंधी, पूर्व नगर अध्यक्ष राजेंद्र शर्मा ,पूर्व मसूदा ब्लाक अध्यक्ष श्याम नागौरी, पार्षद ओमप्रकाश मेघवंशी पार्षद अमित जोशी पार्षद प्रतिनिधि प्रदीप बडोला, पार्षद जितेंद्र बेरवा पूर्व पार्षद व पूर्व युवा कांग्रेस अध्यक्ष नवीन कुमार सोनी, पूर्व युवा कांग्रेस उपाध्यक्ष भोपाल सिंह, पूर्व पार्षद गोपाल स्वरूप कुमावत, पूर्व पार्षद संजय सांड , पूर्व पार्षद सीताराम पवार, पूर्व पार्षद हरीश शर्मा, सेवादल के रमेश मोटवानी, श्याम शर्मा, सुशील अजमेरा, सुभाष अजमेरा, वैभव राज सिंह कुशवाह, प्रकाश चन्द बडोला ,सरवन, राजू तिवारी, अंकित तातेड़, पियूल लुणावत, सुमित सोनी, परमेंद्र सिंह, धर्मीचंद बुरड़ व भवानी सिखवाल सहित कई कांग्रेस जन उपस्थित थे।

'सामूहिक विवाह अमीर-गरीब को एक जाजम पर लाते हैं'

माली, सैनी समाज का फुलेरिया दूज को सामूहिक विवाह सम्मेलन ग्राम बडू में संपन्न हुआ।

परबतसर, (निस) माली,सैनी समाज द्वारा फुलेरिया दूज को सामूहिक विवाह सम्मेलन उपखंड के ग्राम बडू में धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ।

परबतसर, मकराना, बिदियाद, बोरावड,बडू, कालवा माली सैनी समाज सामूहिक विवाह समिति के अध्यक्ष सत्यनारायण सिंगोंदिया की अध्यक्षता में समारोह के मुख्य अतिथ केबिनेट मंत्री अविनाश गहलोत और उद्योगपति अजमेर निवासी विजय कुमार थे। समाज सेवी भामाशाह भकरी निवासी श्यामसुन्दर सोलंकी और दिपक तंवर नावां वाले ने अध्यक्षता की। बडू में शनिवार को माली सैनी समाज का 26 वां सामूहिक विवाह समारोह आयोजित हुआ। कार्यक्रम में राजस्थान सरकार के कैबिनेट मंत्री अविनाश गहलोत पहुंचे और विवाह सूत्र में बंधे 19 जोड़ो को आशीर्वाद दिया।

कार्यक्रम को संबोधित करते गहलोत ने कहा कि आज के समय में सामूहिक विवाह समारोह अमीर गरीब की खाई को पाट कर एक जाजम पर बैठाने का काम करता है। समाज ने विगत 26 सालों में सामूहिक विवाह के माध्यम से कई गरीब परिवारों को सहारा दिया है जो सकारात्मक पहल है। इस तरह के आयोजन समय की आवश्यकता है जो समाज को एक सूत्र में बंधे रखते हैं।

इस मौके पर परबतसर विधायक रामनिवास गावड़िया, मकराना विधायक जाकिर हुसैन गैसावत, पूर्व विधायक मानसिंह किनसरिया,पूर्व विधायक रुपाराम मुरावतिया, भाजपा जिलाध्यक्ष सुनिता रांदड, राजसथान माली सैनी महासभा के प्रदेशाध्यक्ष ताराचंद गहलोत, महासभा की महिला मंडल प्रदेश अध्यक्ष गीता सोलंकी ने समारोह को सम्बोधित किया।

इससे पहले सम्मेलन का आगाज सुबह बिन्दौली के साथ हुआ जिसमे वर पक्ष के सभी 19 दूल्हे और सालिगराम तुलसी के साथ प्रेमदास महाराज की बगीची से शुरु हुआ जो मुख्य मार्ग मे ग्रामीणों ने फूल वर्षा कर अभिनंदन किया, जो बाजार से होकर गाजो बाजो के साथ विवाह समारोह पहुंचे।

जहां पर 19 वर ने एक साथ तोरण की रस्म पुरी करने के बाद वरमाला आयोजन हुआ।

आचार्य पंडित विमल पारीक के सानिध्य में पंडितों ने सभी जोड़ो का परिणय संस्कार करवाया। इस अवसर पर लोगों ने कन्यादान में भाग लिया। वर-वधू कन्यादान लिए पांच लाख नबहजार रूपए की राशि प्राप्त हुई। आगामी सामूहिक विवाह सम्मेलन ग्राम कालवा मे आयोजित किया जायेगा।

77 वां अणुव्रत स्थापना दिवस मनाया

आसींद, (निसं)। अणुव्रत समिति द्वारा 77वां अणुव्रत स्थापना दिवस समारोह अमृत भारती उच्च माध्यमिक विद्यालय प्रांगण में मनाया गया। समारोह के मुख्य अतिथि तेरापंथ सभा अध्यक्ष कन्हैया लाल दुगड़ और समारोह की अध्यक्षता तेरापंथ शिक्षा समिति अध्यक्ष बाबूलाल दूगड़ ने की।

आचार्य महाश्रमण की सुशिष्या शासनश्री साध्वी जसवती ने मंगल संदेश में अणुव्रत पर प्रकाश डालते हुए अधिक से अधिक अणुव्रती बने इस पर विशेष जोर दिया। आचार्य तुलसी द्वारा प्रदत्त यह आयाम जन-जन का आयाम बने इस और वर्तमान में आचार्य महाश्रमण अहिंसा यात्रा आदि के द्वारा विशेष प्रयास कर रहे है।मुख्य अतिथि कन्हैयालाल दूगड़ ने अपने वक्तव्य में कहा कि अणुव्रत के छोटे-छोटे नियमों से व्यक्ति अपना परिवार,समाज एवं राष्ट्र के विकास में विशेष योगदान दे सकता है। समारोह के अध्यक्ष श्री बाबूलाल दूगड़ ने विद्यार्थी अणुव्रत एवं शिक्षक अणुव्रत के नियमों पर चर्चा करते हुए उसे अपने जीवन में अपनाने की प्रेरणा दी। तेरापंथ सभा के मंत्री दलपत कावड़िया तेरापंथ शिक्षा समिति मंत्री अनिल गोखरू एवं स्थानीय विद्यालय के प्राचार्य ओम प्रकाश जोशी ने अणुव्रत के नियमों के बारे में विस्तार से बताया एवं अपने जीवन में आत्मसात करने की विशेष प्रेरणा प्रदान की। अणुव्रत समिति मंत्री कैलाश चंद्र शर्मा ने आचार्य श्री तुलसी द्वारा आज से 76 वर्ष पूर्व दिए अणुव्रत के आयाम को विस्तार से बताते हुए इसकी विस्तृत जानकारी दी। उपस्थित सभी विद्यार्थियों ने अणुव्रत के संकल्प ग्रहण किये। कार्यक्रम की शुरुआत अणुव्रत गीत के संगान के साथ हुई। कार्यक्रम का सफल संचालन तेरापंथ कन्या मंडल संयोजिका सुश्री श्रद्धा गोखरू ने किया। आभार शिक्षक बिहारी लाल नुवाल ने किया।

अजमेर संवाददाता के अनुसार : अणुव्रत समिति अजमेर अध्यक्ष बी. एल. सामरा ने बताया कि वर्तमान में अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण जी के आध्यात्मिक मार्गदर्शन में अणुव्रत की प्रतिनिधि वैश्विक संस्था अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी देश भर में फैले अपने 200 से अधिक शाखाओं के माध्यम से व्यक्ति सुधार और समाज सुधार के कार्य निरंतर कर रही है। अणुविभा के नाम से लोकप्रिय संस्था संयुक्त राष्ट्र संघ के सिविल सोसायटी विभाग से सम्बद्ध है।

77वें अणुव्रत स्थापना दिवस के उपलक्ष में देशभर में लगभग 150 स्थानों पर कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। इसी कड़ी में अणुव्रत समिति,अजमेर तथा अणुव्रत मंच किशन गढ़ द्वारा विशेष कार्यक्रम की आयोजना की गई। सुन्दर बिलास स्थित तेरा पंथ भवन मे अणुव्रत स्थापना दिवस के अवसर पर विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमे अणुव्रत समिति तथा तेरापंथ सभा के पदाधिकारियों की सहभागिता रही।

परमार नागौर पहुंची

नागौर, (नि.सं.)। उदयपुर से पद्मजा कुमारी परमार शनिवार को राजकीय जिला अस्पताल नागौर के मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य कल्याण केंद्र में संचालित टाइप 1 डायबिटीज क्लिनिक पहुंची। उन्होंने यहां दी जा रही सेवाओं को देखा तथा बीमारी से ग्रसित लोगों के हाल जाने।

NAME CHANGE
I, Meena Singh Spouse of Army No.15339409H, HAV, Amareek Singh, R/o Lalapur, Nyamat Pur Labrha, Sitapur, U.P. 261201 have change my name Meena Devi to Meena Singh affidavit No. BW941960 at court campus Nasirabad

NAME CHANGE
I, Army No.15339409H, HAV, Amareek Singh, R/o Lalapur, Nyamat Pur Labrha, Sitapur, U.P. 261201 have change my Son's name Roonak Pratap Singh to Raunak Pratap Singh affidavit No BW941962 at court campus Nasirabad

NAME CHANGE
I, Yogendra Singh Father's of Army No.15339409H, HAV, Amareek Singh, R/o Lalapur, Nyamat Pur Labrha, Sitapur, U.P. 261201 have change my name Yuogendra Singh to Yogendra Singh affidavit No.BW941961 at court campus Nasirabad

आम सूचना
मैं प्रेमलता पत्नि मुन्नाराम निवासी सुभाष नगर, मकराना जिला डीडवाना कुचामन (राजस्थान), यह सार्वजनिक सूचना देती हूँ कि रजिस्टर्ड शाश्वत लीज डीड की प्राप्ति के दस्तावेज खो गए है। ये दस्तावेज निम्नलिखित है रजिस्टर्ड शाश्वत लीज डीड कस्बा मकराना के खसरा नम्बर 604 में पट्टा संख्या 376 पत्रावली संख्या 53 दिनांक 02.05.2002 को पट्टा धारक नानूराम जाट पुत्र श्री डालूराम जाट जाति जाट व्यवसाय मार्बल व्यापार निवासी सुभाष नगर, मकराना के नाम नगर पालिका वर्तमान नगर परिषद मकराना द्वारा जारी किया गया जिसका पंजीयन उप पंजीयक कार्यालय मकराना में दिनांक 06.07.2002 पुस्तक संख्या 1 जिल्द संख्या 50 पृष्ठ संख्या 152 क्रम संख्या 698/02 पर पंजीबद्ध किया गया अतिरिक्त पुस्तक संख्या 1 जिल्द सख्या 243 के पृष्ठ संख्या 33 से 41 पर चस्पा किया गया। ये दस्तावेज मेरे हकतर्कनामा से सम्बन्धित है और ये दिनांक 20.02.2025 को मकराना में खो गए। जिसकी ऑन लाईन FIR दिनांक 26.02.2025 LR NO: 2648954/2025 मेरे द्वारा दर्ज करवाई गई। अब मैं उपर्युक्त संपति को स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, किशनगढ़ (शाखा कोड - 06851) में गिरवी रखना चाहती हूँ।

डीडवाना में कानून व्यवस्था, दर्ज प्रकरणों व परिवादों की समीक्षा

डीडवाना, (नि.सं.)। अजमेर पुलिस रेंज के डी.आई.जी. ओमप्रकाश मेघवाल शनिवार को डीडवाना दौरे पर रहे। इस मौके पर उन्होंने डीडवाना के वृताधिकारी कार्यालय का निरीक्षण किया, जहां पुलिस के जवानों ने आईजी को गार्ड ऑफ ऑनर देकर सलामी दी। इसके बाद उन्होंने डीडवाना सर्किल क्षेत्र के पुलिस अधिकारियों की बैठक लेकर कानून व्यवस्था, दर्ज प्रकरणों व परिवादों की समीक्षा की। इस दौरान आईजी ने क्षेत्र के पुलिस अधिकारियों को कानून की पालना हर हाल में सुनिश्चित करने की हिदायत दी। उन्होंने कानून का उल्लंघन करने और अपराध कारित करने वालों पर सख्ती से कार्रवाई करने के निर्देश दिए।

इसके बाद डीआईजी ने एसपी कार्यालय में जिला सीएलजी सदस्यों ओर महिला सुरक्षा सखी सदस्यों की बैठक लेकर संवाद किया। इस बैठक में स्थानीय लोगों ने यातायात व्यवस्था सुधारने, बढती चोरियों पर अंकुश लगाने के लिए पुलिस गश्त बढ़ाने, फतेहपुरी गेट पर पुलिस चौकी खोलने, महिला सुरक्षा के लिए महिला कमांडो की नियुक्ति करने, खुलेआम बिकते नशीले पदार्थों पर रोक लगाने तथा बिजय नगर जैसी घटना रोकने के लिए सतर्कता बरतने की मांग की।

इस पर डीआईजी ओमप्रकाश ने मौके पर ही स्थानीय पुलिस अधिकारियों को यातायात व्यवस्था में सुधार और रात्रि गश्त बढ़ाने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि फतेहपुरी गेट पर पुलिस चौकी खोलने की प्रक्रिया जल्द ही शुरू कर दी जाएगी। डीआईजी ने महिला सुरक्षा के बारे में उन्होंने कहा कि महिला अपराधों को लेकर पुलिस बेहद गम्भीर है। अजमेर रेंज में पोक्सो एक्ट के 114 मामलों में शीघ्र जांच ओर ट्रायल कर अपराधियों को सजा दिलाई गई है, जिनमें से अधिकांश अपराधियों को आजीवन कारावास की सजा मिली है। डीडवाना जिला क्षेत्र में भी महिला अपराधों में 30 प्रतिशत की गिरावट दर्ज हुई है।

अजमेर पुलिस रेंज के आई.जी. ओमप्रकाश मेघवाल ने डीडवाना क्षेत्र के हालात जाने।

उन्होंने कहा कि हमने लोगों की सुनवाई के लिए ऑनलाइन सुनवाई की व्यवस्था की है, ताकि उनकी समस्या तुरंत सुनी जा सके। इसके अलावा प्रत्येक थाना स्तर पर भी सुनवाई ओर तुरंत एक्शन की हिदायत दी गई है। उन्होंने बढ़ते साइबर अपराधों पर चिंता जताते हुए लोगों को साइबर अपराध से बचने के सलाह देते हुए कहा कि ऐसे अपराधों पर जागरूकता से ही लगाम लगाई जा सकती है। आईजी ने कहा कि साइबर क्राइम से निपटने के लिए पुलिस को भी अपडेट किया जा रहा है। साथ ही सभी जिलों ओर थानों के अधिकारियों को साइबर क्राइम से निपटने का प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

अभिनंदन किया

नागौर, (नि.सं.)। प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र ताऊसर में पंचायत द्वारा इंटरलॉकिंग कार्य समापन एवं अन्य विकास कार्यो के संपन्न होने पर ग्राम पंचायत प्रशासक जानकी देवी, पंचायत समिति सदस्य एडवोकेट हंसराज पंवार व प्रतिनिधि मूलचंद पंवार का अभिवादन किया।

बैठक आयोजित

भीलवाड़ा, (नि.सं.)। श्रीनगर माहेश्वरी सभा भीलवाड़ा की पदाधिकारी बैठक महेश शिक्षा सदन में केदार गगरानी की अध्यक्षता में हुई। अध्यक्ष गगरानी ने बताया की बैठक मे महेश नवमीं महोत्सव 2025 के आयोजन की रूप रेखा पर विचार विमर्श, रक्तदान शिविर एवं नए कार्यक्रम फ्लैगशिप कार्यक्रम के अंतर्गत महिला आत्म रक्षा हेतु उड़ान कार्यक्रम एवं कवि सम्मेलन, महेश नवमी संयोजक एवं सह संयोजक के नाम पर चर्चा की गई।

LSG/BEAWAR/MUT/2024-25/121682 DATE:-20-02-2025 रीत इक - परित्याग
कार्यालय नगर परिषद, ब्यावर
क्रमांक/नगरीय विकास कर/2024-25/12375 दिनांक: 24-02-25
सार्वजनिक सूचना
श्रीमती इन्द्र देवी पत्नी श्री श्यामसुन्दर गहलोत निवासी ब्यावर ने क्षेत्र नं. 1 आदर्श नगर वूल प्रेस कॉलोनी अजमेर रोड प्लाट नं. 09 का भाग (पश्चिमी भाग) दुकान नं. 3-ए, 3-बी, 4 व 5 क्षेत्रफल 50.0 वर्गगज, जो कि नगर परिषद ब्यावर के नगरीय विकास कर रिकॉर्ड में श्री श्यामसुन्दर गहलोत पुत्र श्री माधुलाल गहलोत के नाम दर्ज है। रजि. हक-परित्याग दिनांक 12.02.2025 व स्वयं घोषणा शपथ पत्र प्रस्तुत कर नगरीय विकास कर अनुभाग (गृहकर) पंजिका में नाम अन्तरण के लिए आवेदन किया है। अतः इस नाम परिवर्तन के संबंध में किसी व्यक्ति या किसी संस्था को कोई आपत्ति हो तो मय प्रमाणित दस्तावेज सात दिवस में आपत्ति प्रस्तुत करें। बाद मियाद कोई भी आपत्ति विचारणीय नहीं होगी।
आयुक्त, नगर परिषद, ब्यावर

कार्यालय नगर परिषद किशनगढ (अजमेर) राजस्थान
क्रमांक: न.प.कि/कृषि भूमि नियमन/2025/765 दिनांक-28-2-25
आम सूचना
आवेदक मैसर्स माहेश्वरी मल्टीवेन्चरस प्राइवेट लिमिटेड जरिये निदेशक श्रीमती रेखा कांकाणी पत्नि श्री धर्मेन्द्र माहेश्वरी निवासी मदनगंज किशनगढ़ के द्वारा इस कार्यालय में नीचे उल्लेखित कृषि भूमि का पर्यटन निति के तहत (पर्यटन इकाई / होटल / मोटल / रिसोर्ट) गैर कृषिक प्रयोजनार्थ उपयोग परिवर्तन हेतु इसे भूमि के अपने अभिधृति अधिकारो के निर्वापन के लिए आवेदन किया है, अर्थात

क्रसं.	जिले का नाम व तहसील	राजस्व ग्राम का नाम एवं खसरा नं.	क्षेत्रफल/रकबा भूखण्ड संख्या	प्रस्तावित कृषि भूमि नियमन
1.	जिला अजमेर तहसील किशनगढ़	फरासिया 219/160	0.4692 हेक्टेयर	पर्यटन
		221/160	1.2459 हेक्टेयर	इकाई/होटल/मोटल
		कुल किता 2	1.7151 हेक्टेयर	/रिसोर्ट

इसलिए, इसके द्वारा समस्त संबंधित व्यक्तियो को सूचित किया जाता है कि यदि किसी व्यक्ति को राजस्थान भू-राजस्व अधिनियम 1956 की धारा 90-क और राजस्थान अभिधृति अधिनियम, 1955 की धारा 63 के अधीन पूर्वोक्त प्रयोजनों के लिए भूमि के उपयोग हेतु अनुज्ञान प्रदान करने और अ

सोलर प्लांट में लूट का आरोपी पकड़ा

जोधपुर, (कासं)। फलोदी में सोलर प्लांट लूट के मामले में फरार चल रहे एक आरोपी को पुलिस ने गिरफ्तार किया है। आरोपी पर दस हजार रुपए का इनाम भी घोषित किया हुआ था। फलोदी की जिला स्पेशल टीम और पुलिस थाना बाप की टीम ने संयुक्त कार्रवाई कर आरोपी को गिरफ्तार किया

■ **आरोपी पर दस हजार रुपए का इनाम घोषित था**

है। फलोदी एसपी पूजा अवाना ने बताया कि आरोपी रमजानपुरा निवासी मुस्ताक सोलर प्लांट लूट के मामले में फरार चल रहा था। पुलिस ने उसकी गिरफ्तारी के लिए दस हजार रुपए का इनाम घोषित किया था। शनिवार को जिला स्पेशल टीम को सूचना मिली कि मुस्ताक अपने घर आया हुआ है। एएसपी ब्रजराजसिंह चारण और सीओ फलोदी अचलसिंह के निर्देशन में टीम ने तत्काल कार्रवाई की। डीएसटी और थाना बाप पुलिस ने संयुक्त अभियान में आरोपी को उसके घर की घेराबंदी कर पकड़ लिया। आरोपी को थाना फलोदी के हवाले कर दिया गया है।

सिंघाना क्षेत्र में मौसम में आए बदलाव से हुई ओलावृष्टि, किसान उदास हुए

खेतड़ी, (निसं)। क्षेत्र में शनिवार सुबह मौसम में बदलाव के कारण ओलावृष्टि हो गई। बादलों के साथ काली घटाएं छा जाने व बादलों की गडगडाहट से किसानों के चेहरे पर उदासी छाई हुई है।

सरसों की पक्की हुई फसल में इस समय होने वाली ओलावृष्टि से काफी

■ **सरसों की पकी हुई फसल में हुआ नुकसान, दिवारों के पास लगे ओलों के ढेर**

नुकसान हुआ है। क्षेत्र में जगह-जगह फसलों की कटाई का दौर शुरू होने वाला था कि हल्की बूंदाबांदी के साथ अचानक सुबह चार बजे तेज़ हवा के साथ ओलों की बरसात हो गई। इस दौरान जमीन सफेद हो गई तथा मकानों की दिवारो के पास ओलों ढेर लग गए। करीब छह मीनट तक ओलों की बरसात होने लगी। किसान राधेश्याम जांगिड़ ने बताया कि इस समय होने वाली ओलों

हल्की बूंदाबांदी के साथ अचानक सुबह चार बजे तेज़ हवा के साथ ओलों की बरसात हुई।

की बरसात से सरसों की फसल में सबसे अधिक नुकसान हो सकता है। सरसों की फसल पूरी तरह से पक कर तैयार हो चुकी है और सरसों की कटाई का दौर भी शुरू हो रहा है। यदि बारिश के साथ मौसम और अधिक खराब हो जाने से फसल को ज्यादा नुकसान हो सकता है। फसल को मौसम खराब होने से याओलावृष्टिहोने से किसानों की उम्मीदों पर पानी फिर जाएगा। पूर्व कृषि अधिकारी ओमप्रकाश बलवदा ने बताया कि मौसम में अचानक आए बदलाव से गेहूं व चने की फसल को तो फायदा हो सकता है। अंतिम समय में गेहूं व चने की में नमी की आवश्यकता होती है, यदि इस समय बारिश होती है तो गेहूं व चने की फसल को तो फायदा होगा, लेकिन सरसो को इस बार होने वाली बारिश से नुकसान हो सकता है। यदि हल्की बारिश के बाद भी मौसम साफ रहता है तो भी फसल बची रह सकती है, लेकिन मौसम यदि ज्यादा खराब हुआ ओर जिस तरहओलावृष्टिहुई है उससे सरसों व जौ को सबसे अधिक नुकसान हुआ है। इस समय सरसों व जौ की फसल पूरी तरह से पक कर तैयार हो चुकी है तो किसान फसल की कटाई शुरू करने वाला है। क्षेत्र में शाम से ही बादलों की गड़गड़ाहट के साथ काली घटाएं छाई हुई है। मौसम में आए बदलाव से किसानों के सामने बड़ी चिंता बनी हुई ।

चूरू संवाददाता के अनुसार : अंचल में शुक्रवार शाम मौसम में बदलाव नजर आया। हल्की बूंदाबांदी के बाद ओलावृष्टि हुई। रात को तेज बारिश ने लोगों को सर्दी का अहसास करवाया। जिले में पिछले 24 घंटों में 28.2 एमएम बारिश दर्ज की गई। बारिश के बाद शहर के कई इलाके जलमग्न हो गये। ओलावृष्टि के कारण किसानों की फसलों को भी नुकसान हो गया। शहर में सुभाष चौक, ईदगाह मोहल्ला, लोहिया कॉलेज, भरतिया अस्पताल, नेचर पार्क, पंखा रोड़, रेलवे स्टेशन, सीटी पोस्ट ऑफिस व सैनिक बस्ती में निकासी के अभाव में पानी जमा हो गया। नया बस स्टैंड, चांदनी चौक, राम मंदिर के पास, रैगर बस्ती और जयपुर रोड़ आरओबी के नीचे भी यही स्थिति है। जलभराव के कारण वाहन चालकों और आमजन को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ा। वहीं निचले इलाकों के घरों में भी पानी घुस गया। मौसम विज्ञान केंद्र जयपुर के निदेशक राधेश्याम शर्मा के अनुसार पश्चिमी राजस्थान में एक प्रेरित कम दबाव का क्षेत्र बना हुआ है। बीकानेर, जोधपुर, जयपुर और भरतपुर संभाग में मेघ गर्जन के साथ हल्की बारिश की संभावना है। शेखावाटी क्षेत्र में भी ऐसी ही स्थिति रहेगी। मौसम विभाग ने बताया कि शनिवार को न्यूनतम तापमान 16.2 डिग्री दर्ज किया गया। बारिश के कारण रोजमर्रा के कार्यों और शादी-विवाह वालों को काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ा। मौसम विभाग के अनुसार आगामी दो मार्च से श्री अगले चार-पांच दिन तक मौसम शुष्क रहने की संभावना है।

सार-समाचार

अजमेर दरगाह मंदिर प्रकरणः कोर्ट में टली सुनवाई

अजमेर, (कासं)। विश्व विख्यात सूफी संत ख्वाजा साहब की दरगाह में हिंदू मंदिर के दावे को लेकर हिंदू सेना के राष्ट्रीय अध्यक्ष विष्णु गुप्ता द्वारा कोर्ट में लगाई गई याचिका पर शनिवार को सुनवाई टल गई। प्रकरण में अब अगली सुनवाई 19 अप्रैल को होगी। मालूम हो कि बिजयनगर ब्लैकमेल कांड के चलते अजमेर बंद को जिला बार एसोसिएशन ने भी समर्थन दिया था, जिसके चलते कोर्ट परिसर में कोई कार्य नहीं होने से सुनवाई टल गई। वादी के वकील योगेंद्र ओझा ने बताया कि हिंदू सेना के राष्ट्रीय अध्यक्ष विष्णु गुप्ता ने दरगाह में शिव मंदिर होने का दावा करते हुए सर्वे की मांग की थी, इस मामले में दरगाह कमेटी, अल्पसंख्यक विभाग और एएसआई को नोटिस जारी किए गए थे। 24 जनवरी को दोनों पक्षों ने अपना अपना पक्ष रखा था, दरगाह कमेटी और अल्पसंख्यक विभाग ने इस दावे को खारिज करने के लिए कोर्ट में प्रार्थना पत्र प्रस्तुति किया था। प्रकरण में 24 जनवरी को ही सुनवाई के दौरान दरगाह कमेटी ने कोर्ट से समय मांगा था। याचिका में दरगाह कमेटी ने कहा था कि वादी हिंदू सेना के राष्ट्रीय अध्यक्ष विष्णु गुप्ता ने जो याचिका कोर्ट में पेश की गई वह सुनवाई योग्य नहीं है। इस पर कोर्ट ने हिंदू सेना के राष्ट्रीय अध्यक्ष विष्णु गुप्ता से जवाब मांगा था, उन्होंने जवाब पेश किया। जिसके बाद दरगाह कमेटी ने समय मांगा। इसके बाद कोर्ट ने अगली सुनवाई के लिए 1 मार्च शनिवार की तारीख दी थी। याचिकाकर्ता हिंदू सेना के राष्ट्रीय अध्यक्ष विष्णु गुप्ता शनिवार को सुनवाई के दौरान अजमेर नहीं आए। उनके वकील अजमेर पहुंचे थे। विष्णु गुप्ता ने वीडियो के माध्यम से अपना बयान जारी कर उन्होंने कहा कि कोर्ट में सुनवाई होनी है। उम्मीद है कि दरगाह कमेटी की दायर याचिका खारिज होगी और सर्वे का आदेश होगा। लेकिन आज सुनवाई टल गई।

अब गली सुनवाई 19 को- बिजयनगर कांड को लेकर सकल हिंदू समाज द्वारा शनिवार को अजमेर बंद रखा गया। बंद को जिला बार एसोसिएशन ने भी समर्थन दिया था, जिसके चलते वकीलों द्वारा कोर्ट कार्य नहीं करने के कारण सुनवाई टल गई। कोर्ट ने सुनवाई की अगली तारीख 19 अप्रैल दी है।

चोरी की 4 मोटरसाईकिले बरामद

कोटपूतली। स्थानीय थाना पुलिस ने कार्यवाही करते हुये मोटरसाईकिल चोरी करने वाली गैंग का पर्दाफाश किया है। एसपी राजन दुष्यन्त द्वारा मोटरसाईकिल चोरी की वारदातों को गंभीरता से लेते हुये मोटरसाईकिल चोरी करने वालों के खिलाफ प्रभावी कार्यवाही करने तथा चोरी हुई मोटरसाईकिलों को बरामद करने हेतु दिये गये निर्देश पर एएसपी वैभव शर्मा के निर्देशन व डीएसपी राजेन्द्र कुमार बुरडक के सुपरविजन में थानाधिकारी राजेश कुमार शर्मा के नेतृत्व में विशेष टीम का गठन किया गया। टीम द्वारा कड़ी मेहनत व लगन से कार्य करते हुये आसूचना संकलन कर एवं कस्बे में व्यापारिक प्रतिष्ठानों पर लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज चौक कर मोटरसाईकिल चोरी करने वाली गैंग का पर्दाफाश करते हुये मुख्य अभियुक्त सचिन मीणा को गिरफ्तार कर लिया एवं एक बाल अपचारी को निरुद्ध कर उनके कब्जे से चोरीशुदा 04 मोटरसाईकिले बरामद की है। विगत 05 फरवरी को परिवादी राहुल तंवर ने कोटपूतली थाने पर रिपोर्ट दर्ज करवाई थी कि 28 जनवरी 2025 को पल्स अस्पताल कोटपूतली के पास से उसकी स्पलेण्डर प्लस मोटरसाईकिल नम्बर आर जे 32 एसएच 6415 को कोई अज्ञात चोर चुरा कर ले गये। जिस पर अभियोग संख्या 78ध्2025 धारा 303(2) बीएनएस में पंजीबद्ध कर माल मुल्जिमान की तलाश पतारसी प्रारम्भ की गई। इस दौरान कस्बे में लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेजों को खंगालकर एवं आसूचना संकलन कर मोटरसाईकिल चोरी करने वाली गैंग का पर्दाफाश कर अभियुक्त सचिन (19) पुत्र प्रकाश मीणा निवासी नांगल भावसिंह थाना बानसूर को गिरफ्तार किया गया एवं एक बाल अपचारी को निरुद्ध किया गया। जिनके कब्जे से प्रकरण हाजा का माल मशरुका स्पलेण्डर मोटरसाईकिल व 03 अन्य चोरी शुदा मोटरसाईकिलों को बरामद किया गया है। बरामद की गई मोटरसाईकिले तीन स्पलेण्डर प्लस व एक सीडी डीलक्स समेत कुल 04 मोटरसाईकिले है। अभियुक्त ने 07 वारदातें करना कबूल किया है। जिनमें 5-6 माह पूर्व कस्बा नारायणपुर से एक सीडी डीलक्स मोटरसाईकिल चोरी, दिसम्बर 2024 में तंवरों की ढ़ाणी ईलाका थाना बानसूर से एक स्पलेण्डर प्लस मोटरसाईकिल चोरी, जनवरी 2025 में ईलाका थाना बानसूर में रामनगर पॉवर हाउस से आगे एक स्पलेण्डर प्लस मोटरसाईकिल चोरी व राजकीय बीडीएम जिला अस्पताल कोटपूतली के गेट के पास से एक एक स्पलेण्डर प्लस मोटरसाईकिल चोरी, 28 जनवरी 2025 को पल्स अस्पताल कोटपूतली के पास से एक स्पलेण्डर प्लस मोटरसाईकिल चोरी, 21 फरवरी 2025 को गोरधनपुरा सीमेन्ट फैक्ट्री के गेट के पास स्थित चाय की दुकान के सामने से एक स्पलेण्डर प्लस मोटरसाईकिल चोरी, काफी समय पूर्व कस्बा कोटपूतली से एक स्पलेण्डर प्लस मोटरसाईकिल को चोरी करना कबूल किया है।

ग्राम भटियानी में वृद्ध महिला की हत्या

अजमेर/ नसीराबाद, (कासं)। शनिवार को सदर थाना क्षेत्र के ग्राम भटियानी में एक वृद्ध महिला की नृशंस हत्या कर दी गई जिससे गांव में सनसनी फैल गई। जानकारी के अनुसार प्रथम दृष्टिया यह मामला लूट का नजर आता है, क्योंकि महिला की हत्या करने के बाद उसके गले से सोने की कंठी कानों के टॉप्स बोर नथ पांव से चांदी की कडियां आदि ले गए। हत्या के वक्त मृतका महिला कमला पत्नी स्वर्गीय हरनाथ घर में अकेली थी तथा उसके दो पुत्र त्रिलोक और कैलाश काम पर गए हुए थे। मामले की सूचना मिलते ही नसीराबाद पुलिस उपाधीक्षक जरनैल सिंह, सदर थाना अधिकारी अशोक विशु, श्रीनगर थानाधिकारी जसवंत सिंह, नसीराबाद तहसीलदार ममता यादव सहित सदर थाना पुलिस की टीम मौके पर पहुंची तथा महिला के शव को पोस्टमार्टम के लिए एम्बुलेंस की सहायता से राजकीय सामान्य चिकित्सालय नसीराबाद के पोस्टमार्टम कक्ष में रखवाया गया। मामले की गंभीरता को देखते हुए एफएसएल टीम को सूचित किया गया जिसे मौके से साक्षी उठाने तथा एहतियात के तौर पर उसे संपूर्ण क्षेत्र को सील कर दिया गया जहां पर वृद्ध महिला की हत्या की गई। मामले की जानकारी अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक केकड़ी श्यौराज मल को मिलते ही वे भी मौके पर पहुंचे। अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक केकड़ी श्यौराज मल ने बताया की हत्या के मामलों की हर पहलू से जांच की जाएगी तथा मामले में शामिल लोगों को जल्द ही गिरफ्तार किया जाएगा। वही ग्राम भटियाणी के सरपंच कैलाश चंद तेला ने बताया कि यह कार्य फेरी लगाने वाले घुमंतू प्रजाति के लोगों का होगा जो इस फिराक में लगे रहते हैं, संभावित उन्हीं लोगों ने लूट के उद्देश्य से इस महिला की हत्या की है, वहीं दूसरी तरफ ग्रामीणों सहित परिवार जनों ने पुलिस प्रशासन से मांग की है कि जब तक हत्यारों को पकड़ नहीं जाएगा वे शव नहीं लेंगे और दाह संस्कार नहीं करेंगे।

सोलंकी की सड़क हादसे में मौत

हिंडौन सिटी । पूर्व जिला परिषद सदस्य व भाजपा के पूर्व जिला उपाध्यक्ष का बलवीर सिंह सोलंकी का गत दिवस देर रात सड़क दुर्घटना में मौत हो गई पूर्व जिला परिषद सदस्य एवं भाजपा के पूर्व जिला उपाध्यक्ष बलवीर सिंह सोलंकी मोटर साइकिल से गांव तिवरा की ओर जा रहा था। इसी दौरान सामने से आ रही एक स्कार्पियो ने उनकी मोटरसाइकिल में टक्कर मार दी घटना की सूचना पर पहुंची महू चौकी पुलिस ने दुर्घटनाग्रस्त बालवीर को शहर के जिला अस्पताल में पहुंचाया जहां चिकित्सकों ने जांच के बाद उसे मृत्यु घोषित कर दिया सूचना के बाद पहुंचे परिजन में कोहराम मच गया। पुलिस की आवश्यक कार्रवाई के बाद मृतक के सब का शनिवार सुबह पोस्टमार्टम कर सब परिजनों को सौंप दिया परिजनों के अनुसार जिनकी तीये की बैठक रविवार निज निवास-महू इब्राहिमपुर पर आयोजित होगी।

सी.एम. को दुपट्टा माला भेंट

भरतपुर (निस)। मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा के भरतपुर आगमन पर जिला कुश्ती संघ के महासचिव व भूरी सिंह व्यायामशाला के संचालक चुन्नी कप्तान, संयुक्त सचिव बाबू सिंह रेंजर, जगदीश बंजी, गोपी पहलवान, ब्रजेश शर्मा ने सर्किट हाउस में मुख्यमंत्री को राधे राधे का दुपट्टा माला व बुके देकर स्वागत किया व कप्तान ने 8-9 मार्च को यहां होने वाले लोहागढ केसरी दंगल में आने का निमंत्रण दिया। जिस पर मुख्यमंत्री ने विधानसभा में बजट अधिवेशन में व्यस्त रहने की वजह से आने में असमर्थता व्यक्त की व दंगल हेतु शुभकामनाएँ दीं।

धरना प्रदर्शन जारी

रूपवास । कस्बे के मेला मैदान के पास स्थित न्यायालय परिसर में अधिवक्ताओं द्वारा दिया जा रहा धरना 9 वें दिन भी जारी रहा। यह धरना संघर्ष समिति अध्यक्ष संतोष बंसल अधिवक्ता के नेतृत्व में अपनी मांगों को लेकर दिया जा रहा है। उपखंड मुख्यालय पर वर्ष 1993 से सिविल न्यायाधीश कनिष्ठ खंड व 1996 से अतिरिक्त सिविल कोर्ट संचालित चला आ रहा है।

महिला की अवैध हिरासत पर हाई कोर्ट नाराज

तारानगर एसडीएम व थानाधिकारी को किया तलब

तारानगर । जोधपुर के राजस्थान उच्च न्यायालय में पेश रिट नं. 1772/2025 में न्यायाधीश फरजंद अली की बेच ने चूरू जिले के तारानगर एसडीएम व थानाधिकारी को शांति भंग के आरोप में महिला की अवैध हिरासत को लेकर नाराजगी जताई व 3 मार्च 2025 को उच्च न्यायालय के समक्ष उपस्थित रहकर बताने बाबत कि एक महिला को अवैध रूप से हिरासत में लेने के लिए उनके खिलाफ उचित कार्रवाई क्यों नहीं की जाये और हिरासत में लिए गए व्यक्ति को पर्याप्त मुआवजा क्यों नहीं दिलाया जाने बाबत रिट पिटिशन आदेश की प्रति उच्च न्यायालय जोधपुर ने जिला कलेक्टर एवं पुलिस अधीक्षक, चूरू को ईमेल के माध्यम से अनुपालन हेतु तत्काल भेजे जाने व आदेश की एक प्रति मुख्य सचिव, राजस्थान सरकार और पुलिस महानिदेशक, जयपुर को भी ईमेल के माध्यम से आवश्यक कार्यवाही हेतु भेजे जाने का आदेश किया है। न्यायालय ने इस मामले को न्यायालय की अंतरात्मा को झकझोर कर देने वाला माना है याचिका की तरफ से रिट पेश कर पैरवी एडवोकेट रामावतारसिंह चैधरी द्वारा की गई। एडवोकेट पवन कुमार योगी ने बताया कि 26 फरवरी 2025 को तारानगर थानाधिकारी ने एक महिला को शांति भंग के आरोप में उपखण्ड मजिस्ट्रेट के समक्ष पेश किया जिस पर उपखण्ड मजिस्ट्रेट ने गैरसायला को इलाका के दो सचरित्र व्यक्तियों द्वारा 90-90 हजार रूपये के प्रत्येक के जमानत मुचलके व 90000 रूपये की राशि के निजी मुचलके पेश करने बाबत आदेश दिया था जिस बाबत महिला ने दो जिम्मेदार व्यक्तियों के जमानत मुचलके सशपथ पत्र चरित्र बाबत उनके खिलाफ किसी भी पुलिस थाना में प्रकरण विचाराधीन नहीं होने के पेश किये उसके बावजुद भी उपखण्ड मजिस्ट्रेट ने उक्त महिला को रिहा नहीं कर जानबुझकर न्यायिक हिरासत में भेज दिया जिससे आहत होकर महिला की पुत्री ने दिनांक 28 फरवरी 2025 को उच्च न्यायालय जोधपुर का दरवाजा खटखटाया है इस मामले को न्यायालय की अंतरात्मा को झकझोर कर देने वाला माना है।

27 लाख की हेरोइन सहित दो तस्कर गिरफ्तार

हनुमानगढ़ । जंक्शन थाना पुलिस ने शनिवार को डीएसटी के सहयोग से कार्रवाई करते हुए 68 ग्राम चिट्टा (हेरोइन) सहित दो तस्करों को गिरफ्तार किया है। जब्त हेरोइन की अंतरराष्ट्रीय बाजार में कीमत करीब 27 लाख रुपए बताई जा रही है। एसपी अरशद अली के निर्देश पर चलाए जा रहे अवैध नशे के खिलाफ जीरो टॉलरेंस अभियान के तहत इस कार्रवाई को अंजाम दिया गया है।

जंक्शन पुलिस थाना प्रभारी लक्ष्मण सिंह राठौड़ ने बताया कि शनिवार की सुबह थाना की एसआई चुकां के नेतृत्व में गठित टीम गश्त कर रही थी। गश्त के दौरान पुलिस टीम ने दो युवकों के कब्जे से 68 ग्राम हेरोइन बरामद की। मौके से धर्मप्रीत उर्फ प्रीत (22) पुत्र लखविन्द्र सिंह जटसिख निवासी बीरेवाला जटा तहसील सरदूलगढ़ पीएस जोड़कियां जिला मानसा पंजाब और निर्मल सिंह उर्फ नीमा (35) पुत्र शविन्द्र सिंह मजहबी निवासी वार्ड चार, गांव चक ज्वालासिंहवाला पीएस हनुमानगढ़ टाउन को गिरफ्तार किया। पुलिस मामले में आगे की कार्रवाई कर रही है। कार्रवाई करने वाली पुलिस टीम में एसआई चुकां, कॉन्स्टेबल कप्तान, ओमप्रकाश, सुभाष व देवेन्द्र शामिल रहे।

डाटा एंट्री ऑपरेटर का पति रिश्वत लेते गिरफ्तार

जैसलमेर एसीबी ने ट्रेप की कार्रवाई करते हुए डाटा एंट्री ऑपरेटर के पति को रिश्वत राशि के साथ पकड़ा।

जैसलमेर, (नि.सं.)। जैसलमेर एसीबी ने शनिवार को ट्रेप की कार्रवाई करते हुए खेतोलाई पीएचसी की डाटा एंट्री ऑपरेटर के पति को मात्र 17सौ रुपए की रिश्वत राशि के साथ पकड़ा। एसीबी अधिकारी ने बताया कि डाटा एंट्री ऑपरेटर शारदा ने एक आशा सहयोगिनी के टीए-डीए कि राशि को स्वीकृत करने के लिए रिश्वत कि मांग की थी।

जैसलमेर एसीबी एएसपी नरपतचंद के नेतृत्व में आशा सहयोगिनी की शिकायत के आधार पर रिश्वत मांगने की बात को तसदीक करते हुए शनिवार को ट्रेप की कार्रवाई की।

जैसलमेर एसीबी ने ओढ़ानीया गांव में डाटा एंट्री ऑपरेटर के पति कपिल विश्नोई को 17सौ रुपए की रिश्वत लेते रंगे हाथों गिरफ्तार किया है।

जिस डाटा एंट्री ऑपरेटर शारदा विश्नोई के लिए रिश्वत लेने की जानकारी मिली है वो एसीबी के हत्थे नहीं चढ़ी है। एसीबी शारदा की तलाश कर रही है।

चेक अनादरण पर एक साल की सजा

जोधपुर, (कासं)। विशिष्ट न्यायालय एनआई एक्ट संख्या 4 जोधपुर महानगर ने चेक अनादरण के मामले में आरोपी को दोषी ठहराते हुए कुल एक साल का कारावास और तीन लाख रुपए के जुर्माने से दंडित करने का आदेश पारित किया है। अधिवक्ता गोविन्द जोशी ने पहाड़गंज द्वितीय मंडोर रोड निवासी रावलराम निवासी की ओर से न्यायालय में परिवाद पेश किया कि रावलराम ने सोमानी कॉलेज के पास राजीव गांधी कॉलोनी निवासी खुमानाराम पुत्र जुगताराम को उसका रिश्तेदार होने से निजी जरूरतों हेतु दो लाख रुपए उधार दिए तथा बदले में दो लाख रुपए का एक चेक खुमानाराम ने अपनी बैंक का रावलराम को दिया। ये चेक उसकी बैंक से खाते में पर्याप्त राशि नही होने की वजह से अनादरित हो गया इसलिए रावलराम ने अपने अधिवक्ता गोविन्द जोशी के मार्फत कानूनी नोटिस भेजकर न्यायालय में खुमानाराम के विरुद्ध परिवाद पेश किया जिस पर न्यायालय ने प्रसंज्ञान लिया। अधिवक्ता गोविन्द जोशी ने बहस के दौरान अपने पक्ष में सर्वोच्च न्यायालय और अन्य न्यायालयों द्वारा पारित कई न्यायिक दृष्टांत प्रस्तुत किए जिससे संतुष्ट होकर पीठासीन अधिकारी रोहित कुमार ने आरोपी खुमानाराम को प्रकरण में धारा 138 एनआई एक्ट में दोषी ठहराते हुए तीन लाख का जुर्माना और एक वर्ष के कारावास से दंडित किया।

चेचेरी बहन से अश्लील हरकत

जोधपुर, (कासं)। कमिश्नरेट क्षेत्र में आठ साल की मासूम से उसके ताऊ के बेटे भाई ने अश्लील हरकतें की। पुलिस ने मामला दर्ज करते हुए बच्ची का मेडिकल करवाया।

मामला तीन चार दिन पहले का है और अब पुलिस में पॉक्सो का केस दर्ज करवाया गया है। बच्ची की मां की तरफ से यह मामला दर्ज कराया गया है। पुलिस ने इसमें अठिाम जांच आरंभ की है।

लूट के मामले में तीन वांछित आरोपी गिरफ्तार

कोटा, (निसं)। कुन्हाडी पुलिस टीम ने महिला से पर्स व मोबाईल लूट के मामले में वांछित चल रहे तीन आरोपियों को बापर्दा गिरफ्तार किया है। शहर पुलिस अधीक्षक डॉ.अमृता दुहन ने बताया कि 27 फरवरी को थाना कुन्हाडी मे अज्ञात मोटरसाईकिल सवार बदमाशों द्वारा पर्स व मोबाईल लूट का मामला आने के बाद आरोपियों की गिरफ्तारी के लिये पुलिस उपअधीक्षक गंगा सहाय शर्मा के सुपरविजन एवं कुन्हाड़ी थानाधिकारी अरविन्द भारद्वाज के नेतृत्व में टीम का गठन किया। शहर एसपी ने बताया कि गठित टीम ने घटनास्थल के आसपास लगे सीसीटीवी फुटैज खंगाले और फरियादी से पूछताछ पर हुलिये के आधार पर तकनीकी सहायता से मोटरसाईकिल सवार अज्ञात बदमाशों की तलाश शुरू की। पुलिस टीम ने कड़ी मेहनत के बाद कुन्हाड़ी पेट्रोल पम्प के पास से तीन जनो को डिटेन कर थाने लाकर पूछताछ के बाद बापर्दा गिरफ्तार किया। शहर एसपी ने बताया कि पकड़े गये शातिर आरोपियों से घटना में प्रयुक्त बाईक को भी बरामद कर लिया है एवं घटनास्थल की तस्दीक भी कराई जा चुकी है। शहर एसपी ने बताया कि पकड़े गये आरोपियों से लूटे गये सामन मोबाईल, व पर्स की बरामदगी करना एवं गिरफ्तार बापर्दा आरोपियों की कार्यवाही शिनाख्तगी करना शेष रह गया है मामले में अनुसंधान जारी है। यह था मामला-कुन्हाड़ी थानाधिकारी अरविन्द भारद्वाज ने बताया कि 27 फरवरी को फरियादी सलोनी मामनानी ने कुन्हाड़ी थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई थी। फरियादी ने रिपोर्ट में कहा था कि 18 फरवरी की रात्रि को खाना खाकर अपनी बेटी के साथ पैदल घुम रही थी कि मोटरसाईकिल पर तीन अज्ञात लड़के आये और घेरकर हाथ से पर्स व मोबाईल छीन लिया, पर्स में कुछ कागजात एवं 600 रूपये नगद थे। फरियादी ने रिपोर्ट में कहा कि जब उनका पीछा किया तो एक जने ने चाकू दिखाया और धमकी देकर मौके से भाग गये।

हादसे में घायल वनपाल की मौत

मुकुंदगढ़ । घोड़ीवारा बालाजी के पास सड़क दुर्घटना में घायल हुए घोडीवारा कलां निवासी हाल मुकुंदगढ़ संजीव कुमार पुत्र भागीरथ मल की जयपुर के एसएमएस अस्पताल में इलाज के दौरान शुक्रवार को मौत हो गई। मृतक वनपाल के पद पर घोडीवारा कलां नर्सरी में कार्यरत था। वह 20 फरवरी को घोड़ीवारा बालाजी मंदिर पर स्थित होटल के पास पिकअप ने संजीव कुमार की बाइक को पीछे से टक्कर मारीं।

'विपक्ष के पास मुद्दे नहीं होने पर महाकुंभ को हवा दी'

जोधपुर, (कासं)। केंद्रीय पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने राजस्थान विधानसभा में बने गतिरोध के मामले को लेकर निंदा करते हुए कहा कि जब जनता जनप्रतिनिधि को चुनकर के विधानसभा भेजती है तो जिम्मेदारी उसी रूप में निभानी चाहिए और सभी पक्ष,अपक्ष और विपक्ष को मिलकर अपनी जिम्मेदारी का निर्माण पूरी निष्ठा से करना चाहिए। वे आज जोधपुर प्रवास पर मीडिया से बातचीत कर रहे थे।

67 करोड़ लोगों द्वारा डुबकी लगाने के विषय पर शेखावत ने कहा कि 67 करोड़ लोगों द्वारा डुबकी लगाने के विषय पर बातचीत करते हुए कहा कि, एक भारत श्रेष्ठ भारत के तहत भारत का गौरव और गरिमा जिस रूप में आस्था और विश्वास के साथ कुंभ की बनी है उससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि आम जनता का विश्वास भारतीय संस्कृति और एकता में कितना है। उन्होंने कहा कि विपक्ष के पास जब मुद्दे नहीं होते हैं तब इस तरह के मुद्दों को हवा दी जाती है। जोधपुर में बनने वाली एलिवेटेड रोड को लेकर शेखावत ने कहा कि शीघ्र ही इस संबंध में शिलान्यास करवाया जाएगा तथा नाइट टूरिज्म विकसित करने के लिए राजस्थान सरकार के साथ मिलकर पूरे प्रयास किए जाएंगे,जिससे जोधपुर भी पर्यटन के लिहाज और अधिक कामयाबी हासिल करें। जोजरी नदी के मामले में उन्होंने कहा कि राजस्थान सरकार ने 176 करोड रुपए इस बार के बजट में स्वीकृत किए हैं मैं उनका धन्यवाद देता हूं। केंद्रीय संस्कृति और पर्यटन मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने अपने जोधपुर प्रवास के दौरान अपने निवास पर हमेशा की तरह जनसुनवाई की और जनसुनवाई में आने वाले दूर दराज क्षेत्र के लोगों की समस्याओं को सुना तथा कुछ मामलों में हाथों-हाथ अधिकारियों को निर्देश भी दिए। गजेंद्र सिंह शेखावत जयपुर से अजमेर होते हुए देर रात जोधपुर पहुंचे थे। केंद्रीय पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने राजस्थान विधानसभा में बने गतिरोध के मामले को लेकर उन्होंने निंदा करते हुए कहा कि जब जनता जनप्रतिनिधि को चुनकर के विधानसभा भेजती है तो जिम्मेदारी उसी रूप में निभानी चाहिए और सभी पक्ष,अपक्ष और विपक्ष को मिलकर अपनी जिम्मेदारी का निर्माण पूरी निष्ठा से करना चाहिए। वे आज जोधपुर प्रवास पर मीडिया से बातचीत कर रहे थे। 67 करोड़ लोगों द्वारा डुबकी लगाने के विषय पर शेखावत ने कहा कि 67 करोड़ लोगों द्वारा महाकुंभ में डुबकी लगाने के विषय पर बातचीत करते हुए कहा कि, एक भारत श्रेष्ठ भारत के तहत भारत का गौरव और गरिमा जिस रूप में आस्था और विश्वास के साथ कुंभ की बनी है उससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि आम जनता का विश्वास भारतीय संस्कृति में है।

पूर्व मंत्री की हालत में सुधार

अजमेर, (कासं)। राजस्थान के पूर्व चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री डॉ रघु शर्मा को सीने में तेज दर्द और पसीना आने की शिकायत पर जवाहरलाल नेहरू मेडिकल अस्पताल के कार्डियोलॉजी विभाग में शुक्रवार की देर रात भर्ती कराया गया। सूचन मिलने पर उनके जानपहचान वाले पूर्व मंत्री की कुशलक्षेम लेने अस्पताल में आए।

अस्पताल के प्राचार्य डॉ अनिल सामरिया अस्पताल अधीक्षक डॉ अरविंद खरे कार्डियोलॉजी विभाग के प्रभारी डॉ राकेश महला एवं डॉ आशीष अग्रवाल सहित चिकित्सकों की टीम देखभाल कर रही है। कार्डियोलॉजी विभाग में आज प्रातः डॉ रघु शर्मा की एंजियोग्राफी कर एक स्टंट लगाया और 48 घंटे आराम करने की सलाह दी है डॉ रघु शर्मा को गहन चिकित्सा यूनिट में शिफ्ट किया गया है। अब उनकी हालत में सुधार बताया जा रहा है।

डॉ रघु शर्मा की कुशल से पूछने के लिए बड़ी संख्या में कांग्रेसी नेता एवं कार्यकर्ता अस्पताल पहुंच रहे हैं। राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी के प्रदेश उपाध्यक्ष एवं पूर्व विधायक डॉ राजकुमार जयपाल महासचिव एवं पूर्व विधायक महेंद्र सिंह गुर्जर सदस्य महेंद्र सिंह रलावता अजमेर शहर जिला कांग्रेस कमेटी के निवर्तमान महासचिव शिवकुमार बंसल शक्ति प्रताप सिंह राठौड़ देशराज मेहरा राजेंद्र वर्मा आदि ने अस्पताल पहुंचकर कुशल से पूछी एवं शीघ्र स्वस्थ होने की कामना की।

झुंझुनूं में गदर मचाने वाले चोर गिरोह को पुलिस ने दबोचा

पुलिस ने चोर गिरोह के तीन जनों को पकड़ा ।

झुंझुनूं, (निस) । जिले में सिलसिलेवार चोरियों की वारदात कर पुलिस की नाक में दम करने वाले और गदर मचाने वाले चोर गिरोह के तीन सदस्यों को पुलिस ने धर दबोचा है। गिरफ्तार किए गए तीनों चोरों ने झुंझुनूं जिले के आठ कस्बों-गांवों में एक दर्जन से अधिक चोरियों की वारदातें करना कबूल किया है। जानकारी के अनुसार झुंझुनूं जिले के मंड़ेला कस्बे में एक ही रात में चोरों ने तीन दुकानों के ताले तोड़कर वारदात को अंजाम

■ **झुंझनूं जिले में सिलसिलेवार चोरियों की वारदातों को अंजाम दिया था**

दिया था। जिसके बाद पुलिस ने इसे चुनौती के रूप में लिया। पुलिस सीसीटीवी कैमरों के आधार पर चोरों के पीछे पीछे सीकर तक पहुंच गई। इस दौरान 150 से अधिक सीसीटीवी कैमरों के फुटेज चैक करने के अलावा 100 से अधिक लोगों से पूछताछ की गई। जिसके बाद सीकर बस डिपो के पास स्थित झुग्गी में दबिश दी गई। जहां से पुलिस ने 18 वर्षीय सुखवाल उर्फ लक्की पुत्र प्रकाश सिंगीवाल कानबेलिया, 21 साल के दीपक पुत्र रमेश फूल माली गुजराती तथा 25 साल के करण उर्फ कोयल पुत्र पिंटूरा

ओलावृष्टि से फसल खराबे की शीघ्र गिरदावरी करवाने के दिए निर्देश

भरतपुर/जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने शनिवार को भरतपुर के जिला कलक्ट्रेट सभागार में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए विभिन्न जिला कलक्टरों से ओलावृष्टि पर वार्ता की। उन्होंने जिला कलक्टर्स से विगत दिनों

- **मुख्यमंत्री ने प्रभावित जिलों की स्थिति की कलेक्टर्स के साथ की समीक्षा, मांगी रिपोर्ट**

कुछ जिलों में हुई ओलावृष्टि एवं इससे हुए नुकसान की विस्तृत जानकारी ली।

शर्मा ने राजस्व विभाग के प्रमुख शासन सचिव को निर्देश दिए कि ओलावृष्टि से प्रभावित जिलों में फसल खराबे का आकलन करने के लिए शीघ्र गिरदावरी करवाई जाए। मुख्यमंत्री ने सीकर, चूरू, बीकानेर, झुंझुनूं, एवं खैरथल-तिजारा के जिला कलक्टर को निर्देशित किया कि गिरदावरी करवाकर रिपोर्ट शीघ्र भेजें।

उन्होंने 7डी रिपोर्ट को भी 5 मार्च तक प्रस्तुत करने के निर्देश दिए,जिससे प्रभावित किसानों को एसडीआरएफ और एनडीआरएफ के फंड से तुरंत मुआवजा दिया जा सके।

इस दौरान अतिरिक्त मुख्य सचिव जल संसाधन अभय कुमार, अतिरिक्त मुख्य सचिव (मुख्यमंत्री कार्यालय) शिखर अग्रवाल, अतिरिक्त मुख्य सचिव सार्वजनिक निर्माण प्रवीण गुप्ता सहित वरिष्ठ अधिकारी मौजूद रहे। साथ ही, अतिरिक्त मुख्य सचिव आपदा प्रबंधन, सहायता एवं नागरिक सुरक्षा आनंद कुमार, बीकानेर संभागीय आयुक्त डॉ. रवि कुमार सुरपुर, जयपुर संभागीय आयुक्त पूनम भीवीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से बैठक से जुड़े।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने शनिवार को भरतपुर के जिला कलेक्ट्रेट सभागार में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए विभिन्न जिला कलेक्टरों से ओलावृष्टि पर वार्ता की।

स्मैक की सप्लाई करने वाला पकड़ा

जयपुर। पुलिस कमिश्नरेट की ओर से चलाए जा रहे ऑपरेशन क्लीन स्वीप के तहत भट्टा बस्ती थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए अवैध मादक पदार्थ स्मैक की सप्लाई करने वाले तोफिक उर्फ मामा को गिरफ्तार कर उसके पास से 22.10 ग्राम अवैध मादक पदार्थ स्मैक जब्त की है। फिलहाल आरोपी से पूछताछ की जा रही है। पुलिस उपायुक्त जयपुर उत्तर राशि डोगरा डूडी ने बताया कि ऑपरेशन क्लीन स्वीप के तहत भट्टा बस्ती थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए अवैध मादक पदार्थ स्मैक की सप्लाई करने वाले तोफिक उर्फ मामा निवासी पुन्हा जिला नूह (हरियाणा) हाल भट्टा बस्ती जयपुर को गिरफ्तार किया है। जिसके पास से पुलिस ने 22.10 ग्राम अवैध मादक पदार्थ स्मैक बरामद की है। पुलिस आरोपित से अवैध मादक पदार्थ की खरीद-फरोख्त के बारे में पूछताछ कर रही है।

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ शनिवार को चौमूं के जयसिंहपुरा पहुंचकर स्व.रोशन यादव के परिजनों को सांत्वना प्रदान की। रोशन यादव की असामयिक निधन पर उनके निवास स्थान पर शोकसभा में पहुंचे। राठौड़ ने पुण्य आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की। मदन राठौड़ के सहयोगी प्रभुदयाल यादव के ममेरे भाई रोशन यादव का सड़क दुर्घटना निधन हो गया था।

फुलेरा दूज पर यादव समाज के 65 जोड़े बने एक-दूजे के हमसफर

फुलेरा दूज के अवसर पर शनिवार को रामसिंह पुरा, सांगानेर जयपुर में यादव समाज का 12वा सामूहिक विवाह सम्मेलन आयोजित हुआ। हेरिटेज निगम महापौर कुसुम यादव सहित अन्य अतिथियों ने वर-वधु को आशीर्वाद दिया।

जयपुर। फुलेरा दूज के अवसर पर शनिवार को रामसिंह पुरा, सांगानेर जयपुर में यादव समाज का 12वा सामूहिक विवाह सम्मेलन आयोजित हुआ। विवाह सम्मेलन के मीडिया प्रभारी एवं खेल बोर्ड के पूर्व सदस्य हरीश यादव ने बताया कि विवाह सम्मेलन सम्मेलन में 65 जोड़े वर वधु दांपत्य जीवन में जीवनसाथी बने।

कार्यक्रम में राजस्थान यादव महासभा के प्रदेश अध्यक्ष पूर्व सांसद डॉक्टर करण सिंह यादव, कैबिनेट मंत्री कर्नल राज्यवर्धन सिंह राठौड़, यादव समाज के कार्यकारी अध्यक्ष महेंद्र यादव, कार्यकारी अध्यक्ष हरसहाय यादव, पूर्व मंत्री लालचंद कटारिया, पूर्व मंत्री राजेंद्र यादव, जयपुर सांसद मंजू शर्मा, विधायक मनीष यादव, विधायक बालमुकुंद आचार्य, विधायक कैलाश वर्मा, हेरिटेज निगम महापौर कुसुम यादव, जिला प्रमुख रमा चोपड़ा, यादव युवा महासभा के अध्यक्ष मदन यादव, जिला अध्यक्ष सरदार सिंह यादव, श्री कृष्णा सामाजिक उत्थान संस्था के अध्यक्ष लालचंद यादव, सम्मेलन के कार्यकारी अध्यक्ष गणेश गंडवाल, कैलाश गोठवाल, गंगाराम, गणेश चितौसिया, ओमप्रकाश चितौसिया आदि लोग मौजूद रहे। कार्यक्रम में संपूर्ण भोजन की व्यवस्था भामाशाह हीरालाल शिवनारायण भंगार द्वारा की गई।

हेरिटेज निगम महापौर कुसुम यादव ने वर वधू को भविष्य के लिए आशीर्वाद देते हुए कहा कि विवाह दो आत्माओं का मिलन है। विवाह के बाद केवल वर वधु ही नहीं अपितु दो परिवार भी एक होते है। अपने जीवनसाथी के लिए हमेशा समर्पण भाव रखना चाहिए।

इस अवसर पर संस्था के महामंत्री गणपत यादव पूर्व पार्षद अजय यादव कज़ोड़ यादव भामाशाह रामनिवास यादव भामाशाह शंकर यादव महिला कार्यकर्ता कोमल यादव मधु यादव शारदा यादव रितु यादव एडवोकेट लालचंद यादव प्रभु यादव सहित समाज के लगभग 20 हजार नागरिक विवाह सम्मेलन में मौजूद रहे।

पिता-बेटे से लूट की वारदात को अंजाम देने वाले गिरफ्तार

जयपुर। बिंदायका थाना पुलिस ने फिल्मी स्टाइल में पिता-बेटे से लूट की वारदात को अंजाम देने वालों को गिरफ्तार किया है। पुलिस जांच में सामने आया है कि बदमाशों ने पहले चाकू की नोक पर पिता से ऑनलाइन रुपए ट्रांसफर करवाए। फिर बेटे को कॉल कर पिता का एक्सीडेंट होना बताकर रुपए ऐंठ लिए। पुलिस ने सीसीटीवी फुटेज के आधार पर दोनों बदमाशों को दबिश देकर गिरफ्तारकर लिया है। पुलिस ने आरोपियों के कब्जे से वारदात में प्रयोग बाइक भी बरामद की है। फिलहाल आरोपियों से पूछताछ की जा रही है।

पुलिस उपायुक्त जयपुर पश्चिम अमित कुमार बुडानिया ने बताया कि बिंदायका थाना पुलिस ने बाइक सवार दो बदमाशों ने फिल्मी स्टाइल में पिता-बेटे से लूट की वारदात को अंजाम देने वाले आरोपी सोनू अंसारी (19) निवासी बरेली उत्तर प्रदेश हाल मंगल विहार कॉलोनी मालपुरा गेट व उसके साथी को बापर्दा गिरफ्तार किया गया है। पुलिस ने सीसीटीवी फुटेज के आधार पर दोनों बदमाशों को चिह्नित कर दबिश देकर पकड़ा है। इनके कब्जे से लूट में यूज बाइक बरामद की गई है। पुलिस पूछताछ में कई अन्य वारदातों के खुलासे की संभावना जताई गई है।

बिंदायका के रहने वाले नरपत बोहरा ने रिपोर्ट दर्ज करवाई थी कि उसके पिताजी दिहाड़ी मजदूरी करते हैं। 26 जनवरी को सुबह करीब 8.30 बजे वह घर से मजदूरी करने के लिए निकले थे। दोपहर करीब 12.30 बजे उसके पास पिता के मोबाइल नंबर से कॉल आया।

कॉल करने वाले ने बताया कि तुम्हारे पिताजी के साथ मजदूरी करता हूं। तुम्हारे पिताजी 5वीं मंजिल से नीचे गिर गए है, जिनको तुरंत एसएमएस हॉस्पिटल लेकर जाने की कहकर एमआरआई और एम्बुलेंस के लिए 5 हजार रुपए मांगे। बताए गए मोबाइल नंबर पर 5 हजार रुपए ऑनलाइन ट्रांसफर कर दिए। पिता को देखने के लिए हॉस्पिटल के लिए निकलने पर हाथोज मोड़ पहुंचा। वहां पिता खड़े हुए मिलने पर बातचीत की। पिता ने बताया कि सिवार मोड पर मजदूरी के लिए खड़ा होने के दौरान बाइक पर एक लड़का आया। साथ में मजदूरी करने की कहकर अपने साथ ले गया। हाथोज मोड़ से पहले रोककर चाकू दिखाकर जबरन मोबाइल छीन लिया। मोबाइल से ऑनलाइन 5 हजार रुपए ट्रांसफर कर लूट लिए। उसके बाद मोबाइल व बाइक लेकर फरार हो गया।

बिंदायका थाना पुलिस ने फिल्मी स्टाइल में पिता-बेटे से लूट की वारदात को अंजाम देने वाले दो बदमाशों को गिरफ्तारकिया है।

सूरत अग्नि विभीषिका में नुकसान की भरपाई के लिये मुआवजा देने का आग्रह

जयपुर। भाजपा हरियाणा संगठन प्रभारी, भाजपा राजस्थान पूर्व प्रदेश अध्यक्ष डॉ. सतीश पूनिया ने गुजरात के मुख्यमंत्री भूपेंद्र भाई पटेल को पत्र लिखकर सूरत अग्नि विभीषिका में राजस्थानी व्यापारियों के नुकसान की भरपाई हेतु मुआवजा या आर्थिक पैकेज देने का आग्रह किया है।

सतीश पूनिया ने भूपेंद्र भाई पटेल को पत्र में लिखा कि, गुजरात प्रदेश के सूरत शहर में स्थित शिवशक्ति टैक्सटाईल मार्केट में 26 फरवरी को आग लगने की घटना घटित हुई जिसने विकराल रूप धारण कर लिया। उक्त अग्नि विभीषिका से छोटे एवं मध्यम व्यापारियों की लगभग 200 से 300 दुकानें पूर्णतया जलकर नष्ट हो गई, जिनमें अधिकांश दुकानें राजस्थान प्रदेश के व्यापारियों की हैं। इस अग्निकांड ने व्यापारियों सहित मार्केट में काम करने वाले अनेक मजदूरों के समक्ष आर्थिक संकट खड़ा कर दिया है।

पूनिया ने आग्रह किया कि उक्त अग्नि विभीषिका से प्रभावित व्यापारियों एवं मजदूरों को नियमानुसार उचित मुआवजा या आर्थिक पैकेज की घोषणा करवाएं ताकि प्रभावित व्यापारियों और मजदूरों को शीघ्राताशीघ्र राहत मिल सके।

उल्लेखनीय है कि सतीश पूनियां ने 26 फरवरी को ट्वीट के माध्यम से गुजरात के मुख्यमंत्री भूपेंद्र भाई पटेल को अग्नि विभीषिका से प्रभावित राजस्थानी व्यापारियों को आर्थिक पैकेज देने का आग्रह किया था।

स्पा सेंटर से तीन पुरुष और दो महिला गिरफ्तार

जयपुर। प्रताप नगर थाना पुलिस ने भी अवैध रूप से संचालित वेलकम थाई स्पा सेंटर और रॉयल ग्रीन स्पा सेंटर में कार्रवाई करते हुए तीन पुरुष और दो महिलाओं को शांतिभंग में गिरफ्तार किया है। पुलिस उपायुक्त जयपुर पूर्व तेजस्वनी गौतम ने बताया कि प्रताप नगर थाना पुलिस ने भी अवैध रूप से संचालित वेलकम थाई स्पा सेंटर और रॉयल ग्रीन स्पा सेंटर में कार्रवाई करते हुए विक्की शर्मा,शुभंकर विश्वास,अजहरुद्दीन शेख, संगीता यादव और ज्योति प्रजापत को शांति भंग में गिरफ्तार किया है।

सी.एम.को धमकी मामले में चार आरोपित प्रोडक्शन वारंट पर गिरफ्तार

जयपुर। विधायकपुरी थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए राजस्थान मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा को मारने की धमकी भरे कॉल मामले में चारों आरोपियों को प्रोडक्शन वारंट पर गिरफ्तार किया है। जानकारी के अनुसार मुख्यमंत्री को धमकी देने के मामले में पकड़े चारों आरोपी दौसा जेल में बंद थे। पुलिस ने शनिवार दोपहर कोर्ट में पेश कर चारों आरोपियों को दो दिन के रिमांड पर लिया है। थानाधिकारी बनवारी लाल मीना ने बताया कि दौसा जेल से प्रोडक्शन वारंट पर आरोपी रिंकू उर्फ रण्डवा पुत्र पप्पूराम निवासी हरसौरा अलवर, शहजाद खान उर्फ साजिद पुत्र सलीम खान निवासी उन्नाव उत्तर प्रदेश हाल संजय नगर-ई झोटवाड़ा, जयनारायण पुत्र हरसहाय मीणा निवासी सदर दौसा और राकेश जोशी पुत्र दुर्गाप्रसाद जोशी निवासी सदर दौसा को गिरफ्तार किया गया है। दौसा जेल में रिंकू उर्फ रंडवा और शहजाद खान उर्फ साजिद दोनों ही पोक्सो के मामले में बंद है। जानकारी के अनुसार सात दिन पहले श्यालावास दौसा स्थित सेंट्रल जेल में बंदी रिंकू उर्फ रण्डवा ने जयपुर पुलिस कंट्रोल रूम को कॉल कर सीएम शर्मा को मारने की धमकी दी थी।

फायरिंग कराने वाले चार आरोपी गिरफ्तार

बगरू थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए 22 फरवरी को प्रेम प्रसंग में बाधा बन रहे पिता पर फायरिंग करवाने वाला पुत्र व उसकी प्रेमिका सहित चार आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है।

- **प्रेम प्रसंग में बाधा बन रहे पिता पर फायरिंग कराने का मामला**

जयपुर। बगरू थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए 22 फरवरी को प्रेम प्रसंग में बाधा बन रहे पिता पर फायरिंग करवाने वाला पुत्र व उसकी प्रेमिका सहित चार आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है। साथ ही पुलिस ने गिरफ्तार आरोपियों के कब्जे से वारदात में प्रयुक्त हथियार एक देशी कट्टा, 4 जिन्दा कारतूस, 1 खाली केस व वाहन कार स्विफ्ट कार भी बरामद की है। फिलहाल आरोपियों से पूछताछ की जा रही है।

पुलिस उपायुक्त जयपुर (पश्चिम) अमित कुमार ने बताया कि गरू थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए 22 फरवरी को प्रेम प्रसंग में बाधा बन रहे पिता पर फायरिंग करवाने वाले पुत्र जितेन्द्र उर्फ जीतू निवासी फागी जिला जयपुर हाल दहमी कलां बगरू,उसकी प्रेमिका सुमित्रा चौधरी निवासी दुदु जिला जयपुर हाल बगरु जयपुर,रिंकू चौधरी निवासी सांगानेर सदर जयपुर और बलवंत सिंह निवासी कोटखावदा हाल मुहाना जयपुर को गिरफ्तार किया है। जांच में सामने आया है कि गिरफ्तार आरोपित जितेन्द्र चौधरी व उसकी प्रेमिका सुमित्रा चौधरी पिछले करीब 2 वर्षों एक साथ अपने घर से दूर जयपुर में निवास कर रहे है। आरोपी जितेन्द्र चौधरी उर्फ जीतू पूर्व से शादीशुदा है जिसके दो संतान है। आरोपी जितेन्द्र चौधरी के पिता परिवादी हनुमान चौधरी और आरोपी जितेन्द्र चौधरी उर्फ जीतू को अपने घर ले जाना चाहते थे। परन्तु जितेन्द्र चौधरी उर्फ जितु अपनी प्रेमिका के साथ रहना चाहता है तथा नशे का आदि है। परिवादी के दबाव के कारण आरोपी जितेन्द्र चौधरी व उसकी प्रेमिका ने परिवादी को जान से मारने की नियत से अन्य आरोपित रिंकू सिंह व बलवंत के साथ मिलकर आपराधिक षड्यंत्र रचकर सुनियोजित योजना के बाइस फरवरी की शाम को आरोपित रिंकू सिंह व बलवन्त ने ग्राम टिल्यावास के पास परिवादी हनुमान चौधरी पर जान से मारने की नियत से देशी कट्टा से फायरिंग कर दिया ।परन्तु निशाना चूक जाने के कारण गोली परिवादी को नहीं लगी।

राजेश रेड्डी की दिलकश शायरी ने जबर्दस्त समाँ बांधा

जयपुर। विकल्प नाट्य संगठन के स्वर्ण जयंती उत्सव के अवसर पर जवाहर कला केन्द्र के रंगायन सभागार में शनिवार को देश के ख्यातनाम शायर राजेश रेड्डी ने जीवन से जुड़ी अपनी शानदार और दिल की गहराई तक पहुँचने वाली दिलकश शायरी से सुनने वालों को मंत्र-मुग्ध कर दिया। उनकी तमाम गज़लों को श्रोताओं ने तल्लीनता से सुना और बार बार करतल ध्वनि कर दाद दी। श्रोताओं ने उनकी गज़लों को अपने दिल के करीब पाया।

जब उन्होने ये शेर सुनाया कि "शाम को जिस वक़्त ख़ाली हाथ घर जाता हूँ मैं,मुस्कुरा देते हैं बच्चे और मर जाता हूँ मैं" तो श्रोता वाह वाह कर उठे । रेड्डी की शायरी इंसानियत और लोगों की ज़िंदगी की हकीकत से वाबस्ता रही और उसके तार लोगों के दिलों से जुडते चले गए। आज के बच्चों के मनोभावों का इजहार उन्होने अपनी शायरी के इन लफ्जों में बयान किया- "मिरे दिल के किसी कोने में इक मासूम सा बच्चा, बड़ों की देख कर दुनिया बड़ा होने से डरता है।"

अभिव्यक्ति की आज़ादी पर भी रेड्डी ने एक मौजू शेर सुनाया, "सर क़लम होंगे कल यहाँ उन के, जिन के मुँह में ज़बान बाक़ी है।" गजल के एक और शेर - पहले इक आसमान पैदा कर फ़िर परों में उड़ान पैदा कर, अपनी आँखों से ज़िन्दगी को पढ़ अपने अनुभव से ज्ञान पैदा कर" पेश करके इंसान को ताकतवर बनने और अपने अंदर काबिलियत हासिल करने का जज्बा पैदा किया।

जिंदगी के सुख-दुख का फलसफा बयान करते हुए उनके इस शेर को भी लोगों से जबर्दस्त दाद मिली "जैसे ग़लत पते पे चला आए कोई शख़्स,सुख ऐसे मेरे दर पे रुका और गुज़र गया।" इसी तरह उन्होने अपने एक शेर से अन्नदाता और मेहनतकश किसान की जिंदगी का बयान किया और खूब तालियाँ बटोरी। शेर था "मिलती हैं कितनी रोटियाँ मेहनत की धूप में, पूछे कोई ये खेत में जा कर किसान से।" आज की सियासत पर नेताओं के लच्छेदार और अवाम को भरमाने वाली तकरीरों पर तंज़ करता हुआ यह मौजू शेर सुनाया "लफ़्ज़ों के हेर-फेर से बाज़ी पलट गई, हर शख़्स आ गया है सियासत की चाल में।" लगभग एक घंटे की शायरी में उन्होने करिश्माई समाँ बांधे रखा।

राजेश रेड्डी ने अपनी शाइरी का एक मौज़ूं इंसानियत को बनाया और इंसानियत को उन्होंने मज़हब की मीनारों से भी ऊपर माना : उनका प्रभावशाली शेर था -गीता हूँ कुरआन हूँ मैं मुझको पढ़ इन्सान हूँ मैं,मैं इन्साँ था, इन्साँ हूँ, इन्साँ रहूँगा जो करना हो हिन्दू-मुसलमान कर लें। बेच डाला हमने कल अपना ज़मीर,ज़िन्दगी का आख़िरी ज़ेवर गया सोना था फ़क़त- लोग जो बाज़ार से ले आएबेच आए जो बाज़ार में ज़ेवर तो वही था।"

ज्ञानचंद मोदी फाउंडेशन के ट्रस्टी राहुल मोदी ने विकल्प के संरक्षक मुकुन्द देव अग्रवाल को विकल्प रत्न, अध्यक्ष मोहनलाल गोयल को विकल्प विभूषण, संस्थापक सदस्य राजेश रेड्डी और हरिनारायण को विकल्प भूषण तथा रंगकर्म और लेखन से जुड़े एस.एन.पुरोहित, फारूक आफ़रीदी, प्रेमचंद गांधी और सुशील गुप्ता को कलम के योद्धा सम्मान से नवाजा गया।

- **संगीतकार पद्मश्री अली-गनी ने मांड के सुमधुर रंग बिखेरे**
- **अंधेर नगरी रिटर्न्स नाटक की भी हुई शानदार प्रस्तुति**

इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि मांड गायक और प्रसिद्ध संगीतकार पद्मश्री अली गनी ने मांड राग में "बालम आओ नी पधारो म्हारे देस" सुनाकर अपनी मधुर स्वर लहरियों से सभी को मरुधरा की समृद्ध संस्कृति और विरासत से रूबरू कराया।

इससे पूर्व अनिल मारवाड़ी के निर्देशन मे विकल्प के कलाकारों ने जल, पर्यावरण संरक्षण तथा बढ़ते राजनैतिक भ्रष्टाचार पर तंज़ करने वाला नाटक "अंधेर नगरी रिटर्न्स " प्रस्तुत किया जो बहुत प्रभावी रहा ।

मुख्य अतिथि हरिदेव जोशी पत्रकारिता और जनसंचार विश्व विद्यालय की कुलपति डॉ.सुधि राजीव ने कहा कि समाज में स्वस्थ मनोरंजन और सांस्कृतिक अभिरुचि जाग्रत करने में रंगकर्मियों की अहम भूमिका है। नाटक हमारे समाज का आईना प्रस्तुत करते हैं। सामाजिक विसंगतियों, बुराइयों और भ्रष्टाचार को समाप्त करने में राष्ट्रीय जन मंच (इप्टा) के हमारे सांस्कृतिक पुरोधाओं ने यह कार्य बखूबी किया है और इसे जारी रखना हमारी ज़िम्मेदारी है। फिल्म संगीतकार और सुप्रसिद्ध माँड गायक पद्मश्री उस्ताद अली गनी विशिष्ट अतिथि थे। प्रारम्भ मे अध्यक्ष मोहनलाल गोयल और संयोजक फारूक आफरीदी ने सभी अतिथियों का स्वागत किया एवं महासचिव ने विकल्प की 50 बरस की यात्रा की रिपोर्ट प्रस्तुत की।

उत्सव के दौरान विकल्प की पचास वर्ष की रंगयात्रा पर फारूक आफरीदी द्वारा संपादित समरिका का लोकार्पण किया गया। मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि और ज्ञानचंद मोदी फाउंडेशन के ट्रस्टी राहुल मोदी ने विकल्प के संरक्षक मुकुन्द देव अग्रवाल को विकल्प रत्न,अध्यक्ष मोहनलाल गोयल को विकल्प विभूषण, संस्थापक सदस्य राजेश रेड्डी और हरिनारायण को विकल्प भूषण तथा रंगकर्म और लेखन से जुड़े एस.एन.पुरोहित, फारूक आफ़रीदी, प्रेमचंद गांधी और सुशील गुप्ता को कलम के योद्धा सम्मान से नवाजा गया। साथ ही संगठन के 38 सदस्यों को विकल्प गौरव सम्मान दिया गया। कार्यक्रम का संचालन गौरव शर्मा और सुशील गुप्ता ने किया।

अभियान में पंजाब का हेरोइन तस्कर गिरफ्तार

हेरोइन जब्ती मामले में पुलिस पर फायर कर भागा था

श्रीगंगानगर । श्रीगंगानगर जिले की समेजा कोठी पुलिस ने हेरोइन तस्करी के एक बड़े मामले में फरार आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। मामले में लगभग छह और संदिग्धों के नाम सामने आए हैं। पुलिस उनकी संलिप्तता की जांच कर रही है।

डीआईजी गौरव यादव के अनुसार 15 जून 2024 को समेजा

- **पुलिस हेरोइन तस्करी के मामले में अन्य संदिग्धों की जांच कर रही है**

कोठी थाना क्षेत्र की रोही 44 पीएस में बीएसएफ और पुलिस की संयुक्त कार्रवाई में 6 किलो हेरोइन बरामद की गई थी। घटना के समय आरोपियों ने पुलिस पर हवाई फायरिंग की थी। नाकाबंदी के दौरान पुलिस की गाड़ी को टक्कर मारकर वे फरार हो गए थे। पुलिस ने इस मामले में एनडीपीएस एक्ट और आर्म्स एक्ट के तहत मामला दर्ज किया था।

समेजा कोठी थाना प्रभारी कृष्णकुमार ने तकनीकी और मुखबिर की सूचना के आधार पर आरोपी गगनदीप सिंह उर्फ गुरी (22) को पकड़ा। गगनदीप पंजाब के फिरोजपुर जिले के ममदोट का रहने वाला है।

इस मामले में पहले ही एक अन्य आरोपी नवदीप सिंह उर्फ लवली को गिरफ्तार कर जेल भेजा जा चुका है। इस गिरफ्तारी में कॉन्स्टेबल कालूराम की महत्वपूर्ण भूमिका रही। थाना प्रभारी के अनुसार मामले में लगभग छह और संदिग्धों के नाम सामने आए हैं। पुलिस उनकी संलिप्तता की जांच कर रही है।

श्रीगंगानगर जिले की पुलिस ने पंजाब का हेरोइन तस्कर को गिरफ्तार किया ।

रात्रि चैपाल में एडीएम ने सुनी आमजन की समस्याएं

करौली। अतिरिक्त जिला कलेक्टर हेमराज परिडवाल ने कहा कि रात्रि चैपाल के दौरान परिवादीयों से प्राप्त प्रकरणों को अधिकारी समय सीमा में निस्तारण करें।

अतिरिक्त जिला कलेक्टर पंचायत समिति श्रीमहावीरजी की ग्राम पंचायत गुनसार में आयोजित रात्रि चैपाल को संबोधित करते हुए बोल रहे थे। रात्रि चैपाल में आमजन एवं ग्रामीणों के द्वारा जल जीवन मिशन के तहत पेयजल उपलब्ध करवाना, अतिक्रमण हटवाना, बिजली का बिल कम करने, सडक बनवाने, रास्ता खुलवाने, पेयजल हेतु टंकी का निर्माण करवाने, बीपीएल में नाम जुडवाने, स्कुटी दिलवाने, खेलन मैदान के लिए भूमि आवंटित करने सहित विभिन्न विभागों के 32 प्रकरण प्राप्त हुए। जिन पर अतिरिक्त जिला कलेक्टर ने प्रत्येक प्रकरण की व्यक्तिगत सुनवाई करते हुए संबंधित अधिकारियों को शीघ्रता से नियमानुसार कार्यवाही करने एवं आमजन को लाभान्वित करवाने के निर्देश प्रदान किए। रात्रि चैपाल के दौरान मुख्य कार्यकारी अधिकारी शिवचरण मीणा, उपखंड अधिकारी हेमराज गुर्जर,पशुपालन विभाग के संयुक्त निदेशक डॉ गंगासहाय मीणा,कृषि विभाग के सहायक निदेशक अशोक कुमार मीणा,सूचना एवं जन संपर्क कार्यालय के सहायक निदेशक धर्मेन्द्र कुमार मीना,तहसीलदार रैणु चैधरी सहित अन्य जिला एवं ब्लॉक स्तरीय अधिकारी,कर्मचारी एवं बड़ी संख्या में परिवादी उपस्थित रहे।

विश्व के समक्ष सेवा का नया अध्याय लिखें भारतीय चिकित्सक : राज्यपाल बागडे

राज्यपाल हरिभाऊ किशनराव बागडे ने उदयपुर में अधिवेशन को सम्बोधित किया।

उदयपुर, (कासं)। राज्यपाल हरिभाऊ किशनराव बागडे ने कहा कि आम समाज के लिए चिकित्सक भगवान के समान होते हैं। व्यक्ति की चिकित्सा के प्रति श्रद्धा और आत्मीय भाव अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि वह चिकित्सक की सलाह पर पूरी आस्था रखता है। ऐसे में चिकित्सक की जिम्मेदारी अहम हो जाती है।

वे शनिवार को यहां नेशनल मेडिकल ऑर्गेनाइजेशन (एनएमओ) के 44वें राष्ट्रीय अधिवेशन नमोकॉन-2025 के उद्घाटन सत्र को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने चिकित्सकों से सेवा भावना को सर्वोपरि रखने का आव्हान करते हुए कहा कि मानव सेवा ही ईश्वर सेवा का पर्याय है। स्वामी विवेकानंद ने मानव सेवा को ही ईश्वर सेवा बताया था, और पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने भी नर सेवा को नारायण सेवा के रूप में स्वीकार किया। इसी भावना के साथ समाज को स्वास्थ्य, शिक्षा और सेवा के प्रति जागरूक बनाना आवश्यक है। राज्यपाल ने चिंता व्यक्त की कि वर्तमान समय में मनुष्य की रोग प्रतिकारक क्षमता कमजोर हो रही है, जिसे बढ ाने के प्रयास आवश्यक हैं। उन्होंने कहा कि पुराने समय में प्रात:काल दंड-बैठक और व्यायाम हमारी दिनचर्या का अनिवार्य हिस्सा था, लेकिन आधुनिक जीवनशैली में यह परंपरा लुप्त होती जा रही है। इसे पुनर्जीवित कर लोगों को स्वस्थ जीवन के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए। उन्होंने कोविड-19 महामारी का उदाहरण देते हुए कहा कि इस दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में न केवल देश बल्कि विदेशों को भी बचाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया गया। उन्होंने नेशनल मेडिकल ऑर्गेनाइजेशन (एनएमओ) की सराहना करते हुए इसके अधिवेशन की सफलता की कामना की।

अपने बचपन के कुछ अनुभव साझा करते हुए उन्होंने सामाजिक सेवा कार्यों को याद किया। मैकाले की शिक्षा पद्धति पर चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि यह प्रणाली राष्ट्र की जडों को कमजोर करने के लिए बनाई गई थी, लेकिन अब संगठन राष्ट्र सेवा के भाव को सुदृढ करने और समाज में चेतना जगाने का कार्य करेगा। इसके लिए प्राइमरी शिक्षा से ही प्रयास करने होंगे।

सालाना जलसा समारोह संपन्न

चूरू । गांव झारिया में शुक्रवार देर शाम को मदरसा इस्लामिया काशिफुल उलूम के सालाना जलसे का आयोजन किया गया। जलसे की अध्यक्षता मौलाना मोहम्मद सालेह ने की। मुख्य अतिथि मदरसा जामिया दारुल उलूम के प्राचार्य मुफ्ती इरशाद कासमी थे। हाफिज मोहम्मद सद्दाम ने तिलावत-ए-कुरआन से जलसे का आगाज किया। इस मौके पर मदरसे के बच्चों व बच्चियों को उत्कृष्ट कार्य करने पर प्रतीक चिन्ह व प्रशस्ति-पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। जलसे में मदरसे के विद्यार्थियों ने दिलकश अंदाज में नात, तकरीर और मुकालमे प्रस्तुत किए। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि इंसानियत एकता सेवा समिति के संस्थापक करामत खान ने कहा कि हम अपने बच्चों और बच्चियों को बेहतर तालीम दिलाएं और उन्हें अच्छे संस्कार दें।

बीकानेर रेंज से 4 एसआई सेवा से बर्खास्त

बीकानेर । प्रदेशभर में साल 2021 की एसआई भर्ती परीक्षा के मामले में अब दोषी सब इंस्पेक्टर को सेवा से बर्खास्त करने का सिलसिला तेज हो गया है।

कुछ दिन पहले दो एसआई को बर्खास्त करने के बाद देर रात बीकानेर आईजी ओम प्रकाश ने चार और एसआई बर्खास्त कर दिए। ये सभी एसआई श्रीगंगानगर में पोस्टेड थे।

आईजी ओमप्रकाश पासवान ने बताया कि रेंज के श्रीगंगानगर में पदस्थापित मनीष बेनीवाल पुत्र श्रवण कुमार, जयराज सिंह पुत्र आसू सिंह, अंकिता गोदारा पुत्री श्याम सुंदर और मनीषा सिहाग पुत्री अर्जुनराम सिहाग को सेवा से बर्खास्त कर दिया गया है।

- **श्रीगंगानगर में पोस्टेड थे सभी , रेंज से अब तक 6 को हटाया**
- **सेवा से बर्खास्तगी नियम सीसीए 19 (2) के तहत की गई**

इन सभी के खिलाफ सेवा नियमों के तहत कार्रवाई की गई है।

एसआई भर्ती परीक्षा में गड़बड़ी करने का आरोप है। प्रारम्भिक जांच में ये सभी दोषी पाए गए हैं। ऐसे में इन्हें निलंबित के बजाय सीधे सेवा से बर्खास्त कर दिया गया है। ये कार्रवाई सेवा से बर्खास्तगी नियम सीसीए 19 (2) के तहत की गई है। सभी सब इंस्पेक्टर बैच 2021 के हैं। एसओजी ने जो मामला दर्ज किया था, उसी के तहत इन पर कार्रवाई की गई है। इससे पहले जयपुर जेल में बंद श्रवण कुमार गोदारा पुत्र बीरबलराम बिश्नोई निवासी बज्जू खालसा और मंजू बिश्नोई पुत्र गोगाराम बिश्नोई निवासी गुलसानियों की ढाणी धोरीमन्ना बाड़मेर को सेवा से बर्खास्त किया गया था। इसमें श्रवण की पोस्टिंग श्रीगंगानगर थी जबकि ममता की पोस्टिंग बीकानेर में थी। ये दोनों भी साल 2021 के बैच में ही एसआई बने थे।

बीकानेर रेंज आईजी ओम प्रकाश अब तक छह एसआई को सेवा से बर्खास्त कर चुके हैं।

स्मैक तस्कर गिरफ्तार

करौली। करौली पुलिस ने नशे के खिलाफ चलाए जा रहे ऑपरेशन स्मैक आउट के तहत एक बड़ी सफलता हासिल की है। पुलिस ने स्मैक तस्करी के मुख्य आरोपी को गिरफ्तार किया है। आरोपी पर पुलिस ने 10 हजार रुपए का इनाम घोषित कर रखा था। आरोपी के खिलाफ एनडीपीएस एक्ट के तहत 7 मामले दर्ज हैं।

लांगरा थानाधिकारी वासुदेव बसवाल के अनुसार आरोपी धौलपुर के चिलाचैन्द निवासी कमल मीणा 29 एक बड़े नेटवर्क का हिस्सा था। वह पहले से गिरफ्तार पांच आरोपियों को स्मैक की आपूर्ति करता था।

ये आरोपी करौली, सरमथुरा, बाड़ी, वजीरपुर और आसपास के गांवों में स्मैक बेचते थे। इससे पहले पुलिस ने एक अन्य इनामी बदमाश के घर से स्मैक बिक्री से जुड़ी 5 लाख रुपए की नकदी जब्त की थी।

महू को नवीन ग्राम पंचायत बनाए जाने के लिए जयपुर तक गुहार

करौली । करौली पंचायत समिति की ठाम पंचायत हरनगर से ठाम माहू को नवीन ठाम पंचायत बनाए जाने को लेकर बड़ी संख्या में ठामीण जयपुर में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा, पंचायत राज एवं शिक्षा मंत्री मदन दिलावर, सहकारिता मंत्री अविनाश गहलोत से भी गुहार लगा चुके हैं ।

जयपुर से मिले आश्वासन के बाद एक बार फिर ग्रामीण करौली जिला कलेक्ट्रेट पहुंचे और महू गांव के ग्रामीणों ने कलेक्ट्रेट पर प्रदर्शन कर जिला कलेक्टर को ज्ञापन सौंपा है। जिला कलेक्टर और एसडीएम को ज्ञापन सौंपकर महू गांव को पाराशरी ग्राम पंचायत में जोड़ने का विरोध किया और महू ग्राम पंचायत को नवीन ग्राम पंचायत बनाने की मांग की।

इस दौरान बड़ी संख्या में ग्रामीण मौजूद रहे। महू गांव निवासी पोथी ठेकेदार,अमरलाल,किरोड़ी,दर्शन रामकिशोर और जगमोहन माली ने बताया कि महू गांव को पाराशरी नवीन पाराशरी ग्राम पंचायत से जोड़ने की चर्चा है।

- **जयपुर में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा, पंचायत राज एवं शिक्षा मंत्री मदन दिलावर, सहकारिता मंत्री को ज्ञापन दिया है।**

जिसका क्षेत्र वासियों में भारी विरोध है। ग्रामीणों ने बताया कि पाराशरी ग्राम पंचायत बनने से महू सहित आसपास के अन्य ग्रामीणों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ेगा। उन्होंने बताया कि पाराशरी गांव तक जाने का मुख्य रास्ता लंबा और परेशानियों से भरा है। उन्होंने बताया कि क्षेत्र में महू गांव की जनसंख्या अधिक है। जबकि पाराशरी गांव की जनसंख्या कम है और सुविधाओं का भी अभाव है। ग्रामीणों ने बताया कि महू गांव में सभी सुविधाएं उपलब्ध होने से इसे नवीन ग्राम पंचायत बनाना उचित रहेगा। ग्रामीणों ने पूर्व में दिए ज्ञापन की अनदेखी का भी आरोप लगाया है। ग्रामीणों ने एक बार फिर ज्ञापन सौंप कर जल्द से जल्द मांग पूरी करने की गुहार लगाई है। इस दौरान प्रकाश चंद जाटव ,रामधन, रामकुमार, रमेश, मोहर सिंह, रामराज सैड बड़ी संख्या में एक दर्जन से अधिक गांव के लोग उपस्थित रहे।

विजयनगर ब्लैक मेल कांड: सकल हिंदू समाज का अजमेर बंद रहा सफल

अजमेर, (कासं)। अजमेर संभाग के ब्यावर जिले के बिजयनगर में स्कूली छात्राओं के साथ हुए दुराचार, ब्लैकमेलिंग व धर्मांतरण मामले को शनिवार को सकल हिंदू समाज की ओर से अजमेर बंद का आव्हान किया गया था। सकल हिंदू समाज का अजमेर बंद छिटपुट घटनाओं को छोडक़र शांतिपूर्ण व सफल रहा। बंद के दौरान हाथों में लाठी डंडे लेकर हिंदूवादी संगठनों के लोग बाजार बंद कराने निकले। रास्ते में कई जगह टेम्पो, ई-रिक्शा के पहियों की हवा निकाली। सवारियों को गाडिय़ों से भी उतारा गया। बंद समर्थक व दुकानदार, ई-रिक्शा ड्राइवर से नोक झोक की घटना भी सामने आई है। बंद के मद्देनजर सुरक्षा की दृष्टि से जिला पुलिस प्रशासन पूरी रह मुस्तैद रहा।

आक्रोश रैली निकाल सौंपा ज्ञापन:- सकल हिंदू समाज के अजमेर बंद को लेकर लोगों में आक्रोश व्याप्त है। शनिवार सुबह साढ़े ग्यारह बजे हिंदूवादी संगठनों के पदाधिकारी, कार्यकर्ता सहित समाज के जागरुक लोग गांधी भवन पर एकत्रित हुए, यहां से आक्रोश रैली के रूप में जिला कलेक्ट्रेट पहुंचे। कलेक्ट्रेट पर बड़ी संख्या में विभिन्न संगठनों से जुड़े लोग व कार्यकर्ताओं ने बैरिकेड पर चढ़ कर नारेबाजी कर आक्रोश जताया और आरोपियों की फांसी देने के नारे लगाए। इसके पश्चात सकल समाज के प्रतिनिधि मंडल के सदस्यों ने जिला कलेक्टर लोकबंध को मुख्यमंत्री के नाम का ज्ञापन सौंपा और मामले की जांच सीबीआई से कराने व आरोपियों को फांसी देने की मांग की।

- **कलेक्ट्रेट पर किया प्रदर्शन, मुख्यमंत्री के नाम सौंपा ज्ञापन**
- **मामले जांच सीबीआई से कराने की मांग**
- **श्री अजमेर व्यापारिक महासंघ ने व्यापारियों का जताया आभार**

श्री अजमेर व्यापारिक महासंघ ने दिया था समर्थन: बिजयनगर रेप ब्लैकमेल कांड के विरोध में शनिवार को अजमेर बंद के सकल हिंदू समाज के आव्हान पर यह निर्णय लिया गया है। बंद को श्री अजमेर व्यापारिक महासंघ से जुड़े 124 से ज्यादा व्यापारिक संगठनों ने अपना समर्थन दिया था। बंद के दौरान दरगाह बाजार में कुछ दुकानें खुली मिली थीं। जिस पर सकल समाज के कार्यकर्ताओं ने दुकानदारों से उन्हें अपने प्रतिष्ठान बंद करने की अपील की गई। अजमेर बंद के दौरान इमरजेंसी सेवाओं पर बंद का असर नहीं है। स्कूल-कॉलेज, पेट्रोल पंप, गैस एजेंसी, हॉस्पिटल जैसी आवश्यक सेवाओं को बंद से दूर रखा गया है।

व्यापारियों व दुकानदारों का जताया आभार:- श्री अजमेर व्यापारिक महासंघ के अध्यक्ष महेंद्र बंसल, महासचिव रमेश लालवानी, अमित ढाणी, विजय गोयल, किशोर टेकवानी, ठाकुर मूलानी, सुरेश तंबोली, पवन बंसल, गोविंद लालवानी, रणवीर सैनी आदि ने अजमेर बंद के दौरान व्यापारियों द्वारा दिए गए समर्थन पर आभार जताया।

मुआवजा की मांग

सादुलपुर । तहसील के नीमा, हमीरवास, बास लाल सिंह, जसवंतपुरा, बैरासर, लम्बोर सहित कई गांवों में शुक्रवार शाम लगभग 6 बजे भयंकर ओलावृष्टि हुई, जिसने किसानों की उम्मीदों को मिट्टी में मिला दिया। खेतों में लहलहा रही सरसों और गेहूं की फसल पूरी तरह नष्ट हो गई। इस आपदा के कारण हजारों किसान गहरे आर्थिक संकट में आ गए हैं, क्योंकि इस क्षेत्र के ग्रामीणों की आजीविका पूरी तरह से कृषि पर निर्भर है। ओलावृष्टि इतनी भीषण थी कि सरसों की फलियां टूटकर गिर गईं और गेहूं के दाने झडकर मिट्टी में मिल गए। कई जगह खेतों में पानी भर गया और बची हुई फसल के सडने का खतरा पैदा हो गया। इस तबाही से किसान गहरे सदमे में हैं, क्योंकि वे इस फसल से अपनी सालभर की जीविका चलाने की उम्मीद लगाए बैठे थे। स्थानीय किसान जगदीश गुर्जर, बास लाल सिंह के गिरवरसिंह ने बताया कि 'हमने अपनी पूरी मेहनत और पूंजी लगाकर फसल तैयार की थी, लेकिन कुछ ही मिनटों में सब खत्म हो गया।

भामाशाहों एवं प्रतिभाओं को सम्मानित किया

उत्कृष्ट परीक्षा परिणाम देने वाली बालिकाओं को सम्मानित किया

सीकर । शहीद मुस्ताक अली खान राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय जाजोद में भामाशाहों एवं प्रतिभाओं का सम्मान समारोह राष्ट्रपति शिक्षक पुरस्कार प्राप्त भंवरसिंह के मुख्य अतिथ्य में शनिवार को आयोजित हुआ। भंवर सिंह ने अपने उदबोधन में बालिकाओं को नैतिक शिक्षा, संस्कारवान तथा अनुशासन की पालना करने की विस्तार से जानकारी दी। प्रधानाचार्य रामचन्द्र सिंह खीचड़ ने विद्यालय का प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए ग्रामवासियों से विकास के लिए सहयोग का आव्हान किया। जिसपर सभी ग्रामवासियों ने सहयोग का आश्वासन दिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. भीवाराम रणवा ने की। विशिष्ट अतिथि पूर्व सरपंच लियाकत अली, सुबेदार इकबाल खान, जोगेंद्र सिंह, सुरजन सिंह, सुबेदार प्रहलादसिंह, हनुमान सिंह पूनिया, इब्राहम मलकाण, इलियास नूरखानी, इमरान खां मुदरबखानी, नियाज खां फाडियान उपस्थित रहे।

- **भामाशाहों एवं प्रतिभाओं का सम्मान समारोह राष्ट्रपति शिक्षक पुरस्कार प्राप्त भंवरसिंह के मुख्य अतिथ्य में सम्पन्न**

इस अवसर पर चार राज्यस्तरीय खिलाड़ियों को मेडल व माला पहनाकर सम्मानित किया। एक दर्जन से अधिक उत्कृष्ट परीक्षा परिणाम देने वाली बालिकाओं को सम्मानित किया। दो दर्जन से अधिक भामाशाहों को माला पहनाकर व प्रतीक चिन्ह देकर सम्मानित किया। शारीरिक शिक्षक कविता सैनी सहित पूरे स्टाफ को माला पहनाकर व प्रतीक चिन्ह देकर सम्मानित किया। अंत में व्याख्याता संगीता ने सभी का आभार व्यक्त किया। संचालन व. अ. रोशन अली ने किया। कार्यक्रम में गांव के गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

गांवों में भारी ओलावृष्टि

सादुलपुर। बदले मौसम के मिजाज के चलते शुक्रवार देर शाम को 6.00 बजे लगभग अचानक मौसम बदल गया तथा बादल छा गए एवं बादलों की गर्जना के साथ हल्की बूंदाबांदी हुई। जो देखते ही देखते भारी ओलावृष्टि में तब्दील हो गई। वहीं आगनबाडी जिला अध्यक्ष सविता धोलिया ने बताया कि ददरेवा के आसपास अनेक ग्रामीणों क्षेत्र में ओलावृष्टि होने के समाचार मिले हैं। गांव रतनपुरा में लगभग 20 मिनट तक हुई बारिश के साथ ओले गिरे हैं। इसके अलावा ददरेवा गांव के आसपास के गांव धोलिया, भुवाडी, चिमनपुरा, सेऊवा व रतनपुरा में जमकर ओलावृष्टि हुई है। ग्रामीणों ने बताया कि तेज बादलों की गर्जना साथ जमकर ओलावृष्टि होने से चने की फसलों को नुकशान हुआ है। गांव में विचरण करने वाले पशुओं को भी नुकसान पहुंचा है घर के आंगन और छत पर ओलो की चादर बिछ गई। ग्रामीणों ने बताया कि लगभग आधे घंटे बाद ग्रामीणों को कृषि और फावडे से ओलो को हटाना पडा। ग्रामीणों ने बताया कि एक साथ अचानक इतनी बडी ओलावृष्टि उन्होंने नहीं देखी है।वही बैरासर बडा ओर बेरासर मंझला की रोही में जमकर ओलावृष्टि हुई है नींबू के आकार के ओला गिरने से घरों के बाहर बंदे पशु धन को भारी नुकसान पहुंचा है।

हाई कोर्ट जस्टिस गणेश राम मीणा ने सूरौठ के बूढंदे बाबा मंदिर में की पूजा अर्चना, सर्व समाज के लोगों ने किया सम्मान

हिंडौन सिटी। राजस्थान हाईकोर्ट जयपुर के जस्टिस गणेश राम मीणा ने शनिवार को सूरौठ कस्बे में पहुंच कर यहां आराध्य देव बूढंदे बाबा मंदिर में पूजा अर्चना की। इस दौरान सर्व समाज के लोगों ने जस्टिस मीणा का भव्य सम्मान किया। लोगों ने हाई कोर्ट जस्टिस मीणा को ज्ञापन सौंप कर सूरौठ तहसील मुख्यालय पर मुंशिफ कोर्ट खोलने की मांग की।

हाई कोर्ट जस्टिस गणेश राम मीणा शाम 4:30 बजे के करीब कस्बे में स्थित बूढंदे बाबा मंदिर परिसर पहुंचे। इस अवसर पर कस्बे के लोगों ने पुष्प वर्षा कर उनका अभिनंदन किया। जस्टिस मीणा ने बूढंदे बाबा की प्रतिमा के समक्ष ढोक लगा कर मनौती मांगी तथा पूजा अर्चना की। इस मौके पर डुम्मा पटेल, सेवानिवृत जिला शिक्षा अधिकारी ओमप्रकाश मुद्गल, प्रदेश कांग्रेस कमेटी के महासचिव देशराज मीणा, सूरौठ निवासी एसडीएम कुलराज मीणा, जिला कांग्रेस कमेटी के महासचिव विश्राम मीणा, हिंडौन देहात ब्लॉक कांग्रेस के प्रवक्ता प्रमोद तिवाड़ी, केदार मीणा, प्रेम राज बाबू, पूर्व सरपंच नादान मीणा, सुग्रीव मीणा, झमन मेंबर, जीएसएस अध्यक्ष प्रेम राज मीणा, प्रहलाद जांगिड़, किशन सोनी, लट्ठे मीणा, कांग्रेस के सूरौठ मंडल अध्यक्ष बत्तू मेंबर, तोता मीणा, सरदार मीणा, वेद प्रकाश शर्मा, प्रेम पटेल, बद्री मास्टर, संपत कटकरिया, राजू सैनी शास्त्री, रिंकू मीणा, राहुल मीणा, जय सिंह मीणा, श्री मोहन मीणा, धर्म सिंह मास्टर, भय सिंह मीणा, मंदिर के पुजारी हल्के मीणा, राजपाल सैनी, छुट्टन खान, राजेश वकील, श्री मोहन मीणा, हरि सिंह सूबेदार सहित सर्व समाज के लोगों ने जस्टिस मीणा का साफे व मालाएं पहनाकर सम्मान किया।

राजस्थान हाईकोर्ट जयपुर के जस्टिस गणेश राम मीणा का सूरौठ कस्बे में विभिन्न संगठनों ने सम्मान किया।

शराब ठेके को हटाने की मांग

सादुलपुर। वार्ड 31 राजगढ में शिक्षण संस्थाओं तथा आबाद बस्ती के बीच चल रहे शराब के ठेके को हटाने की मांग कर शुक्रवार को सैकडो लोगों ने आक्रोश जताया तथा एसडीएम को लिखित शिकायत की है। शाम पांच बजे के करीब सौंपे ज्ञापन में लोगों ने बताया कि शराब के ठेके के कारण लोगों का जीना मुश्किल हो गया है तथा भावी पीढियों के भविष्य पर बुरा असर पड रहा है। अनेकों शिकायतों के बावजूद अस्थाई रूप से चल रहे ठेके को संबंधित विभाग तथा प्रशासन की ओर से हटाने की कार्रवाई नहीं हो रही है, जिसके कारण मोहल्ले के लोगों में भारी आक्रोश व्याप्त है। वार्ड संख्या 31 के निवासियों ने बताया कि वार्ड नंबर 31 राजगढ में शहर की वर्षों पुरानी नेहरू बाल मंदिर शिक्षण संस्थान तथा रुक्मिणी देवी बालिका स्कूल के पास आबाद बस्ती में एक शराब ठेका चलाया जा रहा है। आम प्रमुख रास्ते पर दिन भर अनेक प्रमुख मोहल्ले के लोगों सहित स्कूल जाने वाले विद्यार्थियों तथा महिलाओं का आवागमन बना रहता है। तथा शराब ठेके पर शराब खरीदने और पीने तथा असामाजिक तत्वों का जमावडा रहने से आमजन को परेशानी का सामना करना पडता है।

मोबाइल चोरी के गिरोह का पर्दाफाश

निवाई। निवाई के झिलाय रोड पर स्थित गोपी टावर में 9 फरवरी को दो मोबाइल की दुकानों में हुई मोबाइल चोरी सहित जिले के 5 स्थानों पर मोबाइल की दुकानों पर हुई चोरी की वारदातों का पुलिस थाना निवाई में पुलिस अधीक्षक विकास सांगवान ने प्रेस कॉन्फ्रेंस करते हुए खुलासा किया है।

उन्होंने बताया कि 9 फरवरी की रात्रि को चोरों ने जिले में पांच मोबाइल की दुकानों को निशाना कर करीब 40 लाख के मोबाइल चुराए थे। उन्होंने बताया कि चोरों को पकडऩे में डीएसटी टीम व साइबर सेल टोंक की विशेष भूमिका रही है। एसपी सांगवान ने बताया कि शातिर चोरों को पकडऩे के लिए पुलिस द्वारा गठित पांच विशेष टीमों द्वारा चार राज्यों में लगभग 2 हजार किलोमीटर तक चोरों की तलाश करते हुए 400 सीसीटीवी फुटेज खंगाले। इसके बाद दो आरोपियों को गिरफ्तार करने में सफलता प्राप्त की। वारदात की जानकारी देते हुए एसपी सांगवान ने बताया कि जिले में एक ही रात में अलग-अलग थाना क्षेत्र के मोबाइल की तीन दुकानों के शटर तोडक़र लगभग 40 लाख रुपए के मोबाइल ले जाने सहित राज्य के विभिन्न स्थानों की लगभग आधा दर्जन वारदातों का खुलासा हुआ है। पुलिस ने चोरों द्वारा चोरी किए गए 140 एंड्राइड मोबाइल तथा घटना में प्रयुक्त वाहन ब्रेजा कार व चोरी की हुई नंबर प्लेट को भी बरामद किया है।

- **एक हरियाणा व दूसरा उत्तर प्रदेश का है निवासी**

उन्होंने बताया कि घटना में एडिशनल एसपी बृजेंद्र सिंह भाटी के निर्देशन में डीवाईएसपी मृत्युंजय मिश्रा के निकट सुपरविजन में टीमों को गठित किया गया था। पुलिस ने आरोपी सलमान खान पुत्र इलियास खान जाति मेव उम्र 41 वर्ष निवासी मोहल्ला हटेड़ा, ग्राम उटावड़ जिला पलवल हरियाणा व आरोपी महेश गोयल पुत्र मनोहरलाल उम्र 38 वर्ष निवासी एफएम 764 गोविंद नगर पुलिस थाना मथुरा उत्तर प्रदेश को गिरफ्तार किया है। उन्होंने बताया कि शेष आरोपियों को भी जल्द से जल्द गिरफ्तार कर लिया जाएगा।

इस पहल से लोगों को सिर्फ अपनी फिटनेस सुधारने में ही मदद नहीं मिलेगी बल्कि वे प्रदूषण को नियंत्रित करने में भी योगदान करेंगे।
– नीरज चोपड़ा

दो बार के ओलंपिक विजेता, 'फिट इंडिया संडे ऑन साइकिल' में शामिल होने का आग्रह करते हुए।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी — डी गुकेश

मौजूदा विश्व चैंपियन भारत के डी गुकेश फिडे की जारी नवीनतम क्लासिकल रेटिंग में अपने करियर की सर्वश्रेष्ठ तीसरी रैंकिंग पर पहुंच गए, जबकि हमवतन आर प्रज्ञानानंदा फिर से शीर्ष 10 में वापसी करने में सफल रहे। गुकेश दिसंबर में सिंगापुर में चीन के डिंग लिरेन को हराकर विश्व खिताब जीतने के बाद से शानदार फॉर्म में चल रहे हैं।18 साल के इस खिलाड़ी ने इस दौरान 10 रेटिंग अंक हासिल किए हैं। अब उनके नाम कुल 2787 रेटिंग अंक हो गये हैं। गुकेश हाल ही में विज्क आन जी में टाटा स्टील मास्टर्स को टाईब्रेक में प्रज्ञानानंदा से हार गए थे।

क्या आप जानते हैं ?... भारत का ओलंपिक इतिहास में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन भी रहा है, जिसमें उसने 142 मैचों में से 87 में जीत हासिल की है।

ध्रुव-तनिषा जर्मन ओपन के सेमीफाइनल में

जर्मनी, 1 मार्च। भारत के ध्रुव कपिला और तनीषा क्रैस्टो ने शुक्रवार को पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना के गाओ जिया जुआन और वू मेंग यिंग को सीधे गेम में हराकर जर्मन ओपन 2025 बैडमिंटन टूर्नामेंट के सेमीफाइनल में प्रवेश किया। पेरिस

2024 ओलंपियन तनीषा क्रैस्टो और उनके मिश्रित युगल साथी ध्रुव कपिला ने शानदार प्रदर्शन करते हुए चीनी जोड़ी को केवल 30 मिनट में 21-14, 21-17 से हरा दिया। कपिला और क्रैस्टो ने शानदार शुरुआत करते हुए शुरुआती गेम में 11-2 की बढ़त बना ली। हालाँकि गाओ और वू ने थोड़े समय के लिए वापसी करते हुए अंतर को 13-10 तक कम कर दिया, लेकिन भारतीय जोड़ी ने तेजी से अपना दबदबा कायम करते हुए पहला गेम अपने नाम कर लिया। दूसरा गेम कड़ा मुकाबला साबित हुआ, जिसमें चीनी जोड़ी ने जोरदार प्रतिरोध किया। हालाँकि, कपिला और क्रैस्टो ने जीत हासिल करने और सेमीफाइनल में जगह पक्की करने के लिए अपना हौसला बरकरार रखा। इस बीच, पुरुष एकल में, विश्व में 59वें स्थान पर मौजूद भारत के थारुन मन्नेपल्ली, फ्रांस के तीसरी वरीयता प्राप्त टोमा जूनियर पोपोव से कड़े मुकाबले में 16-21, 21-17, 21-8 से हारकर टूर्नामेंट से बाहर हो गए।

नेमार विश्व कप क्वालीफायर के लिए ब्राजील टीम में शामिल

रियो डी जनेरियो, 1 मार्च। ब्राजील फुटबॉल परिसंघ (सीबीएफ) ने नेमार को कोलंबिया और अर्जेंटीना के खिलाफ विश्व कप क्वालीफायर के लिए ब्राजील की प्रारंभिक टीम में शामिल किया है।

33 वर्षीय खिलाड़ी ने अक्टूबर 2023 में मोंटेवीडियो में उरुग्वे के खिलाफ विश्व कप क्वालीफायर के दौरान अपने बाएं घुटने में क्रूसिएट लिगामेंट के टूटने के बाद से अपने देश का प्रतिनिधित्व नहीं किया है। लंबी पुनर्प्राप्ति प्रक्रिया के बाद नेमार ने पिछली जनवरी में एक क्लब की ओर से खेलते हुये अपनी सर्वश्रेष्ठ फॉर्म की झलक दिखाई है। ब्राजील के मैनेजर डोरिवल जूनियर ने रियल बेटिस के विंगर एंटनी, किशोर रियल मैड्रिड के फॉरवर्ड एंड्रिक और एटलेटिको मैड्रिड के सैमुअल लिनो को भी शामिल किया है। इनके अलावा अनुभवी मिडफील्डर ऑस्कर और साओ पाउलो टीम के साथी लुकास मौरा को भी शामिल किया गया है। 52 सदस्यीय सूची में रियल मैड्रिड के विनीसियस जूनियर और रोड्रिगो, न्यूकैसल के एनफोर्सर ब्रूनो गुइमारेस और बार्सिलोना के विंगर रफिन्हा शामिल हैं।

सेमीफाइनल से पहले शॉर्ट की चोट ने बढ़ायी ऑस्ट्रेलिया की चिंता

लाहौर, 1 मार्च। सलामी बल्लेबाज मैथ्यू शॉर्ट की चोट ने ऑस्ट्रेलिया टीम प्रबंधन की चिंता बढ़ा दी है और आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी 2025 के सेमीफाइनल मुकाबले से पहले उन्हे अपनी टीम में फेरबदल करने के लिए मजबूर होना पड़ सकता है। शुक्रवार को लाहौर में अफगानिस्तान के खिलाफ मैच बारिश की भेंट चढ़ जाने के दौरान सलामी बल्लेबाज मैथ्यू शॉर्ट को चोट लग गई थी। क्षेत्ररक्षण के दौरान शॉर्ट को पिंडली में चोट लग गई और बारिश के कारण मैच रद्द होने से पहले शीर्ष क्रम में 20 रन की अपनी संक्षिप्त पारी के दौरान वह लंगड़ाते दिखे। कोई नतीजा नहीं निकलने के बावजूद, ऑस्ट्रेलिया ने सेमीफाइनल में जगह पक्की कर ली है। सेमीफाइनल में ऑस्ट्रेलिया का मुकाबला भारत या न्यूजीलैंड से होगा। भारत के सेमीफाइनल में पहुंचने की स्थिति में आस्ट्रेलिया को नॉकआउट मुकाबले के लिए दुबई जाना होगा। कप्तान स्टीव स्मिथ ने संकेत दिया कि हाई-स्टेक्स मुकाबले के लिए शॉर्ट के समय पर ठीक होने की संभावना नहीं है। उन्होने कहा मुझे लगता है कि वह चोट से उबरने की कोशिश कर रहे हैं। हमने आज रात देखा कि वह बहुत अच्छी तरह से नहीं चल रहा था, और मुझे लगता है कि शायद उसे ठीक होने के लिए खेल के बीच बहुत जल्दी हो जाएगी।

भारत, ऑस्ट्रेलिया व द. अफ्रीका के बीच आज से शुरू होगी बधिर टी-20 त्रिकोणीय श्रृंखला

नई दिल्ली, 1 मार्च। भारत, ऑस्ट्रेलिया और दक्षिण अफ्रीका की बधिर टीमों के बीच रविवार से नयी दिल्ली के करनैल सिंह स्टेडियम में बहुप्रतीक्षित टी-20 त्रिकोणीय श्रृंखला खेली जायेगी। इस त्रिकोणीय श्रृंखला का आयोजन भारतीय बधिर क्रिकेट संघ (आईडीसीए) की ओर से किया जा रहा है। भारत, दक्षिण अफ्रीका और ऑस्ट्रेलिया की अंतरराष्ट्रीय बधिर क्रिकेट टीमें दो से आठ मार्च तक होने वाली श्रृंखला में भाग लेंगी। त्रिकोणीय श्रृंखला के बाद, भारतीय बधिर क्रिकेट टीम 10 से 12 मार्च तक ऑस्ट्रेलिया के साथ तीन मैचों की एकदिवसीय श्रृंखला खेलेगी। प्राप्त जानकारी के अनुसार अखिल भारतीय पुरुष चयन समिति द्वारा चुनी गयी भारतीय बधिर क्रिकेट टीम की अगुवाई वीरेंद्र सिंह करेंगे। टी-20 अंतरराष्ट्रीय त्रिकोणीय सीरीज की शुरुआत भारत और दक्षिण अफ्रीका के बीच कल होने मैच से होगी और इसमें छह लीग मैच खेले जायेंगे। त्रिकोणीय श्रृंखला का फाइनल आठ मार्च को होगा। इस अवसर पर आईडीसीए के अध्यक्ष सुमित जैन ने कहा, यह त्रिकोणीय सीरीज विशेष महत्व रखती है, क्योंकि यह खेल की सच्ची भावना को प्रदर्शित करती है और तीन प्रमुख क्रिकेट देशों की बधिर क्रिकेट टीमों के बीच एक रोमांचक मुकाबला होगा।

ग्रुप-ए में शीर्ष स्थान के लिये होगी भारत-न्यूजीलैंड में टक्कर

दुबई, 1 मार्च। चैंपियंस ट्रॉफी में सेमीफाइनल में अपना स्थान बना चुकी भारत और न्यूजीलैंड के बीच रविवार को ग्रुप ए में शीर्ष स्थान हासिल करने के साथ मनोवैज्ञानिक बढ़त लेने की टक्कर होगी। न्यूजीलैंड आईसीसी टूर्नामेंटों में लगातार एक मजबूत ताकत साबित हुआ है और इस संस्करण में उनका प्रदर्शन कोई अपवाद नहीं रहा है। कीवी टीम ने अपने अभियान की शुरुआत मेजबान पाकिस्तान पर शानदार जीत के साथ की और इसके बाद बांग्लादेश के खिलाफ शानदार जीत हासिल की। दूसरी ओर, भारत ने बांग्लादेश पर बड़ी जीत के साथ अपना दबदबा दिखाया, इससे पहले विराट कोहली की मास्टरक्लास पारी ने कट्टर प्रतिद्वंद्वी पाकिस्तान को टूर्नामेंट से जल्द ही बाहर का रास्ता दिखा दिया।

दोनों टीमों ने अपनी खेल योजनाओं को प्रभावी ढंग से क्रियान्वित किया है, प्रमुख खिलाड़ियों ने महत्वपूर्ण क्षणों में आगे बढ़कर काम किया है। माइकल

ब्रेसवेल ने बांग्लादेश पर न्यूजीलैंड की जीत में शानदार भूमिका निभाई, उन्हें गेंदबाजी आक्रमण से भरपूर समर्थन मिला। भारत के स्पिनरों ने पाकिस्तान को ध्वस्त करने में निर्णायक भूमिका निभाई, जबकि कोहली के शानदार शतक ने उनकी फॉर्म में वापसी को उजागर किया।

इसके अलावा रचिन रवींद्र ने शानदार शतक के साथ रिकॉर्ड बुक में अपना नाम दर्ज कराया। सेमीफाइनल में जगह पक्की होने के बाद भारत आगामी मुकाबले के लिए कप्तान रोहित शर्मा और तेज गेंदबाज मोहम्मद शमी को आराम देने का विकल्प चुन सकता है। हालाँकि, फॉर्म में चल रहे कोहली की मौजूदगी मिशेल सेंटनर की अगुवाई वाली न्यूजीलैंड की गेंदबाजी के लिए एक बड़ी चुनौती होगी। भारत के पूर्व कप्तान की पाकिस्तान के खिलाफ शानदार पारी ने बड़े मंच पर अच्छा प्रदर्शन करने की उनकी क्षमता की पुष्टि की।

इस बीच, रवींद्र न्यूजीलैंड के लिए बेहतरीन प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ी रहे हैं। बांग्लादेश के खिलाफ 25 वर्षीय खिलाड़ी की मैच जिताऊ 112 रन की पारी ने आईसीसी टूर्नामेंटों में आगे बढ़ने की उनकी क्षमता को दिखाया है, जो इस तरह के आयोजनों में उनका चौथा शतक है। उनकी फॉर्म कीवी टीम के लिए महत्वपूर्ण होगी क्योंकि वे भारतीय आक्रमण को चुनौती देना चाहेंगे।

दोनों टीमों के पास जबरदस्त गेंदबाजी आक्रमण है। जहां ब्रेसवेल और विलियम ओरूर्के ने न्यूजीलैंड की कमान संभाली है, वहीं भारत ने शमी और हर्षित राणा की तेज गेंदबाजी जोड़ी पर भरोसा किया है। आगामी मुकाबला दोनों पक्षों के लिए एक महत्वपूर्ण परीक्षा के रूप में काम करेगा।

भारत के उप-कप्तान शुबमन गिल टूर्नामेंट के असाधारण बल्लेबाजों में से एक रहे हैं। 25 वर्षीय खिलाड़ी ने अपने अभियान की शुरुआत बांग्लादेश के खिलाफ शतक के साथ की और इसके बाद पाकिस्तान के खिलाफ महत्वपूर्ण 46 रन बनाए। अतीत में न्यूजीलैंड के खिलाफ उल्लेखनीय प्रदर्शन करने के बाद गिल के 2023 विश्व कप सेमीफाइनल में नाबाद 80 रन भी शामिल है।

न्यूजीलैंड ने आईसीसी आयोजनों में भारत को परेशान किया है, लेकिन भारतीय टीम ने 2023 में अपनी सेमीफाइनल जीत के साथ उस सिलसिले को समाप्त कर दिया। दोनों टीमों के सेमीफाइनल में पहुंचने के साथ, आगामी प्रतियोगिता ग्रुप लीडर का निर्धारण करेगी। भारत अपने मौजूदा फॉर्म के साथ बढ़त बनाए हुए है और उसका लक्ष्य अजेय क्रम बनाए रखना होगा। मैच रविवार को दोपहर ढाई बजे शुरु होगा।

आईसीसी चैम्पियंस ट्रॉफी 2025 के फाइनल में टकराएंगे भारत-ऑस्ट्रेलिया?

दोहराया जाएगा 2023 वर्ल्ड कप

दुबई, 1 मार्च। आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी 2025 के तीन सेमीफाइनलिस्ट सामने आ चुके हैं। जबकि चौथी टीम का नाम भी लगभग तय हो चुका है। टीम इंडिया के बाद न्यूजीलैंड और अब ऑस्ट्रेलिया ने चैंपियंस ट्रॉफी 2025 के सेमीफाइनल के लिए क्वालिफाई कर लिया है। चौथी टीम साउथ अफ्रीका हो सकती है। साउथ अफ्रीका को सेमीफाइनल में पहुंचने के लिए हार भी मंजूर होगी, लेकिन इंग्लैंड की टीम इस मैच को 207 रन से ज्यादा के अंतर से नहीं जीतनी चाहिए। ऐसे में कहा जा सकता है कि वर्ल्ड कप 2023 दोहराया जा सकता है। वर्ल्ड कप 2023 की सेमीफाइनलिस्ट टीमें भारत, ऑस्ट्रेलिया, साउथ अफ्रीका और न्यूजीलैंड की टीम थी। चैंपियंस ट्रॉफी 2025 में भी यही चार टीमें सेमीफाइनल में पहुंचने वाली हैं। जिनमें से टीम इंडिया, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड का नाम कन्फर्म हो गया है, जबकि साउथ अफ्रीका की टीम को इंग्लैंड को हराने की जरूरत हैं। इसके लिए साउथ अफ्रीका को ध्यान में ये रखना है कि अगर इंग्लैंड ने 300 रन बनाए तो 207 या इससे ज्यादा रनों से हार नहीं मिलनी चाहिए। इसके अलावा अगर साउथ अफ्रीका ने पहले बल्लेबाजी की ओर 300 रन बनाए तो इंग्लैंड की टीम को 11.1 ओवर में उस टारगेट को चेजनहीं करने देना चाहिए। अगर इससे बच जाती है और साउथ अफ्रीका की टीम मुकाबला हार भी जाती है तो भी सेमीफाइनल में पहुंच जाएगी, क्योंकि साउथ अफ्रीका के तीन पॉइंट रहेंगे और अफगानिस्तान से नेट रन रेट बेहतर रहेगा।

न्यूजीलैंड के खिलाफ शमी को मिल सकता है आराम, अर्शदीप को मौका

दुबई, 1 मार्च। न्यूजीलैंड की टीम में पांच खब्बू बल्लेबाजों की मौजूदगी और पाकिस्तान के खिलाफ मैच में मोहम्मद शमी को पिंडली में हुई हल्की परेशानी के कारण भारतीय टीम प्रबंधन रविवार को चैम्पियंस ट्रॉफी के मैच में इस अनुभवी तेज गेंदबाज को आराम देकर अर्शदीप सिंह को उतार सकता है। शुक्रवार को अभ्यास सत्र को संकेत माने तो पंजाब के तेज गेंदबाज अर्शदीप इस मैच में शमी की जगह खेल सकते हैं। उन्होंने गेंदबाजी कोच मोर्नी मोर्कल के साथ काफी अभ्यास किया और 13 ओवर डाले। शमी ने छोटे रनअप के साथ सिर्फ छह सात ओवर फेंके। पाकिस्तान के खिलाफ 23 फरवरी के मैच में शमी को तीसरे ओवर के बाद ही फिजियो से दाहिने पैर में उपचार कराना पड़ा था। अभ्यास सत्र के दौरान खिलाड़ियों के हावभाव से लग रहा था कि भारत सेमीफाइनल से पहले शमी को ब्रेक दे सकता है। केएल राहुल ने मीडिया से बातचीत में कहा था कि विजयी संयोजन में बदलाव होगा या नहीं , कहा नहनीं जा सकता लेकिन सहायक कोच रियान टेन डोइशे ने शाम को संकेत दिया कि गेंदबाजी संयोजन में बदलाव हो सकता है।

बेंगलुरु ओपन : उभरते सितारों को मिला पेशेवरों से प्रशिक्षण का मौका

बेंगलुरु, 1 मार्च। बेंगलुरु के 60 से अधिक उभरते टेनिस खिलाड़ियों को शनिवार को 2025 दाफान्यूज बेंगलुरु ओपन के मौके पर केएसएलटीए टेनिस स्टेडियम में आयोजित टेनिस क्लिनिक में पेशेवरों से सीखने का अनूठा अवसर मिला। 38वें राष्ट्रीय खेलों के स्वर्ण पदक विजेता निकी कालियांदा पूनाचा और एसडी प्रज्वल देव के साथ-साथ वर्तमान संस्करण के युगल फाइनलिस्ट ब्लेक बेयल्डन और मैथ्यू क्रिस्टोफर रोमियोस ने युवा खिलाड़ियों को टिप्स प्रदान की।

क्लिनिक में एक प्रश्नोत्तर सत्र, लाइव ट्रेनिंग और व्यावहारिक कोचिंग की सुविधा थी, जिससे युवा एथलीटों को अनुभवी पेशेवरों के साथ जुड़ने का मौका मिला। प्रतिभागियों को फिटनेस, पोषण, प्रशिक्षण दिनचर्या और मैच की तैयारी पर मार्गदर्शन प्राप्त हुआ, भारत में टेनिस के बढ़ते कद पर पूनाचा ने अपना उत्साह व्यक्त किया और कहा राष्ट्रीय खेलों में कर्नाटक के लिए प्रतिनिधित्व करना और पदक जीतना वास्तव में अच्छा था। मैंने देखा है कि युवा खिलाड़ियों का स्तर ऊंचा हो रहा है। वे बेहतर तैयार हैं। उसके कुछ दिनों बाद, यहां इतने सारे बच्चों को सीखने के लिए उत्सुक, सुधार करने के लिए उत्सुक देखना एक अच्छा संकेत है। यह हमें भविष्य के लिए एक मजबूत मंच देता है।

इंग्लैंड को रौंदकर दक्षिण अफ्रीका चैम्पियंस ग्रुप-बी के शीर्ष पर

कराची, 1 मार्च। मार्को यानसन (39 रन पर तीन विकेट) और वियान मुल्डर (25 रन पर तीन विकेट) की घातक गेंदबाजी के बाद रासी वान दर दुसें (72 नाबाद) और हाइनरिक क्लासन (64) की शानदार बल्लेबाजी की बदौलत दक्षिण अफ्रीका ने शनिवार को चैंपियंस ट्राफी ग्रुप बी में इंग्लैंड को सात विकेट से रौंद कर अपना अभियान शीर्ष पर रह कर समाप्त किया। इस मुकाबले से पहले ही दक्षिण अफ्रीका सेमीफाइनल में अपनी जगह बना चुका है।

इंग्लैंड ने 38.2 ओवर के खेल में 179 रन बनाये थे जिसके जवाब में दक्षिण अफ्रीका ने विजय लक्ष्य 29.1 ओवर में तीन विकेट खोकर हासिल कर लिया। दक्षिण अफ्रीका ने आज अपने अनुशासित खेल से इंग्लैंड को खेल के किसी भी विभाग में प्रदर्शन का मौका नहीं दिया। नियमित कप्तान टेम्बा बावुमा की बीमारी के कारण एडेन मार्कराम को टीम की कमान दी गयी थी मगर हैमस्ट्रिंग के कारण वह भी बीच खेल में मैदान छोड कर चले गये। इन सबके बावजूद दक्षिण अफ्रीका के प्रदर्शन में कोई कमी नजर नहीं आयी और उन्होने बेहद आसानी से मैच को अपने पक्ष में कर लिया।

सलामी जोड़ी के रुप में ट्रिस्टन स्टब्स (0) और रायन रिकलटन (27) के जल्दी आउट होने के बाद दुसें और क्लासन ने रन बनाने की कोई जल्दी नहीं दिखायी और आसानी से विजय लक्ष्य के करीब टीम को पहुंचा दिया। क्लासन आदिल रशीद की गेंद पर आउट हुये। इससे पहले इंग्लैंड की ओर से जो रुट ने सर्वाधिक 37 रनों का निजी योगदान दिया जबकि बेन डकेट (24),कप्तान जॉस बटलर (21) और जोफ्रा आर्चर 25 रन ही जोड़ सके। इंग्लैंड के चार खिलाड़ी अपने निजी स्कोर को दहाई के अंक तक पहुंचाने से पहले ही अपना विकेट गंवा बैठे।

सबा क्लब ने सुराणा क्रिकेट एकेडमी को हराया यथार्थ भारद्वाज ने नाबाद 99 रन बनाए

जयपुर, 1 मार्च। जयपुर जिला क्रिकेट संघ द्वारा आयोजित के एल सैनी ए डिविजन लीग में आज खेले गए मैच में सबा क्लब ने सुराणा क्रिकेट एकेडमी को 7 विकेट से हराया। के एल सैनी स्टेडियम पर खेले गए मैच में सबा क्लब ने टॉस जीतकर पहले सुराणा क्रिकेट एकेडमी को बल्लेबाजी के लिए आमंत्रित किया। सुराणा क्रिकेट एकेडमी ने भावित कुमावत के 72 रन, मनीष गोस्वामी के 31 रन, अभिषेक यादव के 42 रन, प्रशांत यादव के 20 रन, अनिल सैनी के 19 रन व लोकेश खांडल के 27 रनों से 46.5 ओवर में 231 रन बनाए।

सबा क्लब के लिए सार्थक त्यागी ने 51 पर 4, मनीष ने 28 पर 2, आयुष आमेरिया व आदित्य वाधवा ने 1 - 1 विकेट लिया। जवाबी पारी में सबा क्लब

ने मोहम्मद कैफ के 35 रन, आयुष आमेरिया के 56 रन, यथार्थ भारद्वाज के नाबाद 99 रन व नावेद खान के 30 रन नाबाद से 33.4 ओवर में 3 विकेट पर 232 रन बनाकर मैच जीत लिया। सुराणा क्रिकेट एकेडमी के लिए अभिषेक यादव ने 19 पर 2 व शक्ति चौहान ने 42 पर एक विकेट लिया। मैच के दौरान पूर्व रणजी कप्तान विनोद माथुर ने खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि ए डिविजन लीग के आयोजित होने से जयपुर के खिलाड़ियों को आने वाले क्रिकेट सीजन में अवश्य फायदा मिलेगा। 2 मार्च को के एल सैनी स्टेडियम पर राजीव गांधी क्लब बनाम सबा क्लब क्लब के मध्य मैच खेला जाएगा ।

प्राग मास्टर्स में प्रज्ञानानंदा ने पहली जीत दर्ज की, अरविंद ने एकल बढ़त हासिल की

प्राग, 1 मार्च। भारतीय ग्रैंडमास्टर आर प्रज्ञानानंदा ने चेक गणराज्य के एनगुयेन थाई डाई वान के खिलाफ आसान जीत दर्ज की जबकि हमवतन अरविंद चितंबरम ने प्राग मास्टर्स के तीसरे दौर में चीन के शीर्ष वरीय वेई यी को हराकर एकल बढ़त हासिल की। टूर्नामेंट के प्रबल दावेदारों में से एक प्रज्ञानानंदा ने 14वीं चाल में यह प्रभावशाली जीत दर्ज की। पहले दो दौर में दो ड्रॉ खेलने के बाद उनके लिए यह जीत अहम रही। उन्होंने अपने प्रदर्शन के बारे में कहा, "कल (दूसरा दौर) कुछ खास नहीं था। पहले दौर में मेरी स्थिति अच्छी थी। " प्रज्ञानानंदा की यह पहली जीत रही जबकि हमवतन अरविंद चिथमबरम लाइव रेटिंग में दुनिया के शीर्ष 20 खिलाड़ियों में प्रवेश करने के बाद पहली बार एलीट टूर्नामेंट में खेल रहे हैं। अरविंद के इस जीत से तीन में से 2.5 अंक हो गए।

नायर के नाबाद शतक से विदर्भ मजबूत स्थिति में

नागपुर,1 मार्च। दानिश मालेवर (73) और करुण नायर (132 नाबाद) के बीच 182 रन की साझीदारी की मदद से विदर्भ ने रणजी ट्राफी फाइनल के चौथे दिन शनिवार को केरल के खिलाफ अपनी दूसरी पारी में चार विकेट 249 रन बना कर अपनी कुल बढ़त को 286 रन कर ली है। विदर्भ ने अपनी पहली पारी में 379 रन बनाये थे जिसके जवाब में केरल की पहली पारी 342 रन पर सिमट गयी थी।

मालेवर और नायर की जोड़ी पहली पारी में भी हिट रही थी और दोनो ने टीम को संकट से उबारते हुये चौथे विकेट के लिये 215 रन जोड़े थे। पहली पारी के शतकवीर मालेवर का विकेट अक्षय चंदन ने निकाल कर अपनी टीम को सांस लेने का मौका दिया। हालांकि करुण नायर की मौजूदगी केरल के लिये संकट का

सबब बन सकती है। विदर्भ रविवार को पांचवे और अंतिम दिन के खेल के पहले सत्र में तेज गति से रन बटोरने के बाद केरल को बल्लेबाजी का मौका देकर सीधी जीत की कोशिश कर सकता है,हालांकि केरल के लिये रणजी खिताब को पाने की तमन्ना दूर की कौड़ी साबित होना दिखायी देता है।

झुंझुनूं का अंकित जांगिड़ भारतीय क्रिकेट टीम में शामिल

भारतीय बधिर क्रिकेट संघ ने की टीम की घोषणा, आज से नई दिल्ली में शुरू होगी अंतर्राष्ट्रीय त्रिकोणीय श्रृंखला

जयपुर/झुंझुनूं, 1 मार्च। जिले के जवान और उद्योगपति तो ना केवल देश में, बल्कि विश्व में अपनी पहचान रखते है। लेकिन अब खेलों की दुनियां में भी झुंझुनूं की धाक दिनोंदिन बढ रही है। अंडर-20 भारतीय महिला टीम में हैप्पी खीचड़ की एंट्री के बाद अब भारतीय बधिर क्रिकेट टीम में भी झुंझुनूं के खिलाड़ी ने एंट्री करके अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया है। जी, हां रविवार दो मार्च से नई दिल्ली में भारत, दक्षिण अफ्रीका और ऑस्ट्रेलिया के बीच टी20 अंतरराष्ट्रीय त्रिकोणीय शृंखला शुरू होने वाली है। जिसके लिए भारतीय बधिर क्रिकेट संघ ने अपनी 16 सदस्यों की टीम की घोषणा की है। जिसमें झुंझुनूं से अंकित जांगिड़ को भी शामिल किया गया है। करीब 27 साल पहले जब अंकित जांगिड़ का जन्म हुआ तो कुछ महीने तो माता सुमन देवी पिता शुभदान जांगिड़ को पता नहीं चला कि उनका लाडला ना तो बोल सकता है और ना ही सुन सकता है। लेकिन करीब पांच महीने का अंकित का हुआ। तब उन्हें पता चला कि अंकित ना सुन सकता है और ना ही बोल सकता है। पहला बेटा था। ऐसे में यह सुनकर परिवार के लोगों को बुरा तो जरूर लगा। लेकिन इसे भगवान का प्रसाद ही मानकर पालने का जिम्मा उठाया। अंकित जब चार

साल का हुआ तो उसे श्रीगंगानगर की एक मूक बधिर स्कूल में दाखिला दिलवाया। 11 साल अंकित श्रीगंगानगर रहा और वहां पर उसने आठवीं तक की पढाई की। इसके बाद नौ से एमए तक की पढाई जयपुर में की। इसी दौरान अंकित क्रिकेट खेलने लगा और कई राज्य और राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं में ना केवल अपने बल्ले से कमाल दिखाया। बल्कि बॉलिंग में भी खिलाड़ियों को ढेर किए। परिवार के लोगों को इतना अंदाजा कभी नहीं था कि एक दिन अंकित भारतीय क्रिकेट टीम का हिस्सा बनकर विदेशियों के खिलाफ मैदान में उतरेगा।

पहले त्रिकोणीय शृंखला, फिर तीन मैचों की वन डे सीरिज भी

अंकित का चयन अब भारतीय बधिर क्रिकेट संघ द्वारा घोषित की गई भारतीय टीम के लिए हुआ है। हालांकि अंकित को मैदान में उतरने का मौका मिलेगा या नहीं। यह अभी साफ नहीं है। लेकिन अंकित अब बधिर क्रिकेट दुनिया के उन 16 भारतीयों में शामिल हो गया है। जो ना केवल देश की जमीन पर, बल्कि विदेशी जमीन पर भारत का नेतृत्व करेंगे। हाल ही में जो टीम घोषित की गई है। वह टीम भारत, दक्षिण अफ्रीका और ऑस्ट्रेलिया के बीच टी20 अंतरराष्ट्रीय त्रिकोणीय शृंखला दो से 8 मार्च तक नई दिल्ली में तथा 10 से 12 मार्च तक ऑस्ट्रेलिया के साथ तीन मैचों की एकदिवसीय शृंखला खेलेगी। अखिल भारतीय पुरुष चयन समिति द्वारा बधिर टीम का चयन किया गया। टीम का नेतृत्व वीरेंद्र सिंह करेंगे। जिसमें झुंझुनूं का अंकित भी शामिल है। अंकित पिछले दो-तीन सालों से झुंझुनूं में ही परिवार के साथ रहते हुए जीवेम क्रिकेट एकेडमी में तैयारी कर रहा है।

आईसीसी और बीसीसीआई कर रहा सपोर्ट

भारतीय बधिर क्रिकेट संघ, बधिर अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट परिषद डीआईसीसी का सदस्य है। डीआईसीसी दुनिया भर में श्रवण बाधित एथलीटों के बीच क्रिकेट को बढ़ावा देने के लिए अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट परिषद आईसीसी के साथ मिलकर काम करता है। भारत में इस संघ को बीसीसीआई, यानि कि भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड भी सपोर्ट करता है। अंकित की इस उपलब्धि पर ना केवल परिवार के सदस्यों, बल्कि पूरे झुंझुनूं को नाज है। साथ ही अंकित ने यह साबित किया है कि दिव्यांग होना एक अभिशाप नहीं है। हम दिव्यांगता के साथ भी वो मुकाम हासिल कर सकते है। जिसके सपने एक आमजन देख सकता है।

रॉयल चैलेंजर्स ने दिल्ली को दी 148 रन बनाने की चुनौती

बेंगलुरु, 1 मार्च। एलिस पेरी (60 नाबाद) की अर्धशतकीय पारी की बदौलत रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु ने शनिवार को वुमेंस प्रीमियर लीग (डब्ल्यूपीएल) के एक मैच में पांच विकेट पर 147 रनों का सम्मानजनक स्कोर खड़ा कर लिया। पेरी ने राघवी विष्ट (33) के साथ तीसरे विकेट के लिये 66 रन की भागीदारी की। उन्होने अपनी नाबाद अर्धशतकीय पारी के दौरान 47 गेंदों में तीन चौके और तीन छक्के लगाये। राघवी के आउट होने के बाद बेंगलुरु की रन गति धीमी रही और आखिरी 23 गेंदों में टीम 28 रन ही जोड़ सकी। बेंगलुरु की कप्तान स्मृति मंधाना का बल्ला आज नहीं चला और वह मात्र आठ रन का ही योगदान दे सकी। डेनिएल वायट ने 21 रन बनाये। दिल्ली के लिये शिखा पांडे और श्रीचरणी ने दो दो विकेट चटकाये। मरीजान कॉप को एक विकेट मिला।

मनन कुमार मिश्रा लगातार सातवीं बार बी.सी.आई. अध्यक्ष निर्वाचित

नई दिल्ली, 01 मार्च। बार काउंसिल ऑफ इंडिया यानी बीसीआई ने शनिवार 01 मार्च को घोषणा की कि भारत के सुप्रीम कोर्ट के वरिष्ठ अधिवक्ता और संसद सदस्य (राज्यसभा) मनन कुमार मिश्रा को लगातार सातवें कार्यकाल के लिए बार काउंसिल ऑफ इंडिया के अध्यक्ष के रूप में फिर से निर्विरोध चुना गया है। जारी किए गए एक बयान में कहा गया है कि भारत के लगभग 27 लाख जीवंत कानूनी बिरादरी के निर्वाचित प्रतिनिधियों ने एक बार फिर उनके

■ अधिवक्ता मनन कुमार मिश्रा बार काउन्सिल ऑफ इंडिया के निर्विरोध अध्यक्ष चुने गए हैं जो एक रिकॉर्ड है।

प्रतिष्ठित नेतृत्व में अपने विश्वास की पुष्टि की है। सातवें कार्यकाल के लिए अपने फिर से चुने जाने की घोषणा के तुरंत बाद, मिश्रा ने अपने निरंतर विश्वास और समर्थन के लिए पूरे कानूनी बिरादरी के प्रति अपना हार्दिक आभार व्यक्त किया। उन्होंने कानूनी समुदाय की सेवा करने के अपने अडिग संकल्प की पुष्टि की और अधिवक्ताओं के कल्याण के लिए अपने समर्पण पर जोर दिया। मनन कुमार मिश्रा ने आगे कहा कि अधिवक्ता संशोधन विधेयक पेश किया जाएगा।

मुख्यमंत्री भजनलाल ने भरतपुर सर्किट हाउस में जन सुनवाई की

कई सामाजिक संगठनों ने बजट में भरतपुर व डीग को दी गई सौगातों के लिए आभार जताया

भरतपुर/जयपुर, 1 मार्च। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की भरतपुर यात्रा के दौरान, शनिवार को जिले के विभिन्न सामाजिक संगठनों ने सर्किट हाउस में उनसे मुलाकात की। संगठनों के प्रतिनिधियों एवं आमजन ने राज्य बजट, 2025-26 में भरतपुर एवं डीग जिले को दी गई सौगातों के लिए शर्मा का आभार भी जताया। इस दौरान, नन्हे जूडो कराटे खिलाड़ियों ने मुख्यमंत्री से मुलाकात की तथा प्रतियोगिता में जीते अपने मैडल उन्हें

■ मुख्यमंत्री ने जन सुनवाई में सामने आयी आमजन की समस्याओं के शीघ्र निस्तारण के निर्देश दिये।

दिखाए। मुख्यमंत्री ने बच्चों के प्रदर्शन की सराहना करते हुए उनका उत्साहवर्धन किया।

मुख्यमंत्री ने सर्किट हाउस में जनसुनवाई भी की और संबंधित अधिकारियों को आमजन की समस्याओं के शीघ्र निस्तारण के निर्देश दिए।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा शनिवार को भरतपुर दौरे पर रहे। जिले के विभिन्न सामाजिक संगठनों व आमजन ने सर्किट हाउस में उनसे मुलाकात की और बजट में भरतपुर एवं डीग जिले को दी गई सौगातों के लिए आभार जताया।

इस अवसर पर गृह राज्यमंत्री जवाहर सिंह बेढ़म, विधायक बहादुर सिंह कोली, डॉ. शैलेश सिंह, डॉ. ऋतु बनावत सहित, विभिन्न जनप्रतिनिधि, लघु उद्योग भारती, बृज हनी, ब्रह्माकुमारीज़ संस्था के सदस्य, उद्योग जगत के प्रतिनिधि और आमजन उपस्थित थे। इससे पहले भरतपुर पहुंचने पर हैलीपेड पर मुख्यमंत्री शर्मा का स्थानीय जनप्रतिनिधियों और वरिष्ठ अधिकारियों ने स्वागत किया।

तेलंगाना: टनल में फंसे 4 लोगों की लोकेशन मिली

नागरकुरनूल, 01 मार्च। तेलंगाना टनल हादसे में शनिवार को बड़ा अपडेट सामने आया है। यहां टनल ढ हने के बाद सप्ताहभर से जारी बचाव अभियान के दौरान शनिवार को एक सफलता तब मिली, जब इसमें फंसे कुल आठ लोगों में से चार के 'लोकेशन' का पता लगा लिया गया। यह जानकारी तेलंगाना के आबकारी मंत्री जुपल्ली कृष्ण राव ने दी। सिंचाई मंत्री एन उत्तम कुमार रेड्डी के साथ बचाव अभियान में शामिल अधिकारियों की बैठक में शामिल कृष्ण राव ने कहा कि पिछले कुछ दिनों में

■ तेलंगाना के आबकारी मंत्री जे.कृष्ण राव ने कहा, उम्मीद है कि इन्हें बचा लिया जाएगा।

काफी प्रगति हुई है। उन्होंने संवाददाताओं से कहा कि मेरे विचार से रडार के जरिए चार लोगों के लोकेशन का पता लगा लिया गया है।

मंत्री ने उम्मीद जताई कि रविवार शाम तक उन्हें बाहर निकाल लिया जाएगा। उन्होंने कहा कि ऐसा लगता है कि अन्य चार लोग सुरंग खोदने की मशीन (टीबीएम) के नीचे फंसे हुए हैं। जिन चार लोगों के बारे में पता चला है, उनकी स्थिति के बारे में पूछे जाने पर मंत्री ने याद दिलाया कि उन्होंने पहले ही दिन कहा था कि बचने की संभावना बहुत कम है।

'आप इस स्थिति में नहीं...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

के राष्ट्रपति के एक्शन से ज्यादा महत्वपूर्ण है। अमेरिका को जो बात अच्छा देश बनाती है, वह यह है कि अमेरिका कूटनीति पर चल रहा है। राष्ट्रपति ट्रम्प यही कर रहे हैं। इस पर ज़ैलैंस्की ने कहा क्या वे एक सवाल पूछ सकते हैं, वैंस ने कहा "हां जरुर।"

ज़ैलैंस्की ने कहा, ओ के। उन्होंने (पुतिन) यूक्रेन के एक बड़े भाग, पूर्व के भाग और क्रीमिया पर कब्जा कर लिया है। पुतिन ने 2014 में इस पर कब्जा किया था इतने सालों में, मैं बाइडन के बारे में बात नहीं कर रहा, पर उस समय ओबामा थे, फिर ट्रम्प आए और फिर बाइडन आए और अब फिर ट्रम्प आए हैं और अब ट्रम्प उन्हें रोकेंगे। पर 2014 में किसी ने उन्हें नहीं रोका, उन्होंने हमारी जमीन पर कब्जा कर लिया, लोगों को मारा।"

ज़ैलैंस्की ने कहा, हां 2014 से 2022 तक स्थिति एक जैसी थी। लोग कॉन्टैक्ट लाइन पर मर रहे थे। किसी ने भी उन्हें नहीं रोका। आपको पता है हमने उनसे बात की थी, बहुत चर्चाएं हुईं, हमने उनसे डील की थी। फ्रांस के राष्ट्रपति मैक्रो और जर्मनी की पूर्व चांसलर मर्केल ने सीज़ फायर पर साइन किए थे। पर उसके बाद पुतिन ने सीज़ फायर तोड़ दिया। हमारे लोगों को मारा, बंदियों का आदान-प्रदान नहीं किया। हमने इस पर डील की थी, पर उन्होंने नहीं किया। जे डी आप ये कैसी कूटनीति की बात कर रहे हैं, आपका क्या मतलब है।"

वैंस ने कहा, "मैं उस कूटनीति की बात कर रहा हूं, जिससे आपके देश का विनाश रुक जाए।" तो ज़ैलैंस्की ने कहा, "हालांकि अगर आप---" लेकिन वैंस बीच में ही बोले, मिस्टर प्रैसिडैंट, मैं पूरे सम्मान के साथ कह रहा हूँ मुझे ऐसा लग रहा है कि ओवल ऑफिस में आकर अमेरिकन मीडिया के सामने विवाद खड़ा करना अपमानजनक है। अभी आप जबरन भर्ती किए गए सैनिकों को सीमा पर भेज रहे हैं क्योंकि आपके पास मैन पावर कम है आपको राष्ट्रपति का धन्यवाद करना चाहिए।

झड़प के बीच में ज़ैलैंस्की ने वैंस से कहा "क्या आपने कभी यूक्रेन जाकर वहां के लोगों की समस्याएं देखी हैं उनका पक्ष सुना है। और मैं जानता हूं, जब आप लोगों को प्रचार यात्रा पर ले जाते हैं तो क्या होता है।"

वैंस ने कहा 'क्या आप इस बात से असहमत हैं कि अपनी सेना में लोगों को लाने में आपको समस्या हुई है, और आपको लगता है कि क्या यह ठीक है कि आप संयुक्त राज्य अमेरिका के ओवल ऑफिस में आकर उस प्रशासन पर हमला करें, जो आपके देश के विनाश को रोकने की कोशिश कर रहा है?' इस पर ज़ैलैंस्की ने कहा, "युद्ध के दौरान हर किसी को समस्याएं होती हैं, यहां तक कि अमेरिका को भी।"

ज़ैलैंस्की ने कहा, आपके पास अच्छे समाधान हैं और अभी आप महसूस नहीं करते, लेकिन आप इसे भविष्य में महसूस करेंगे।" इस पर ट्रंप भड़क गए और बोले, आप नहीं जानते। हमें मत बताइए कि हम क्या महसूस करेंगे। हम एक समस्या हल करने की कोशिश कर रहे हैं।" इस पर ज़ैलैंस्की ने कहा, मैं आपको नहीं बता रहा, मैं जवाब दे रहा हूँ।"

फिर ट्रंप ने अपनी आवाज़ ऊंची की और कहा, आप हमें नहीं बता सकते, हम क्या महसूस करेंगे। हम बहुत अच्छा और बहुत मजबूत महसूस करेंगे। आप अभी बहुत अच्छी स्थिति में नहीं हैं। आपने खुद को बहुत बुरी स्थिति में डाल दिया है।" चूंकि ज़ैलैंस्की उन्हें बीच में रोकने की कोशिश कर रहे थे तो ट्रंप बोले, "आप लाखों लोगों की जान के साथ जुआ खेल रहे हैं, आप तीसरे विश्व युद्ध के साथ जुआ खेल रहे है और जो आप कर रहे हैं, वह इस देश के लिए बहुत अपमानजनक है।" वैंस ने ज़ैलैंस्की से पूछा कि क्या उन्होंने एक बार भी धन्यवाद कहा है।"

इस बहस के बाद डॉनल्ड ट्रंप ने सोशल मीडिया पर पोस्ट किया कि वोलोडिमीर ज़ैलैंस्की "वापस आ सकते हैं।" आज वाइट हाउस में हमारी एक बहुत महत्वपूर्ण बैठक हुई। बहुत कुछ सीखा गया, जो इतने भारी दबाव में हुई वार्ता के बिना कभी समझा नहीं जा सकता था। यह अद्भुत है कि भावनाओं के माध्यम से क्या निकलता है, और मुझे लगता है कि राष्ट्रपति ज़ैलैंस्की शांति के लिए तैयार नहीं हैं, अगर अमेरिका शामिल है। क्योंकि उन्हें लगता है कि हमारी भागीदारी उन्हें बातचीत में एक बड़ा फायदा देती है।"

हालाँकि, वोलोडिमीर ज़ैलैंस्की ने डॉनल्ड ट्रंप के साथ अपने विवाद के लिए माफी मांगने से मना कर दिया। उन्होंने फॉक्स न्यूज से कहा, "मुझे नहीं लगता कि हमने कुछ गलत किया है," उन्होंने हालांकि कहा कि वे चाहते थे कि यह बातचीत पत्रकारों के सामने न होती। उन्होंने यह भी कहा कि यूक्रेन और अमेरिका के बीच रिश्ते अभी भी सुधारे जा सकते हैं। यू.एस.-यूक्रेन संबंध 'दो राष्ट्रपतियों से अधिक हैं,' यूक्रेन को रूस के खिलाफ संघर्ष में वॉशिंगटन की मदद की सख्त जरूरत है।

'दिल्ली में 31 मार्च के बाद 15 साल पुराने वाहनों को डीज़ल-पैट्रोल नहीं मिलेगा'

नयी दिल्ली, 01 मार्च। दिल्ली के पर्यावरण मंत्री मनजिन्दर सिंह सिरसा ने शनिवार को कहा कि दिल्ली में सभी पेट्रोल पम्पों पर 15 साल पुराने वाहनों को 31 मार्च के बाद इंधन भरवाने पर रोक रहेगी।

सिरसा ने प्रदूषण नियंत्रण को लेकर अधिकारियों के साथ बैठक के बाद, पत्रकारों से आज कहा कि 15 साल पुराने सभी वाहनों को तेल देना बंद कर दिया जाएगा।

इसके लिए पेट्रोल पम्पों पर ऐसे उपकरण लगाये जा रहे हैं, जो 15 साल पुराने वाहनों की पहचान कर लेंगे। अब तक 80 फीसदी पेट्रोल पम्पों पर ऐसे उपकरण लगाये जा चुके हैं और 31 मार्च तक सभी पम्पों पर ऐसे उपकरण लगा लिये जाएंगे।

उन्होंने कहा कि राजधानी में 15 साल पुराने वाहनों की पहचान के लिए एक टीम बनाई जाएगी। यह टीम 15 साल पुराने वाहनों को दिल्ली में आने से रोकने के साथ-साथ, यहां के पुराने वाहनों को दिल्ली से बाहर करने का काम करेगी।

सिरसा ने कहा कि प्रदूषण नियंत्रण के लिए पौधारोपण कार्यक्रम में दिल्ली विश्वविद्यालय के छात्रों को जोड़ा जाएगा। छात्रों को प्रोत्साहित करने के

■ दिल्ली के पर्यावरण मंत्री मनजिंदर सिंह सिरसा ने यह आदेश जारी किया।

लिए उन्हें प्रमाण पत्र देने पर भी विचार किया जाएगा।

दिल्ली के अंदर बड़े होटलों, कार्यस्थलों, निर्माण स्थलों और हवाई अड्डों को प्रदूषण नियंत्रण के लिए उपाय करने का प्रावधान करना होगा।

दिल्ली में बंजर पड़ी भूमि पर पौधारोपण करने का काम किया जाएगा, ताकि प्रदूषण को कम किया जा सके।

चतुर्थ श्रेणी ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

करने के लिए समय मांगा। अदालत की ओर से समय देने के बावजूद राज्य सरकार की ओर से कोई भी वकील पेश नहीं हुआ। इस पर अदालत ने कहा कि आदेश के बाद भी राज्य सरकार ने यह नहीं बताया है कि याचिकाकर्ता वेतन क्यों रोका गया है। इसलिए याचिका निस्तारित कर राज्य सरकार को निर्देश दिया जाता है कि वह 15 दिन में प्रार्थी का बकाया वेतन दे। वहीं ऐसा नहीं होने पर प्रमुख स्वायत्त शासन सचिव संबंधित अफसरों का वेतन रोकें। याचिका में कहा गया कि था कि राज्य सरकार ने बिना किसी कारण याचिकाकर्ता का वेतन दिसंबर, 2023 से रोक दिया था। याचिकाकर्ता के पूछने पर भी वेतन रोकने का कारण नहीं बताया गया। याचिका में कहा गया कि उसका ढाई साल का बच्चा बीमार है और उसे रुपयों की जरूरत है।

समय पर ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

गया था। करार के अनुसार, बिल्डर द्वारा परिवादी को 31 जुलाई, 2019 को फ्लैट का कब्जा सौंपा जाना था, लेकिन बिल्डर ने परिवादी को नियत समय तक कब्जा नहीं सौंपा। इस पर परिवादी ने बिल्डर को कई बार लिखित नोटिस दिए, लेकिन बिल्डर ने न तो कब्जा सौंपा और न जमा राशि ही लौटाई। इस पर परिवादी की ओर से उपभोक्ता आयोग में परिवाद पेश कर कहा गया कि उसने बिल्डर को 26.21 लाख रुपए अग्रिम और होम लोन के ब्याज के तौर पर बैंक को 5.27 लाख रुपए का भुगतान किया है। इसके अलावा, फ्लैट के अन्य मदों पर भी खर्च हुआ है। इसलिए उसने जमा राशि दिलाने और मानसिक संताप के तौर पर मुआवजा राशि दिलाने की गुहार की। याचिका पर सुनवाई करते हुए आयोग ने इसे बिल्डर का सेवा दोष और अनुचित व्यापार प्रथा मानते हुए हर्जाना लगाया है।

उत्तराखंड एवलांच से 50 मजदूर निकाले गए, 4 की इलाज के दौरान मौत

5 श्रमिक अभी भी लापता हैं जिनकी खोज जारी है

देहरादून, 01 मार्च। उत्तराखंड में माणा के पास भारी हिमस्खलन हादसे के दूसरे दिन शनिवार को 17 मजदूरों को रेस्क्यू किया गया। उन्हें सेना के अस्पताल में भर्ती कराया गया है, जहां उनका उपचार चल रहा है। अब तक कुल 50 श्रमिकों का रेस्क्यू किया जा चुका है। इनमें से चार ने इलाज के दौरान दम तोड़ दिया। 5 मजदूर अब भी लापता हैं। सेना, आईटीबीपी, एनडीआरएफ, एसडीआर और वायु सेना के बचाव दल पांच अन्य श्रमिकों की तलाश में युद्ध स्तर पर अभियान छेड़े हुए हैं। सेना के मुताबिक, तीन कंटेनरों का पता नहीं चल रहा है, वे भारी बर्फ के नीचे दबे हैं। उनकी खोज के लिए दिल्ली से जीपीआर रडार मंगाया गया है।

बचाव अभियान की मॉनीटरिंग कर रहे मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने शनिवार को सुबह हवाई सर्वेक्षण किया और ज्योतिर्मठ में राहत और बचाव कार्यों की समीक्षा की। इसके बाद, वे सीधे यूएसडीएमए के आपातकालीन परिचालन केन्द्र पहुंचे। मुख्यमंत्री ने शासन के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ बचाव अभियान को लेकर चर्चा की। वे

■ मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी बचाव कार्य की निगरानी कर रहे हैं, उन्होंने घटना स्थल का हवाई सर्वे किया।

मीडिया से भी मुखातिब हुए। उन्होंने कहा कि सुबह प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने फोन पर अपडेट लिया और हरसंभव मदद का भरोसा दिया। केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह और रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह भी श्रमिकों की सुरक्षित निकासी के लिए चिंतित हैं और अपडेट ले रहे हैं। सीएम के मुताबिक, अब तक 50 श्रमिकों को बचा लिया गया है। पांच श्रमिकों की खोजबीन के लिए युद्धस्तर पर रेस्क्यू अभियान संचालित किया जा रहा है।

सीएम ने कहा कि पांच कंटेनरों को ट्रेस कर श्रमिकों को सुरक्षित निकालने में राहत और बचाव दलों को सफलता मिली है। अत्यधिक बर्फ होने के कारण तीन कंटेनर ट्रेस नहीं हो पा रहे हैं। आर्मी, आईटीबीपी द्वारा इन कंटेनरों का पता लगाने के लिए युद्धस्तर पर प्रयास किए जा रहे हैं। कंटेनरों ने तलाश के लिए आर्मी के स्निफर डाग्स की तैनाती की गई है। सेना की तीन टीमों द्वारा सघन पेट्रोलिंग की जा रही है। दिल्ली से सेना का ग्राउंड पेनीट्रेशन रडार (जीपीआर रडार) मंगाया गया है, जो बर्फ के अंदर कंटेनरों को ट्रेस करने में मदद करेगा। हवाई सर्वेक्षण के बाद सीएम ने कहा कि वहां भारी बर्फबारी हो रही है तथा छह से सात फीट तक बर्फ जमा है। आने वाले दिनों में हिमस्खलन की संभावना के दृष्टिगत जिन स्थानों में श्रमिक कार्य कर रहे हैं, वहां से उन्हें सुरक्षित स्थानों पर भेजने के निर्देश दे दिए गए हैं।

प्र.मंत्री ने ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

गया था। 2023 में भाजपा अल्पसंख्यक मोर्चा ने "सूफी सम्वाद महा अभियान" के अन्तर्गत, एक कार्यक्रम आयोजित किया था, जिसमें 100 से अधिक दरगाहों से आये करीब 200 सूफी शामिल हुये थे। उस समय, भाजपा ने भारत के 22 राज्यों में सूफियों तक पहुंच बनाने के लिये विभिन्न कमटियाँ भी गठित की थीं।

ज़ैलेंस्की व ट्रम्प ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

ट्रंप ने हमेशा की तरह गलत जानकारी फैलाने की पूरी कोशिश की थी।

जब ट्रंप यह कह रहे थे कि केवल अमेरिका ने यूक्रेन को पैसे और हथियार दिए हैं, तो फ्रांसीसी राष्ट्रपति ने उन्हें बीच में रोकते हुए उनकी जानकारी को सही किया।

उस बैठक के बाद, अमेरिकी राष्ट्रपति ने ब्रिटिश प्रधानमंत्री का सार्वजनिक रूप से अपमान किया और तंज करते हुए पूछा, क्या ब्रिटेन अकेले रूसियों का सामना कर सकता है। अमेरिका की यात्रा पर आए ब्रिटिश प्रधानमंत्री के लिए अमेरिकी राष्ट्रपति के इस ताने को सुनकर वहाँ उपस्थित लोग हंस पड़े।

यूक्रेन के साथ जो भी होगा, लेकिन, अब पूरी दुनिया अमेरिका के वादों और समर्थन को संदेह से देखेगी। अब कोई भी किसी सौदे में अमेरिका पर विश्वास नहीं करेगा।

अमेरिका और यूरोप के बीच कोहरा जैसी स्थिति उत्पन्न हो रही है, जिसमें एक दूसरे को ये देश न देख पा रहे हैं न पहचान रहे हैं और यह स्थिति चार साल तक रहेगी। उसके बाद क्या होगा, भगवान ही जाने।

MUDGAL MOTORS
AJMER : 7506023019, KISHANGARH : 7506023019,
BEAWAR : 7506023019, BIJAY NAGAR : 7506023019, KEKRI : 7506023019

SHRI CHARBHUJA AUTOMOBILES
MERTA CITY : 7506023295, DEGANA : 7506023295

DAKSH AUTOMOTIVES PVT. LTD.
NAGAUR : 7506023356, DIDWANA : 9167049809, KUCHAMAN : 7412056814

Images and Illustrations are indicative and for information purposes only. All features/specifications are not available in all variants and may vary for different variants. Specifications/features are subject to change without prior information. Colours may vary due to printing limitations. *Benefits up to differs from model to model and is inclusive of consumer offer, exchange bonus and maximum corporate offer. #Advanced Driver Assistance System applicable in selected Model & Variants only. ADAS with Adaptive Cruise Control in AT only. ^^Price mentioned is Harrier and Safari Smart MT, ex-showroom Delhi Local taxes extra. Offers valid till 31st March '25. Terms and Conditions apply. 12300953

राष्ट्रदूत (एचयूएफ) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा मैसर्स अरावली प्रिन्टर्स, राष्ट्रदूत भवन, चुंगी नाका के पास, अजमेर (राजस्थान) से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-राजेश शर्मा, आर.एन.आई. नं. 65015/96, जयपुर कार्यालय: सुधर्मा एम.आई.रोड, जयपुर। फोन: 2372634, 4103333-34 फैक्स : 0141-2373513, कोटा कार्यालय : पलायथा हाऊस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन: 2386031, 2386032,फैक्स:0744-2386033, उदयपुर कार्यालय: आयड मैन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, फैक्स : 0294-2410146, बीकानेर कार्यालय : कुम्भाना हाऊस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन: 2200660, फैक्स 0151-2527371, जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन: 226422, 226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 चूरू कार्यालय : एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन : 256906, 256907, फैक्स: 01562-256908